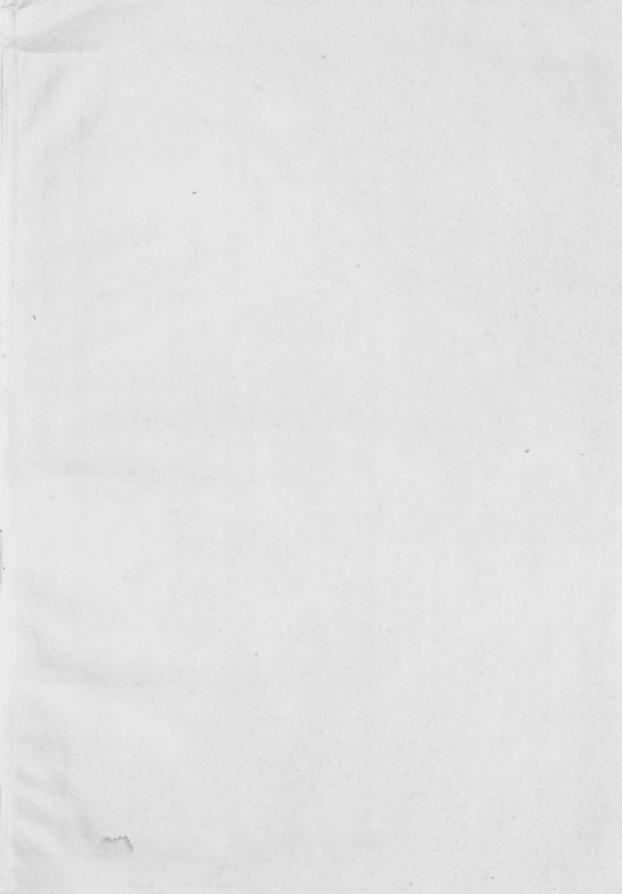
Olcott Library and Research Center
THE THEOSOPHICAL SOCIETY IN AMERICA
WHEATON, ILLINOIS 60187

PROPERTY OF THE

# **NATIONAL** LIBRARY

of the THEOSOPHICAL SOCIETY in America

WHEATON · ILLINOIS





# EIGHTY-EIGHTH ANNUAL GENERAL REPORT OF THE THEOSOPHICAL SOCIETY 1963



Published by

THE RECORDING SECRETARY,

THE THEOSOPHICAL SOCIETY, ADYAR,

MADRAS 20, INDIA

Price Rs. 8

T 060 '63

April 1964

# **CONTENTS**

| _   |   |            |                     |           |   |       | PAGE  |
|-----|---|------------|---------------------|-----------|---|-------|-------|
| I.  | Annual Convention:                      |            |                     |           |   |       |       |
|     | The Presidential Ac                     |            |                     |           |   |       | 1     |
|     | The Treasurer's Re                      |            |                     | •         |   |       | 13    |
| II. | Reports of the Gener                    |            |                     |           |   |       | 33    |
|     | The Theosophical S                      | Society in | the United States o | f America |   | •     | 35    |
|     | ,,                                      | ,,         | England             |           | • |       | 44    |
|     | ,,,                                     | ,,         | India               |           |   |       | 46    |
|     | ,,                                      | ,,         | Australia           |           |   |       | 51    |
|     | 99                                      | "          | Sweden              |           |   |       | 53    |
|     | ,,,                                     | ,,         | New Zealand         |           | • |       | 54    |
|     | ,,,                                     | ,,         | The Netherlands     |           |   | •     | 56    |
|     | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | ,,,        | France              |           |   |       | 57    |
|     | 2 59                                    | ,,         | Italy               |           |   |       | 58    |
|     | **                                      | ,,         | Germany             |           |   |       | 59    |
|     | 39                                      | ,,         | Cuba                |           |   |       | 60    |
|     | ***                                     | ,,         | Hungary             |           |   | No re | port  |
|     | **                                      | ,,         | Finland             |           |   |       | 62    |
|     | ,,                                      | ,,         | Russia              |           |   | Disso | olved |
|     | ***                                     | ,,,        | Czechoslovakia      |           |   | No re | port  |
|     | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | ,,         | Southern Africa     |           |   |       | 63    |
|     | ,,                                      | ,,         | Scotland            |           |   |       | 64    |
|     | ,,                                      | ,,         | Switzerland         |           |   |       | 65    |
|     | ***                                     | ,,         | Belgium             |           |   |       | 66    |
|     | ,,                                      | ,,         | Indonesia           |           |   |       | 66    |
|     | **                                      | ,,         | Burma               |           |   |       | 67    |
|     | ,,,                                     | ,,         | Austria             |           |   |       | 69    |
|     | ,,,                                     | .,,        | Norway              |           |   |       | 70    |
|     | **                                      | ,,         | Egypt (Lodges or    | nly)      |   | No re | port  |
|     | ,,                                      | ,,         | Denmark             |           |   | No re | -     |
|     | , ,,                                    | ,,         | Ireland             |           |   |       | 71    |
|     | **                                      |            | Mexico              |           |   | No re | port  |
|     | 22                                      | ,,         | Canada              | •         |   |       | 72    |
|     | , ,,,                                   | ,,         | Argentina           |           |   |       | 73    |
|     | ***                                     | ,,         | Chile               | •         |   | No re |       |
|     |   | ,,         | Brazil              | •         |   |       | 75    |
|     | 22                                      | 22         | DIAZII              |           |   |       | (4)   |

|      |                       |              |                    |              |        |        | PAGE  |
|------|-----------------------|--------------|--------------------|--------------|--------|--------|-------|
|      | The Theosophical      | Society in   | Bulgaria           |              |        | No re  | eport |
|      | ,,                    | ,,           | Iceland            |              |        |        | 77    |
|      | **                    | ,,           | Spain              |              |        | No re  | eport |
|      | ,,                    | **           | Portugal           |              |        |        | 79    |
|      | "                     | ,,           | Wales              |              |        |        | 80    |
|      | **                    | ,,           | Poland             |              |        | No re  | eport |
|      | ,,                    | "            | Uruguay            |              |        |        | 81    |
|      | ,,                    | ,,           | Puerto Rico        |              |        |        | 82    |
|      | **                    | ,,           | Rumania            |              |        | No re  |       |
|      | **                    | ,,           | Yugoslavia         |              |        | No re  | _     |
|      | ,,                    | ,,           | Ceylon             |              |        |        | 83    |
|      | ,,                    | ,,           | Greece             |              |        |        | 84    |
|      | ,,                    | ,,           | Central America    |              |        | No re  |       |
|      | **                    | ,,           | Paraguay           |              |        | No re  | _     |
|      | **                    | ,,           | The Philippines    |              |        |        | 84    |
|      | ,,                    | ,,           | Colombia           |              |        |        | 86    |
|      | ,,                    | ,,           | East Africa        |              |        |        | 86    |
|      | ,,                    | ,,           | Pakistan Presider  | ntial Agency |        |        | 89    |
|      | ,,                    | ,,           | Malaya and Sing    |              |        | No re  |       |
|      | ,,                    | ,,           | Northern Ireland   |              |        |        | 92    |
|      | ,,                    | ,,           | Israel Presidentia |              |        |        | 92    |
|      | ,,                    | ,,           | Japan              |              |        | No re  |       |
|      |                       |              | Viet-Nam           |              |        | 110 11 | 94    |
|      | **                    | ,,           | Venezuela          |              |        |        | 95    |
|      | **                    | ,,           | West African Fe    | deration     | •      |        | 96    |
|      | ,,                    | ,,           | Canadian Federa    |              |        |        | 97    |
|      | "                     | ,,           | European Federa    |              |        |        | 98    |
|      | **                    | 97           | Lodges Attached    |              | dvar.  | •      | 70    |
|      | **                    | ,,           | Peru               | Direct to 1  | idyai. |        | 101   |
|      |                       |              | World Federation   | n of Voung   | •      | •      | 101   |
|      |                       |              | Theosophis         |              |        | No re  | nort  |
| TTT  | Handamontona 1062 10  | 62           | Theosophus         | ts.          | •      | 140 10 | 102   |
| III. | Headquarters, 1962-19 |              |                    | •            | •      |        | 102   |
|      | The Adyar Librar      | •            | •                  | •            | •      |        | 105   |
| ***  | The School of the     |              | •                  |              | •      | •      | 107   |
| IV.  | Memorandum of Asso    |              | 1064               | •            | •      | •      | 107   |
|      | Rules and Regula      |              | uary 1964)         | •            | •      | •      | 121   |
|      | Directory for 196     |              |                    | •            |        | •      | 121   |
|      | Minutes of the G      |              |                    | •            | •      | •      |       |
|      | Summary of Stati      | istical Deta | ails, 1963         |              | •      | •      | 134   |
|      |                       |              |                    |              |        |        |       |

# PRESIDENTIAL ADDRESS

# TO THE 88TH INTERNATIONAL CONVENTION OF THE THEOSOPHICAL SOCIETY

Vārānasi, December 26, 1963

By N. SRI RAM, President

I am happy to extend to you all a most cordial welcome. We meet again in Kāshi—to use the ancient name with many sacred associations—where we or our predecessors have met many times in years past, a place which our late revered President, Dr. Annie Besant, loved better than any other and where she made her home when she first came to India.

We meet, most of us who are not too much preoccupied with matters of business, to renew our bonds with one another, to turn our thoughts and attention to the Ageless Wisdom, and to seek ways to apply it in our own lives and to the problems of the times, a seeking to be accomplished more within oneself than through much talking, with its attendant reactions.

To know the Wisdom, which knowledge is both through reason and intuition, and to live it with one's whole intelligence and being is to let life blossom out of those sources where is its latent beauty, and spread itself in action that manifests and diffuses that beauty.

Let us while we are here together in friendliness and in an atmosphere which must call forth the best in each of us, enter each as he can into the depths of the Wisdom, its many-aspected beauty and all-embracing peace. Thus will the Convention of 1963 become memorable in the series of Conventions lighting the pathway of the Society.

This being the Convention of the whole Society, we may well regard the whole Society as focussed here in spirit. The messages that have been read indicate that there are many members who cannot be present with us physically but are present with us in their thoughts. Let our thoughts go out to them and to all members in greeting, wherever they might be. Let us also turn to Those whom we regard as our Elder Brethren, while I recite the words, somewhat modified, which Dr. Besant used to use at the Conventions over which she presided (Rise, Brethren):

May Those who are the embodiments of love immortal bless with Their help and guidance the Society founded in furtherance of Their plans. May They inspire it with Their wisdom, strengthen it by Their power, and energize it with Their activity.

I declare this 88th Convention open. (Be seated, Brethren.)

Every Convention is a kind of peak we ascend as well as an occasion

from which to look back and to look forward. It provides an atmosphere in which each of us can best realize what this movement is intended to achieve and what he can do to help it. The Society was launched into existence not long before the onset of the most revolutionary era which the world has ever witnessed. No one, except perhaps its Founders, could have foreseen at that time the nature of the events that were to take place or the changes both in the world's thought and in conditions all over the world. The last fifty years or so have been the most fateful period, so far as we know, in the history of humanity. Now we have arrived at a point which is partly its culmination and partly a turning-point at which humanity must take a radically different course if it is to achieve the happy destiny that lies within its sight. and avoid the disasters that loom ahead on its present track.

Although the teaching that H.P.B. brought was addressed to her generation, vet we can see it had a value much fartherreaching than her times. Presented as an outline of the esoteric philosophy, it embodies a Wisdom applicable to all times and places and enables us to place in perspective the events that have happened and are happening. It only gains in its significance from the advances in scientific thought more revolutionary as these are than what one could have ever expected. The philosophy is esoteric in the sense in which what is seen deep within an instrument such as a microscope or telescope must seem esoteric to those who do not also see it and do not suspect the existence of such an instrument. In this case it is really the instrument or mirror of our own purified consciousness which can reflect the underlying truth that cannot be perceived otherwise. The philosophy is esoteric inasmuch as it comprehends a whole range of subjective truth which reveals itself in the consciousness that is open to receive it, that has achieved the clarity needed to perceive what lies in its own depths, as well as what appears on its surface. This philosophy, as propounded, has widely influenced the thoughts of people in various ways, but all the time in a manner which has tended to broaden and cosmopolitanize their minds, not only in matters of religion and philosophy, but also in matters of individual life and human relationships, anticipating the great need of the world as it is today.

After H.P.B. came Dr. Annie Besant who, with her colleagues, undertook the task of expressing that philosophy in a form that illuminated its truth to numbers of people who found its metaphysics difficult to comprehend, and she exemplified by her own life and actions how Theosophy can be lived and applied in each department of human activity. brought down the truth that was in the heavens to levels where its warmth and illumination became available to those who were occupied with problems of reconstruction in various fields. We have had other leaders who have carried on the work and developed it, each in his own way and according to the opportunities and needs of his particular time.

Now we are at a point in the vast unfolding drama of the world's affairs at which all that has taken place seems but a preparation for a comprehensive re-organization of conditions as well as a different way of life, based on an understanding also more comprehensive, for every people and each individual. This means there has to come into being a new order, with a different character from that of the old. This order cannot come about unless those of us who belong to the transition from the old to the new bring to its formation, or at least to the task of giving it the necessary inspiration

and direction, a new mind with a different outlook on all problems, whether pertaining to the life of humanity or of individuals.

It is of this new mind that Mr. Krishnamurti-Krishnaji, as many of us respectfully call him-speaks. It is a mind purged of its fears and suspicions, its isolationism and greed, and its tendency to take refuge in pleasing illusions and pursue those ways in which it has firmly established itself. It is only a mind that is open, free to come to its own truth, and has a measure of self-understanding, which can rise above differences and create a world of unity, peace and happy co-operation. Also, it is only such a mind that can comprehend truth in its deeper or finer aspects and perceive the inner meaning of things.

We discuss from time to time how to make the Society, which is now 88 years old, more vital than it is. Is there a way of rejuvenating it, even as a tree, which has passed its autumn and winter and become completely denuded and seemingly lifeless, is rejuvenated in spring? Vitality means the upsurge of life, and for this tree of the Wisdom-Religion to renew itself what is needed is not the kind of energy that goes round and round and is content with stereotypes and cliches; it must be the life that springs like fresh waters from the deepest source in ourselves, charged with the truth, the evolving and renovating power that is there. Life flows at whatever level. What checks its flow is immobilization in a form, though it needs form at every point for its expression. In the exploration of truth, the form that limits is often a concept, word or activity that has become a fixed and mechanical habit. So, there has to be a mind that is free of every form, though it may perceive the truth in that form; an approach to truth which, though based on what one learns from

those who have explored and investigated, yet has the spirit of exploring and understanding for oneself. What is important are always those truths which fall within the province of one's direct understanding and determine the manner of his living, the ways of his thought in relation to others and all things around him—not the truth that is an abstraction or an argued-out idea but the truth that is of life and living.

I have read with care all the Section Reports that have been received. Of all the Sections. India has the largest membership, which is understandable; at present it is about 7,400, a small increase since the previous year. The General Secretary for India, Mrs. Radha Burnier, mentions in her Report no less than 758 lapsings during the year, and says that the reasons for increases as well as decreases in membership would be worth studying by Federation officers and workers, having regard to the type of work in their respective areas. In India where there is a religious and philosophical tradition, the main ideas of which are also to be found in Theosophy, people sometimes drift into the Society or are persuaded to come in, without their knowing clearly what are its Objects. They understand them only vaguely as Brotherhood. She makes following general observations pertaining to the question of the number of members, and what is needed to make them effective in the work: "It would be relatively easy for us to add to our membership by having more entertaining programs and by satisfying people in various ways. But we would not then be really carrying on our work... It is necessary for members to understand that the greatest and most lasting inspiration can come only from one's own deepening realization of the truths of Theosophy. The study of Theosophy has to be unlike other

study, in the sense that it should not lead to a mere intellectual grasp of certain concepts but should be closely linked to an inward realization of the truths of life. finding expression in every act. Such an attempt to know Theosophy can be a day-to-day adventure which is full of interest and inspiration. Members should be encouraged to embark on this adventure and not merely depend on lectures and visitors for inspiration and stimulus ... If the majority of members decided to apply themselves to studying Theosophy and knowing it for themselves, each Lodge would have its own wellsprings of energy, and the problem of waning interest, large-scale lapses, etc., can be tackled." There are some who come into the Society, no doubt attracted by its general character, but also with certain expectations, and they leave when they are disappointed. We need not be sorry when that is the case, but we have reason to blame ourselves when we do not do all that we can to help the Society to be dynamic and active for its proper ends and to help our fellow-members, especially those who have recently joined, to understand what Theosophy is and what is our work as Theosophists. The General Secretary stresses the need for every member to realize his responsibility and the value of what he can do: "The work of every earnest member, whether he lectures in public or keeps the torch burning in some lonely corner, is equally valuable. . . It rests upon every member to reflect on the ways in which he can help and fulfil the work of the Theosophical Society."

The above observations apply not only to work in the Indian Section, which goes on steadily as usual, but also everywhere else. The problems in different Sections, although conditions in them vary greatly, are essentially not dissimilar. For they are all connected with our comprehension of

Theosophy, the way it is presented and the way we carry on the activities of the Society. There is good work being done in practically all Sections, and there are also defects and shortcomings everywhere.

Dr. Henry Smith, National President of the Section in the United States, remarks that "There are still structural weaknesses in many Lodges, with problems of inadequacy in leadership, ineffectiveness in the presentation, and in some instances even a general apathy." At the same time, "there are many Branches that are vital, well organized, have excellent programs and show progressive methods of presentation". Efforts are being made from the Section Headquarters to remedy the defects and also raise the tone and quality of the work in Lodges and Federations. To this end workshops have been increased. (A workshop is a kind of seminar, with someone to lead and instruct.) In these workshops what is studied or learned is the presentation of Theosophy, Lodge programs and methods of conducting Lodge work, including public relations. Dr. Henry Smith says emphasis is being laid on study and exploring the roots of Theosophy. All the activities mentioned by me in previous years, such as the work of the Education Department, the Regional Expansion program, the publication of The American Theosophist, the lecturing work and so forth, continue as usual. Among its other activities the Education Department sends a monthly letter to new members this for two years—interesting and guiding them in study. I might mention here, as a suggestion to other Sections, a plan adopted last year by the English Section, making it possible for new members to consult a panel of correspondents on questions that arise in their early studies.

The Education Department in the American Section is planning to add to its

collection of tape lectures a series of 15- to 20-minute tape lectures designed especially for study and discussion. These tapes would be valuable, because they could be used in Lodges as a basis for discussion. More and more in many countries Lodges adopt the discussion method, as enabling all their members to participate in the work, evoking their interest in a manner which a long lecture often fails to do. A vault for microfilms has been included in an extension of the Library rooms at "Olcott," recently completed.

One point mentioned by Dr. Henry Smith calls for some notice, namely, the confusion, in some places, of Theosophy with other activities in which some Theosophists are interested, others not. The General Council of the Society in its Resolution of December 1950 (which is printed in every issue of *The Theosophist*) did take notice of this problem. While every member should be free to engage in whatever activities he considers beneficial, the work of the Society should be conducted in such a way as to maintain the Society free of identification with any other body.

One of the Sections which has shown very welcome signs of fresh interest and vitality is England. The General Secretary, Mr. Wallace Slater, reports that the very successful Campaign for Unity in 1962—not unity in the Section but the truth of the unity that underlies the diversities of life—has been followed up in 1963 with a special emphasis on basic Theosophy, "the fundamentals without the frills," as someone has called it, although there can be, I think, no frills in Nature's vast plan, except ramifications and details, like the branchings of a leafless tree in winter as seen against a cloudless sky. For the first time in many years the membership has shown a definite increase—some 323 new members having come in during the year. The

public lectures at the National Headquarters have been so well attended, we are told, that it has been necessary to arrange for three beginners' classes each week, to meet the demands of the interested public. The value of such classes, if conducted by someone who knows how to lead and develop the interest of students, cannot be overestimated. If Theosophy, with all the beauty that belongs to it, can be so presented as to evoke at every turn the response that is the counterpart to its different facets and aspects, the study can become a veritable induction into that truth which is beauty and ever expands without losing its freshness.

Mr. Slater refers to a piece of work which can be of help to members in other Sections also, namely, the preparation of a Reading Guide on the Third Object, to be followed by a similar one on the Second Object. Such Reading Guides, also bibliographies on subjects of interest to Theosophists, and Study Courses on Theosophy can be of great help especially to Lodges in which the members do not know how to plan their study activities, but carry on in a haphazard manner.

The General Secretary for Italy, Mr. Roberto Hack, refers to a kind of cleaning-up and renewal which has been taking place in that Section, though this work has been very difficult to manage. He says there has been for some years "a strong trend to accentuate all forms of psychism and to neglect completely the original teachings". It was urgently necessary to give the members the opportunity to acquire the fundamental knowledge which will prevent them from falling into sectarian habits of mind. This is being done by concentrating efforts in the careful preparation of articles for their monthly journal Alba Spirituale of a nature that will help this purpose. Mr.

Hack has also, in his contacts with Lodges and members, and at the Section Convention, laid stress on the importance of maintaining in the Society a spirit of investigation, free from every tendency to phenomenalism and crystallization of thought. Two Lodges had to be dissolved during the year; also the number of unattached members is less. The number of members at present is about 580, about the same as five or six years ago.

The work in all other countries in Europe proceeds in its normal rhythm. In Sweden the Lodges in Stockholm have been holding joint monthly meetings, one member from each Lodge introducing a chosen topic for general discussion. The Swedish General Secretary, Mrs. Kerstin Berg, mentions two of these topics: "How can Theosophy be the Ancient Wisdom and at the same time a modern and living knowledge of life?" and "How is it possible to live with harmony in the world of today?" She writes that these meetings have afforded useful and appreciated opportunities for the members of the Lodges and the unattached members to come into closer contact with one another. mentioning this partly as an instance of the increasing use of the discussion method, and partly for the nature of the subjects discussed, which is indicative of the fact that what generally evokes active interest are the questions connected with ourselves and our living.

It is happy news that both in Cuba and Viet-Nam, countries where conditions have been very troubled, the Society's work has gone on steadily and without a break. Mr. Aguilar Mora, the General Secretary for Cuba, reports that there are 23 Lodges in the country, nine out of these in Havana. All the nine have been functioning throughout the year. Out of the other fourteen, eleven have carried on their work normally. The Section journal

has been published regularly and contains carefully selected Theosophical articles. Also a number of booklets have been issued, as well as a study course in Theosophy. It seems that the Lodges in Havana are this year studying the same subjects as are in the syllabus of the School of the Wisdom at Adyar, beginning, as at Adyar, on October 2nd and continuing the study during Monday to Friday of each week. Surely this is proof of the earnestness and enthusiasm of our Havana brethren.

The General Secretary for South Viet-Nam, Mme. Nguyen-thi-Hai, reports that throughout the period of troubles in that country-marked by insecurity as well as economic difficulties—the Section, confining itself strictly to the three Objects of the Society, has been "able to carry on its mission of fraternity and peace, widely diffusing the teachings of Theosophy". The bi-monthly review which is issued provides, she says, both the public and the members with an abundant supply of literature on Theosophy and is of particular interest to the intellectual classes. Two new Lodges were formed during the year, and the present membership is about 670.

I reported last year that Indonesia was one of the Sections where the membership was increasing. It had then about 1,700 members and had just celebrated the 50th Anniversary of the founding of the Section. Our members there were eager to hold this year the Second Indo-Pacific Conference. But the whole situation changed suddenly. On April 3rd 1963, President Sukarno of Indonesia declared the Society in Indonesia a prohibited organization, on the ground that its Constitution (which of course adheres to that of the parent Society) does not show "any certainty about the acceptance and adhesion to the Political Manifesto" of President Sukarno; that the purpose and

object of the Indonesian Section is "not in accordance with the personality of Indonesia, (will) obstruct the Indonesian revolution, and is contradictory with the socialistic idealism of Indonesia". In brief, the Society is prohibited, because it does not follow the ideology or the political ends of the Indonesian State. All international organizations, including the Rotary International, had already been forbidden in Indonesia; the Theosophical Society, with its aim of Universal Brotherhood, has also been dealt with in the same manner. Some of our brothers in Indonesia have set up another body, as a successor to the former body, with the same Objects, I am told, but having no international connection and adhering to State's political manifesto and the policy.

An important event in the Australian Section, recorded by the General Secretary, Miss Helen Zahara, is the taking over of the nine-storey office building in Sydney, which houses the Section Headquarters and the Blavatsky Lodge, by a new Company wholly owned by the Society in Australia and component Lodges. This building, known as the Savoy House, is in the centre of the city and was previously owned by a Company floated originally by members, but many shares had passed to others not interested in the Society's work. Now the use of the building for the Society's work is assured.

The Report from the Brazilian Section is sent by Mr. Joao Brito Pinto, Vice-President of the Section, because of the illness of Señor Armando Sales, the National President. Happily, Brother Sales is well enough now to resume the duties of his office. The work in Brazil follows the lines mentioned in former years; but an important addition taking shape, due mainly to the initiative and devotion of Brother Sales, is a Theosophical

Centre on a site some 27 kilometres from the heart of the city of Sao Paulo. The centre has been named after Brother Raja, and is meant for Theosophical and other allied activities which will take place there in a group of buildings, the construction of which has begun already. The Section has now about 940 members.

In Central and South America the largest Section is Argentina. But it appears that the number of members, as carried in the registers, did not correspond to the actuality. A number of Lodges have had to be dissolved. Señor Nazareno Rimini, the General Secretary. writes that "some of the Lodges were never such, even from the moment of their formation, having been started solely for election purposes". There were members not complying with the statutes, who had to be removed. The General Secretary has been making a tour of the Lodges, including those distant from the Section Headquarters, in order to vitalize the work, and he thinks that despite the irregularities that had created an unhealthy situation in the Section, but are now being straightened out, the movement is strong progressing. Among the publications that have been brought out are two volumes of the history of the Theosophical Society, a project to which Brother Rimini has devoted much time. This history in Spanish will now be available to members in all Spanish-speaking countries. Steps are being taken to locate the Section Headquarters in Buenos Aires, and the Lodges in Mendoza in more suitable premises. In Rio Cuarto, another main centre of activities, the local Lodge has had for its use for many years a suitable and pleasant building owned by Señor and Señora Palacios Ushman, both very devoted members of long standing. They have now presented this building to the Section as a gift.

An event to which Sections in Central and South America have been long looking forward was the holding of an Inter-American Congress, convened in Mexico City from November 27th to 30th, in which representatives from some 16 of these Sections, as well as from the United States (including Dr. Henry Smith, the National President), Canada, Australia and New Zealand were present. The organization as well as the success of the Congress were possible because of the enthusiasm and devotion of Señor Vado Lopez, the Mexican General Secretary, and the members in Mexico. It is proposed to hold other such Congresses from time to time, in different countries, beginning with Argentina. Señor Lopez remarks that the results of this first Inter-American Congress cannot be seen in the immediate future. The important fact is that the first step has been taken for the emergence of a structure strong and beautiful, from which-to use his own language—"the marvellous forces of our Theosophical teachings shall radiate to help the world ".

The Philippine Section records notable progress. Brother Domingo Argente, the General Secretary, writes that three new Lodges were organized and there were 40 new members. Most of the older Lodges are located in and around Manila. But these three Lodges are in three new areas in Southern Luzon. He also says that "many of the youths among the new members and others who had come in before them seem to have similar forwardlooking ideas, and judging by their impatient enthusiasm and the searching questions they have been asking, we can reasonably hope that the future of the movement is assured in that country ".

A feature of the activities in many Sections, particularly in Europe, is the annual Summer School, held for approximately a week in some selected place. Many members look forward to this occasion even more than to the annual Convention of the Section. This year in September there was a very large Summer School at Leysin, Switzerland, attended by 260 members from 21 countries, it being multi-lingual in character. It was organized with very great care and thoroughness by Mr. Georges Tripet, the General Secretary for Switzerland, and Mrs. Rachel Tripet.

I might mention here other Summer Schools held during the year: A Summer School was held in July-August in England covering a period of two weeks and divided into two sessions with about 110 present at each, this besides study weekends at many places. There were Summer Schools in Iceland; in Finland (where the number attending was about 160. including some members who had come for a meeting of the Council of the European Federation held there); in the Netherlands (called a Study Week); in Pichl, Austria (with members from different German-speaking countries); at "Olcott" in the United States (following the annual Convention, as usual); in Australia (following their annual Convention); in Nairobi, East Africa (described as a Study Seminar and conducted by Mr. Rohit Mehta) and for the first time in South America, in Rio Cuarto, Argentina. In New Zealand though there is no Summer School the annual Convention extends over a number of days, after the business is finished, during which there are Theosophical talks and discussions.

The Summer Schools in Europe are usually arranged in consultation with the Chairman of the European Federation Council, at present Mr. John Coats, so that there may not be a clash between their dates. Mr. Coats who has been travelling extensively in Europe has been able to attend and preside at most of them this year. Numerous camps and

conferences have been held in different parts of India.

The Young Theosophists have been active in many places. There are groups in all the larger Lodges in Australia. This year they held their own Camp near Sydney, and the General Secretary for Australia mentions the fact that they also took an active part in the Section Convention. The General Secretaries for Uruguay and the Philippines mention prominently the activities of the Young Theosophists in their countries. Reports from a number of the countries in Europe, including Iceland, make mention of them.

The Theosophical Order of Service and other groups engaged in similar activities figure more than usual in the year's Reports. In England the T.O.S. has bought and organized a Home for Retired Theosophists; in Saigon, Viet-Nam, the Section has been for many years conducting an orphanage for infants. of whom there are fifty at present. Among causes which have especially attracted help from Theosophical groups might be mentioned help for Tibetan refugees of whom there are still a large number in northern India without a home. and the Freedom from Hunger Campaign. Many Theosophical Lodges engage in humanitarian activities, including educational work. In Cevlon D. L. F. Pedris, who has recently succeeded Mr. N. K. Choksy as National President, is starting a T.O.S. Group to promote religious harmony. The T.O.S. in the United States continues to carry on work for different purposes of a humanitarian or cultural nature.

During this year I made a three months' tour in the United States and was present at the annual Convention and Summer School at Olcott in July. The program of the Summer School included as its main activity an important workshop conducted by Mr. and Mrs. Fritz Kunz.

assisted by Mrs. Sellon and others, the object of which was to show how the basic concepts of Theosophy, as given in The Secret Doctrine, can be expressed in a form which would appeal to the modern scientific mind. Later in the year Mr. and Mrs. Kunz conducted a similar workshop at Krotona in Ojai, California. Before returning to Advar early in September I also paid brief visits to Toronto, Canada: San Juan (Puerto Rico), Iceland, Huizen, London and Paris, Miss E. Nisewanger accompanied me in the United States and helped me as Secretary. Srimati Rukmini Devi was in England in May and June, visiting Lodges, and attended the English Section Convention as guest speaker. Mr. and Mrs. Felix Layton, on their return journey to the United States, toured and lectured for three months in Australia and six weeks in New Zealand. Miss Helen Zahara travelled to Mexico City as her Section's representative at the Inter-American Congress, and while en route visited Los Angeles and Oiai in California. From the first of July, Mr. and Mrs. Geoffrey Hodson have been making an extended tour of Lodges in Australia. Dr. Hugh Shearman visited some of the Scandinavian Sections. Mrs. Vera Boardman and Mrs. Gladys Goudey, workers at the Krotona Centre, were much appreciated travellers in the South American Sections, their knowledge of Spanish enabling them to come more closely into touch with our members there. Mr. Michael Alexander of Australia travelled to Ghana, where he was able to give many addresses and meet the members who have a very limited contact with brothers from other Sections. Mr. Rohit Mehta and Mrs. Shridevi Mehta made a tour in East Africa and Southern Rhodesia. I need not mention here a great deal of travelling and lecturing which takes place more or less all the time within the Sections, especially the

larger ones, although that work is as valuable as going abroad and lecturing in another country.

The second term of the 1962-3 session of the School of the Wisdom was concluded in March 1963. Its present session commenced on October 2nd, as in previous years, with Mrs. Doris Groves from England as Director of Studies. We are fortunate that she has been able to free herself from her work for the Society in England and take the direction of this session at Adyar. There are at present students coming from the following countries: United States, India, England, Belgium, Iceland, Tanganyika, Canada and South Viet-Nam.

I referred last year to our plans for the new Advar Library building, for which the foundation stone was laid during the Convention in December 1960. I mentioned also my proposal, endorsed by practically all the members of the General Council, that the Besant Centenary Trust and Kalakshetra should be asked to vacate the eastern portion of Besant Gardens by June this year. I am glad to report that the site intended for the Library itself has been vacated, but not the area adjacent to it to the east, which has been used as an open-air theatre by Kalakshetra, an area which we also need in connection with the development of the Library's work. (However we have been given to understand that it will be vacated by June 1964.)

I have clearly stated as part of my proposals to the General Council, and also to Kalakshetra and the Besant Centenary Trust, that the remainder of Besant Gardens, that is, the western portion where there are the buildings, should be vacated as early as possible. It will presently be thirty years since these buildings began to be occupied (on a year-to-year basis), and now that the Besant Centenary Trust and Kalakshetra have

extensive grounds at Tiruvanmiyur and have been able to put up many buildings, it should be possible for them to restore the Besant Gardens buildings to the Society's use. They were allocated temporarily for the work of the Besant Theosophical School and Kalakshetra when these were started. But at present Kalakshetra has several departments, some of which are of a commercial and expanding nature, and it is only right that these should be located in their own proper premises.

The new Adyar Library building is to be commenced as soon as we possibly can. There has been some delay in doing so, because of official formalities and restrictions on the use of materials required. The work of the Library (the research and publications work in particular) cannot be expanded, or even properly carried on in its present greatly restricted premises.

There have been some changes and additions among the departmental workers at Advar. The Honorary Treasurer, Mr. Homi M. Shroff, desired to be relieved of that office, and I have appointed in his stead Mr. S. Somasundaram from the 20th of September this year. Mr. Somasundaram was Deputy Chief Auditor on the Indian Railways until his retirement, and he brings to his office as Treasurer considerable official experience in that capacity. Miss Annie Tjioe from Indonesia is now Honorary Assistant Treasurer in place of Mr. K. S. Rajagopalan who has retired. Mr. George Linton from the United States, who arrived at Adyar towards the end of September with Mrs. Dulcie Linton, is helping us as Adviser for construction work in the Engineering Department. Mr. K. N. Ramanathan took over the work of the Department of Information when Mrs. Eunice Layton left in March this year to return to the United States.

As he was previously Manager of the Press Trust of India, his contacts in that capacity are now of help to the Society in getting publicity. I have appointed Mr. D. V. Syamala Rau as Superintendent of Bhojanasala, as Mr. N. Balaji Rao has left to take up work elsewhere. Other Heads of Departments and Assistants continue in their respective offices. I thank all officers and employees for their services and help.

I have to record with regret the passing away of a number of our Brothers of long standing: Brother Panda Baijnath, who joined the Society in 1890, before the Indian Section was chartered, and has been most active all the years of his membership, for some years as General Secretary of the Section; Sri Radhakant Sharan, a member for some 58 years in Bihar, India, and a pillar of the work in that area; Mrs. D. R. Dinshaw, a most devoted worker who was living at Adyar giving invaluable assistance to a number of Presidents in the editing of The Theosophist; Mr. Ernest Nielsen, General Secretary in Norway for many years and an ever dependable and capable worker; Mr. A. J. Plard, also a devoted worker, formerly General Secretary in Puerto Rico for many years; Dr. C. Kunhan Raja, who was Director and later Curator of the Adyar Library for very many years. I may also mention here the passing last January of Mrs. Mary Dorothy Jinarājadasa, who although not in the work latterly, was for many years a devoted worker in the cause of the advancement of Indian women, as well as of Theosophy.

This survey of the movement from one end of the world to the other, might be concluded with some self-searching questions. What are we accomplishing? This question is asked, in nearly the same

words, by Brother Argente, General Secretary in the Philippines. Trying to answer it he uses the words: "Minds illumined and hearts ennobled through contact with Theosophy and the Theosophical Society". Theosophy, even as we have it, has been for innumerable people as a light brought into a place of darkness, and it has ennobled their lives in varying degrees. We have abundant testimony to that effect. But turning to what we are doing at present, cannot we do very much better both in our Lodges and in relation to the public? No one who is honest with himself can answer this question otherwise than by admitting the possibility. Perhaps we have first to realize the obstructions within ourselves, our self-centredness and fixations, which are reflected both in our understanding of Theosophy and in the way we present it and carry on our activities. Happily, there is in very many quarters a spirit of questioning and criticism directed towards these very points.

Out of this questioning I think there must come the change which Dr. Henry Smith speaks of as a need of the present time. But change in what direction? I should say in very general terms, a greater depth, universality and whole-heartedness in our comprehension and work. Brother Argente asks: Are we too much preoccupied with the fruit of action, the results we can perceive and enjoy? "What should preoccupy us is to give our best to the act of sowing, leaving the fruit and the time of reaping to the Good Law." But what we sow must be the Truth, the seed that falls out of the ripeness of our minds and hearts. We are concerned only with the call of the here and now, and with giving all that is waiting in us to be given without any thought of return.



#### THE TREASURER'S REPORT

(1) The Income and Expense Account of the Theosophical Society for the year ended 30-9-1963 closed with a deficit of Rs. 89,201/- against a deficit of Rs. 15,126/- in the previous year and Rs. 36,516/- in 1960-61. The main reasons for the increase of Rs. 74,075/- in the deficit are given below:

| ,                                       | Rs.        | Rs.      |
|---|------------|----------|
| Increased Expenditure:                  | 200        | 10.      |
| Repairs and Renewals                    | <br>21,000 |          |
| Working of Departments                  | 9,000      |          |
| Miscellaneous Expenses                  | <br>6,000  |          |
| Gratuities and Retirement               |            |          |
| Allowances                              | <br>8,700  |          |
|   |            |          |
| Decreased Income:                       | 11.000     |          |
| Fees and Dues                           | <br>11,000 |          |
| Donations                               | <br>46,000 |          |
|   |            | 1,01,700 |
| Counterbalanced by:                     |            |          |
| Increase in Interest earnings           | <br>8,500  |          |
| ", Miscellaneous ",                     | <br>5,000  |          |
| Decrease in expenditure on              |            |          |
| Convention, Sales Tax,                  |            |          |
| Provision for Doubtful                  |            |          |
| Debts and other special                 |            |          |
| items                                   | <br>14,000 |          |
| *************************************** |            | 27,500   |
|   |            |          |
| Net Increase                            |            | 74,200   |
|   |            |          |

(2) *Donations*: The total collections received for Adyar Day inclusive of the sum of Rs. 84 brought forward from the previous year amounted to Rs. 28,714 and other Donations amounted to Rs. 12,725. The President allocated the amount to various funds and accounts as shown below:

|  |     | Rs.    |
|--|-----|--------|
| Olcott Harijan Free Schools              |     | 2,000  |
| Adyar Library                            |     | 3,000  |
| Welfare Fund                             |     | 1,000  |
| Vice-President's Travelling Fund         |     | 7,500  |
| Faithful Service Fund                    |     | 3,000  |
| Sums made available to General Fund:     |     |        |
| (a) Adyar Day Allocation                 |     | 11,500 |
| (b) Other Donations                      |     | 12,725 |
| Balance retained for further allocations |     | 40,725 |
| Balance retained for further anocations  | • • | 714    |

- (3) A. B. C. Fund: The Opening balance on 1-10-1962 was Rs. 15,77,797. A sum of Rs. 68,800 was received as donations during the year and the closing balance was Rs. 16,46,597. Till now the moneys belonging to this Fund were invested along with other funds. It has now been decided to earmark certain investments specifically against the A.B.C. Fund in order to make sure that the Capital Funds are not touched and only the interest is used for maintenance of the Headquarters Estate.
- (4) Adyar Library Building Fund: The cash portion of this Fund on 30-9-1963 amounted to Rs.2,52,742 which together with the house at Juhu (valued at Rs. 47,000 in the books but worth more) will enable the Society to initially finance the construction of the new Library Building to the extent of about Rs. 3 lakhs.
- (5) Fees and Dues: The decrease of Rs. 11,000/- as compared with last year was due to the receipt of dues from the American Section in the first week of October, 1963. That Section has been requested to see that the major portion of the dues are remitted before September every year.
- (6) Sundry Debtors: (Other than T.P.H.) Out of the sum of Rs. 86,000/outstanding on 30-9-1963 there are 11 items over Rs. 1,000 each, totalling Rs. 68,730/- out of which 8 items totalling Rs. 47,952/- are over one year old. By the end of November, 1963 three of these items were substantially cleared leaving only 5 items of over Rs. 1,000/each outstanding from a date prior to 30-9-'62. Of these 2 items totalling Rs. 14,000 relate to an institution and 3 items totalling Rs. 10,829/- relate to individuals. Items less than Rs. 1,000/each outstanding for over one year may amount to about Rs. 4,000/-.

- (7) Sundry Debtors: (T.P.H.): A sum of Rs. 1.49 lakhs is due from the T.P.H. as on 30-9-1963, as compared with 1.19 lakhs on 30-9-1962. The outstandings are increasing year after year. Recently a T.P.H. Council has been appointed by the President and this Council will go into the question of the indebtedness.
- (8) Bhojanasala: The loss during the year under review was Rs. 8,284/- against Rs. 5,514 in 1961-62. At present the amount received from the Boarders does not even cover the cost of provisions consumed. Salaries and other charges have to be borne by the Society. Steps have to be taken to increase the rates charged and to reduce the establishment expenditure.
- (9) Leadbeater Chambers: The loss during the year was Rs. 3,437 against Rs. 1,394 in 1961-62. Here again steps have to be taken to reduce the loss.
- (10) Laundry: The loss during the year was Rs. 3,481 against the loss of Rs. 2,526 in 1961-62. The loss is continuously increasing year after year. As the income was only about Rs. 6,000/it follows that our actual cost of washing clothes is more than 13 times the rate we charge. It is noticed that the chief customers are the various departments of the Society and the paid employees residing in the Estate. Very few foreign visitors avail of the service. Now that clean Laundry service is available outside the Estate it appears preferable to close down the Laundry as it is not a service which is quite so essential as the Bhojanasala or Chambers. An annual saving of Rs. 3,500/- will result to the Society.
- (11) Engineering Department: Many of our buildings have become old and need heavy repairs. In view of the great increase in the cost of materials the expenditure on "Repairs and Renewals"

will increase greatly in the coming years. A policy of letting out the work on contract to reliable Contractors has to be adopted. Also a system of priorities in the carrying out of work has to be adopted so that the more urgent and important works are given precedence. In the case of electric supply, the Madras Electricity System is considering the question of taking over the work of distribution within the Estate.

- (12) Garden Department: The cost of cultivation was the same as last year, whereas the sale proceeds were less by Rs. 3,900/-. However by economy in ornamental garden expenses (Rs. 2,000) and better utilization of bullock cart (Rs. 1,100) the deficit was reduced to about Rs. 800/-. The question of letting out the trees in Besant and Damodar Gardens on contract is under investigation to see if it might prove more economical. As growing of vegetables is not profitable and the produce is not purchased even by Bhojanasala and Chambers the question of stopping vegetable cultivation has to be considered.
- (13) Vasanta Press: As usual this year's results also show that income and expenses are about equal. However, as a good portion of the Gratuities and Retirement Allowance payments have been borne by the Society, the Press can only be regarded as being run on a loss. The question of installing new machinery is under consideration. From all points of view it is best to adhere to the policy of restricting the work in the Press only to the requirements of the Society.
- (14) (a) Gratuities and Retirement Allowances Reserve: Each department (including Vasanta Press) contributes 7% of the total annual pay of their establish-

- ment towards the Gratuities and Retirement Allowance Fund. Whereas last vear the balance at the credit of this Fund was Rs. 3,279/- the closing balance at the end of the year was minus Rs. 8,688/- due to heavy payments of retirement allowances and gratuities during the year. At the instance of the Auditors we have to transfer this overdrawal to revenue expenses of the Society for this year. For the future it is proposed to debit the actual gratuities and retirement allowances to the respective departments and where such actual payments are less than 10% of the annual salaries the difference will be taken to a reserve Fund.
- (b) Due to our liberal scales of Gratuities and Retirement allowances the expenditure on this account is increasing rapidly. The question of introducing revised rules relating to retirement benefits will be taken up and employees who are brought on to the monthly rates of pay are being warned that they will be governed by the new rules when they are brought into force.
- (15) General: The donations are decreasing and the costs are increasing. In future we may also have to pay heavy taxes on urban land according to the recent legislation. There is great necessity for reducing our expenditure on establishment. Encouragement has to be given to voluntary theosophical workers on allowances in preference to recruitment of regular "service" employees. Not only will this policy be more economical, but we will have less of administrative difficulties.

S. Somasundaram,

Hony. Treasurer,

#### THE THEOSOPHICAL SOCIETY INCOME AND EXPENSE

| EXPENSES   |                | Pr  | eviou  | is Year  |     | C  | urrent Year  |          |
|--|----------------|---|--|----------|-----|--|--|----------|
| To Establishment: Salaries and Wages * Retirement Allowance Repairs and Renewals Light and Water Miscellaneous Postages, Telegrams and Telephone Printing and Stationery Sales Tax Other Taxes Publications to General Secretaries Museum and Archives Dr. Annie Besant Com. Stamp Function Convention, 1961 |                | Rs. 44,359 48,954 7,471 11,916 2,327 6,305 5,387 16,109 688 3,802                           | nP. 97 68 64 30 91 35 62 57 30 73                  | Rs.      | nP. | 44,029<br>8,688<br>69,894<br>8,612<br>15,874<br>2,493<br>6,765<br><br>16,411<br>701<br>3,932 | Rs.  11 78 441 20 39 79 17 44 555 665                              | nP.      |
| " 1962  Departmental Results: Bhojanasala Engineering Department Garden Laundry Leadbeater Chambers Vasanta Press Dispensary Sanitation Watch and Ward  Appropriations: To Adyar Library   |                | - 5,514<br>-17,669<br>+ 586<br>- 2,526<br>- 1,394<br>+ 263<br>- 7,842<br>- 4,704<br>-21,790 | 06<br>95<br>89<br>13<br>40<br>29<br>18<br>89<br>72 | 1,52,576 | 61  | - 8,284<br>- 18,802<br>- 3,480<br>- 3,436<br>- 83<br>- 7,884<br>- 4,930<br>- 21,889          | 02<br>26<br>89<br>55<br>78<br>94<br>36<br>65<br>59<br>16<br>69,638 |          |
| "The School of the Wisdom<br>"The President's Travelling Fund<br>Depreciation:<br>On Motor Car<br>"Immovable Property<br>"Movable Property   |                | 5,000<br>6,600<br>5,738<br>16,688<br>6,242  | 00<br>00<br>00<br>00<br>00<br>00                   | 16,600   | 00  | 3,000 (<br>6,600 (<br>5,738 (<br>16,736 (  | 00<br>00<br>00<br>   | 00<br>71 |
| * Amount paid during the year 27,044  Less amount at the credit of the Fund 18,356  8 688  | 86<br>08<br>78 |   |  | 2,500    | 00  |  |  |          |
|  |                |   |  | 2,60,936 | 76  |  | 2,92,149   | 69       |

ADYAR
14th December, 1963

For The Theosophical Society,
S. SOMASUNDARAM,
Hony. Treasurer,

#### ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 301H SEPTEMBER 1963

| INCOME   | Pro                  | eviou    | s Year           |          |                   | Curre    | ent Year         |          |
|--|----------------------|----------|------------------|----------|-------------------|----------|------------------|----------|
| By Rent (including   | Rs.                  | nP.      | Rs.              | nP.      | Rs.               | nP.      | Rs.              | nP.      |
| Bhojanasala and<br>Leadbeater Chambers)<br>,, Fees and Dues      |                      |          | 56,503<br>28,628 | 15<br>12 |                   |          | 58,361<br>17,593 | 63<br>82 |
| " Interest:<br>Earned (Less I. T. De-                            | 02.200               | 70       |                  |          | 1.00.226          | 45       |                  |          |
| ducted)  Less Interest on  Funds and Accounts                    | <br>93,200<br>11,050 | 70<br>63 | 00.450           |          | 1,00,326<br>9,840 | 45<br>77 | 00.407           |          |
| ,, Donations: Balance b/f.                                       | <br>73               | 27       | 82,150           | 07       | 83                | 95       | 90,485           | 68       |
| Add Received during the year                                     | <br>91,016           | 38       |                  |          | 41,354            | 79       |                  |          |
| Less Allocations   | 91,089               | 65       |                  |          | 41,438            | 74       |                  |          |
| and Grants   | <br>21,500           | 00       |                  |          | 16,500            | 00       |                  |          |
| Less Balance c/f   | <br>69,589<br>83     | 65<br>95 | 69,505           | 70       | 24,938<br>714     | 74<br>06 | 24,224           | 68       |
| ,, Administration Charges<br>,, Income from Jungle<br>wood (net) |                      |          | 8,130<br>893     | 00       |                   |          | 8,130<br>3,048   | 00<br>43 |
| " Profit on Redemption of Investment                             |                      |          | 0,73             |          |                   |          | 1,104            | 00       |
| Excess of Expense over Income for the year                       |                      |          | 15,126           | 61       |                   |          | 89,201           | 45       |
|  |                      |          |                  |          |                   |          |                  |          |
|  |                      |          |                  |          |                   |          |                  |          |
|  |                      |          |                  |          |                   |          |                  |          |
|  |                      |          |                  |          |                   |          |                  |          |
|  |                      |          |                  |          |                   |          |                  |          |
|  |                      |          |                  |          |                   |          |                  |          |
|  |                      |          | 2,60,936         | 76       |                   |          | 2,92,149         | 69       |

Examined and found correct as per the books and vouchers produced.

M. K. DANDEKER & CO., Chartered Accountants.

# BALANCE SHEET OF THE THEOSOPHICAL

| LIABILITIES  | Pi              | reviou   | is Year          |          | C            | urren    | t Year           |          |
|--|-----------------|----------|------------------|----------|--------------|----------|------------------|----------|
|  | Rs.             | nP.      | Rs.              | nP.      | Rs.          | nP.      | Rs.              | nP       |
| General Fund:  |                 |          |                  |          | 10.01.020    | 01       |                  |          |
| As per last Balance Sheet Add Transfer from Adyar                | 9,48,484        | 85       |                  |          | 10,01,939    | 91       |                  |          |
| Library Capital A/c  | 29,818          | 57       |                  |          | 1,606        | 21       |                  |          |
| Add Value of Land Purchased Add compensation from Kovurpad       | 38,763          | 10       |                  |          |              |          |                  |          |
| Estate   |                 |          |                  |          | 5,677        | 11       |                  |          |
| Add profit on Acquisition of land<br>by Madras Government        |                 |          |                  |          | 21,778       | 32       |                  |          |
| by Madras Government   |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
| Less Excess of Expense over                                      | 10,17,066       | 52       |                  |          | 10,31,001    | 55       |                  |          |
| Income for the year  | 15,126          | 61       |                  |          | 89,201       | 45       |                  |          |
| Canaval Endowment Funds  |                 |          | 10,01,939        | 91       |              |          | 9,41,800         | 10       |
| General Endowment Fund: As per last balance sheet                |                 |          | 11,28,238        | 32       |              |          | 11,28,238        | 32       |
| Other Funds: (see notes below)                                   |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
| (i) Of the Society: Interest Bearing:<br>Adyar Library Endowment |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
| Fund (a)   | 60,605          | 57       |                  |          | 65,296       | 88       |                  |          |
| Adyar Library Building Fund Cash                                 | 2,48,939        | 99       |                  |          | 2,52,742     | 36       |                  |          |
| Fixed Property   | 48,000          | 00       |                  |          | 47,000       | 00       |                  |          |
| Adyar Besant Commemorative Fund (b)                              | 15,77,797       | 09       |                  |          | 16,46,597    | 07       |                  |          |
| Miscellaneous Funds (a)  | 94,804          | 33       |                  |          | 89,139       | 57       |                  |          |
| do. do. (c)  | 12,120          | 34       | 20,42,267        | 32       | 12,200       | 78       | 21,12,976        | 66       |
| (ii) Of the Society: Non-Interest                                |                 |          | 20,72,201        | 34       |              |          | 21,12,770        | 01       |
| Bearing: President's Travelling Fund                             | 0.006           | 17       |                  |          | 5,201        | 78       |                  |          |
| Miscellaneous Funds  | 9,086<br>78,039 | 17<br>28 |                  |          | 75,789       | 20       |                  |          |
| (iii) Of Others: Interest-Bearing                                |                 |          | 87,125<br>40,939 | 45<br>57 |              |          | 80,990<br>39,644 | 98<br>07 |
| Reserves:  |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
| Electrical Line  | 6,000           | 00       |                  |          | 6,000        | 00       |                  |          |
| Meter and Water Line Renewal                                     | 4,000           | 00       |                  |          | 4,000        | 00       |                  |          |
| Water Tank Adyar Day Unallocated                                 | 2,000<br>83     | 00<br>95 |                  |          | 2,000<br>714 | 00<br>06 |                  |          |
| Casuarina Development  | 6,587           | 56       | 10 (71           |          | 7,544        | 10       |                  |          |
| Adyar Library: Funds and Reserves:                               |                 |          | 18,671           | 51       |              |          | 20,258           | 16       |
| Miscellaneous Funds  | 3,043           | 92       |                  |          | 3,175        | 97       |                  |          |
| Gratuities Reserve   | 13,670          | 59       | 16,714           | 51       | 15,170       | 59       | 18,346           | 56       |
|  |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
| Sundry Deposits Sundry Creditors                                 |                 |          | 82,554           | 78       |              |          | 80,230           | 76       |
| For Departments  |                 |          |                  |          | 11,812       | 63       |                  |          |
| For Others   |                 |          | 31,014           | 72       | 22,370       | 36       | 34,182           | 99       |
| Note.—(a) Capital and Interest                                   |                 |          |                  |          |              |          | 34,102           | "        |
| available for specific purposes.                                 |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
| (b) Interest only available                                      |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
| for general purposes. (c) Interest only available                |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
| for specific purposes.   |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
|  |                 |          |                  |          |              |          |                  |          |
| C/o  |                 |          | 44,49,466        | 09       |              |          | 44,56,668        |          |

# SÖCIETY, ADYAR, AS ON 30TH SEPTEMBER 1963

| Assets   |        | Pre  | viou           | s Year              |          |   | Curr                       | ent Year            |          |
|--|--------|--|----------------|---------------------|----------|---|----------------------------|---------------------|----------|
| Immovable Properties: (At Cost) (As per books) As per last Balance Sheet   |        | Rs.  | nP.            | Rs.                 | nP.      | Rs.   | nP.                        | Rs.                 | nP       |
| Add Value of land purchased  | i      | 38,763   | 10             |                     |          |   |                            | -                   |          |
| Less value of land acquired by<br>Madras Government  |        | 2,32,620   | 91             |                     |          | 2,32,620<br>3,400                                     | 91                         |                     |          |
| Lands at Urur: (At Cost) (As per books) As per last Balance Sheet  |        | 6,318  | 52             | 2,32,620            | 91       | 6,268   | 52                         | 2,29,220            | 91       |
| Less Sales   |        | 50   |                | 6,268               | 52       | 886   | 12                         | 5,382               | 40       |
| Lands in Sindh: (As per books) As per last Balance Sheet   |        |  |                | 10,000              | 00       |   |                            | 10,000              | 00       |
| Buildings at Adyar: (At Cost) (As per books) As per last Balance Sheet Add Additions                                 |        | 8,14,244<br>2,426  | 37<br>95       |                     |          | 8,16,671  | 32                         |                     |          |
| Less Depreciation to-date  |        | 8,16,671<br>3,72,421   | 32<br>97       | 4,44,249            | 35       | 8,16,671<br>3,88,754                                  | 32<br>97                   | 4,27,916            | 35       |
| "Gulistan," Kotagiri (At Cost) (As per books) As per last Balance Sheet Less Depreciation to-date                    |        |  | 72<br>88       | 16,054              | 84       | 20,169<br>4,517                                       | 72<br>88                   | 15,651              | 84       |
| Movable Property at Adyar: Furniture and Fixtures: (At Cost (As per books) As-per last Balance Sheet Add Additions   | i)<br> | 79,021<br>4,226  |                |                     |          | 83,238<br>595   | 36<br>09                   |                     |          |
| Less Sales   |        | 83,248<br>10   |                |                     |          | 83,833  | 45                         |                     |          |
| Less Depreciation to-date  |        | 83,238<br>71,196   |                | 12,041              | 62       | 83,833<br>77,483                                      | 45<br>45                   | 6,350               | 00       |
| Lan Donnaistian to date  |        | 28,692<br>8,607  |                | 20.085              | 00       | 28,692<br>14,345                                      | 84<br>84                   | 14 247              | 00       |
| Investments: (At Cost) (As per books) Government of India Loan 2¾% to 4% State Govt. Loans                           |        | 6,61,034   | 70             | 20,085              | 00       | 6,75,938  | 70                         | 14,347              | 00       |
| 2¾ % to 4½ %<br>United Kingdom Loan<br>Surrender Value of Life Policies<br>Miscellaneous Securities<br>Fixed Deposit | :::    | 6,16,318<br>3,03,180<br>28,900<br>53,758<br>10,03,535  | 90<br>00<br>29 |                     |          | 5,96,418<br>2,85,877<br>29,200<br>54,758<br>10,28,070 | 80<br>53<br>00<br>49<br>52 |                     |          |
| Interest accrued on Investments  |        | White Special Control of the lost Control of t |                | 26,66,727<br>36,196 | 95<br>05 |   |                            | 26,70,264<br>42,080 | 04<br>00 |
|  | C/o    |  |                | 34,44,244           | 24       |   |                            | 34,21,212           | 54       |

#### BALANCE SHEET OF THE THEOSOPHICAL

| Liabilities | Previou | is Year              | Current Year |                      |  |  |  |  |
|-------------|---------|----------------------|--------------|----------------------|--|--|--|--|
| B/f         | Rs. nP. | Rs. nP. 44,49,466 09 | Rs. nP.      | Rs. nP. 44,56,668 60 |  |  |  |  |
|             |         |                      |              |                      |  |  |  |  |
|             |         |                      |              |                      |  |  |  |  |
|             |         |                      |              |                      |  |  |  |  |
|             |         |                      |              |                      |  |  |  |  |
|             |         |                      |              |                      |  |  |  |  |
|             |         | 44,49,466 09         |              | 44,56,668 60         |  |  |  |  |

ADYAR
14th December, 1963

For The Theosophical Society, S. SOMASUNDARAM, Hony, Treasurer.

# SOCIETY, ADYAR, AS ON 30th SEPTEMBER 1963

| ASSETS   | P                                   | revio          | us Year            |          | C                                   | urren                | t Year                            |            |
|--|-------------------------------------|----------------|--------------------|----------|-------------------------------------|----------------------|-----------------------------------|------------|
|  | Rs.                                 | nP.            | Rs.                | nP.      | Rs.                                 | nP.                  | Rs.                               | nP.        |
| Departmental Assets:  (As valued and Certified by the Management)  |                                     |                | 34,44,244          | 24       |                                     |                      | 34,21,212                         | 54         |
| Electrical Installations Tools, Equipments, etc. Printing Machinery, etc. Accounts Recoverable Standing Crops and Developments | 26,674<br>27,008<br>90,930<br>9,468 | 50             |                    |          | 31,556<br>25,218<br>85,715<br>9,651 | 00<br>11<br>49<br>25 |                                   |            |
| Account Stock on hand Cash and Stamps on hand  | 66,666<br>1,63,902<br>485           | 61<br>73<br>00 | 3,85,134           | 87       | 66,207<br>1,90,636<br>580           | 11<br>45<br>00       | 4,09,564                          | 41         |
| Adyar Library Assets Sundry Assets (As per Books) Loans and Advances Security Deposit  |                                     |                | 2,80,153<br>20,014 | 58<br>14 |                                     |                      | 2,89,244<br>3,399<br>9,846<br>280 | 71         |
| Sundry Debtors (As per Books) Considered good by Management Due by T.P.H. Due by Others  |                                     |                |                    |          | 1,49,287<br>86,348                  |                      |                                   |            |
| Less Reserve for Doubtful Debts  | 2,35,481<br>5,000                   | 21<br>00       | 2 20 491           | 21       | 2,35,635<br>800                     | 11<br>61             | 2 24 924                          | <i>=</i> 0 |
| Gratuity Advance to Employees Prepaid Insurance  |                                     |                | 2,30,481           | 21       |                                     |                      | 2,34,834<br>16,138<br>1,085       | 72         |
| Cash: In Madras Banks on Current A/c. ,, London Bank ,, on hand ,,   | 80,013<br>4,503<br>4,921            | 12<br>67<br>26 | 89,438             | 05       | 62,347<br>6,268<br>2,446            | 94<br>03<br>40       | 71,062                            | 37         |
|  |                                     |                | 44,49,466          |          |                                     |                      | 44,56,668                         |            |

Examined and found correct as per the books and vouchers produced.

M. K. DANDEKER & CO.,

Chartered Accountants.

# FEES AND DUES RECEIVED DURING THE YEAR ENDED 30TH SEPTEMBER, 1963

|   |            |                 |     |          |      | 1962  | -'63 | 1961   | -'62 |
|---|------------|-----------------|-----|----------|------|-------|------|--------|------|
|   |            |                 |     |          |      | Rs.   | nP.  | Rs.    | nP.  |
| The Theosophical                        | Society in | ı U.S.A.        |     |          | *(a) |       |      | 10,666 | 28   |
| ,,                                      | ,,         | Mexico          | \$  | 110.00   |      | 521   | 12   | 473    | 41   |
| ,,                                      | ,,         | Colombia        |     |          | *(b) |       |      | 346    | 60   |
| ,,                                      | ,,,        | Venezuela       | \$  | 150.00   |      | 710   | 00   | 234    | 87   |
| ,,                                      | ,,         | Puerto Rico     |     |          |      |       |      | 117    | 75   |
| "                                       | ,,         | Argentina       |     |          |      |       |      | 46     | 70   |
| ,,                                      | ,,         | Canada          |     |          | *(c) |       |      | 507    | 34   |
| ,,                                      | ,,         | England         |     | 249-9-10 | 0    | 3,315 | 06   | 3,555  | 19   |
| ,,                                      | ,,         | Scotland        |     | 11-3-0   |      | 147   | 65   | 718    | 49   |
| ,,                                      | ,,         | Southern Africa | ı £ | 31-10-3  |      | 418   | 68   | 461    | 03   |
| >>                                      | 25         | Ireland         |     | 1-8-2    |      | 18    | 23   | 14     | 56   |
| ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | "          | Norway          |     | 5-0-0    |      | 65    | 94   | 73     | 09   |
| ,,                                      | 99         | West Africa     |     | 18-0-0   |      | 238   | 92   | 5      | 85   |
| **                                      | ,,         | N. Ireland      |     | 1-13-0   |      | 21    | 92   | 22     | 29   |
| **                                      | ,,         | Italy           |     | 16-18-9  |      | 222   | 93   | 109    | 27   |
| **                                      | 99         | Wales           | £   | 8-7-8    |      | 111   | 38   | 128    | 48   |
| **                                      | "          | Chile           |     |          |      |       |      | 494    | 73   |
| ,,                                      | ,,         | Sweden          |     |          |      |       |      | 229    | 79   |
| ,,                                      | ,,         | Iceland         |     | 21-2-4   |      | 280   | 60   | 255    | 82   |
| ,,                                      | ,,         | Australia       |     | 49-18-4  |      | 528   | 25   | 675    | 70   |
| "                                       | ,,         |                 |     | 63-16-8  |      | 840   | 20   | 872    | 10   |
| "                                       | >>         | Netherlands     | f.  | 1772.50  |      | 2,326 | 81   | 3,052  | 34   |
| "                                       | >>         | India           |     |          |      | 1,962 | 87   | 1,751  | 20   |
| 33                                      | "          | Switzerland     |     |          |      | 323   | 88   | 379    | 34   |
| 39                                      | ,,         | E. Africa       |     |          |      | 214   | 33   | 204    | 09   |
| 99                                      | ,,         | Finland         |     | 37-19-0  |      | 505   | 12   | 887    | 51   |
| ,,                                      | ,,         | Uruguay         |     | 20-0-0   |      | 265   | 25   | 156    | 13   |
| 55                                      | ,,         | Austria         | £   | 20-14-8  |      | 275   | 19   | 236    | 80   |
| "                                       | ,,         | France          |     |          |      | 1,558 | 48   | 100    | 00   |
| **                                      | ,,         | Denmark         |     |          |      |       |      | 119    | 80   |
| **                                      | ,,         | Cuba            | \$  | 100.00   |      | 473   | 15   |        |      |
| "                                       | ,,         | Belgium         |     |          |      | 302   | 21   |        |      |
| Canadian Federation                     | on         |                 |     |          |      | 203   | 00   | 170    | 40   |
| Non-Sectionalized                       | Lodges, et | c.              |     |          |      | 1,742 | 65   | 1,561  | 17   |
|   |            |                 |     |          | 1    | 7,593 | 82   | 28,628 | 12   |
|   |            |                 |     |          | -    |       |      |        |      |

Note: \* (a) Rs. 10,629-90 received on 14-10-'63. \* (b) Rs. 167-79 ,, 29-10-'63. \* (c) Rs. 496-59 ,, 23-10-'63.

#### FAITHFUL SERVICE FUND

# STATEMENT OF ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 30-9-1963

| DISBURSEMENTS |                         |                 | RECEIPTS                                     |                  |          |    |
|---------------|-------------------------|-----------------|--|------------------|----------|----|
| D-1           | Rs.<br>11,548<br>45,387 | nP.<br>00<br>59 | " Donations including Adyar Da<br>Allocation | 50,8<br>y<br>5,0 | 15<br>86 | 54 |
|               | 56,935                  | 59              | " Interest                                   | 1,0              | ~        | 59 |

# CONTRIBUTIONS TO THE PRESIDENT'S TRAVELLING FUND

#### RECEIVED FOR THE YEAR ENDED 30TH SEPTEMBER, 1963

|                              |           |      | Rs.   | nP. |
|------------------------------|-----------|------|-------|-----|
| The T.S. in England          | £ 50-0-0  | <br> | 664   | 36  |
| The T.S. in Scotland         | £ 9-3-0   | <br> | 120   | 90  |
| The T.S. in Sweden           | £ 6-17-4  | <br> | 90    | 73  |
| The T.S. in Netherlands      | f. 300.00 | <br> | 393   | 00  |
| Estate of Mrs. Emily Francis |           |      |       |     |
| Marie Teresa Bayly           | £ 50-0-0  | <br> | 664   | 36  |
| Mr. Russell Bailey           | \$ 153.00 | <br> | 717   | 45  |
| Rewa Lodge, Baroda           |           | <br> | 100   | 00  |
| Sanathan Lodge, Surat        |           | <br> | 90    | 00  |
| Vellore Lodge                |           | <br> | 35    | 00  |
| Mr. S.T. Kaliappan           |           | <br> | 10    | 00  |
| Mr. S. H. Vaswani            |           | <br> | 5     | 00  |
|                              |           |      | 2,890 | 80  |

# THE T.S. HEADQUARTERS, ADYAR, BUDGET FOR 1963-64

| EXPENSE   | Budget<br>for<br>1962-'63 | Actuals<br>for<br>1962-'63 | Budget<br>for<br>1963-'64 | INCOME                       | Budget<br>for<br>1962-'63 | Actuals<br>for<br>1962-'63 | Budget<br>for<br>1963-'64 |
|---|---------------------------|----------------------------|---------------------------|------------------------------|---------------------------|----------------------------|---------------------------|
| Establishment—Salaries                          | Rs.                       | Rs.                        | Rs.                       |                              | Rs.                       | Rs.                        | Rs.                       |
| and Wages                                       | 42,000                    | 44,029                     | 50,000                    | Rent                         | 55,000                    | 58,362                     | 56,000                    |
| Repairs and Renewals                            | 70,000                    | 69,894                     |                           | Fees and Dues                | 28,000                    | 17,593                     | 28,000                    |
| Light and Water Miscellaneous                   | 7,500<br>12,000           | 8,612<br>15,874            |                           | Wood<br>Interest (Gross)     | 1,000                     | 3,048                      | 1,000                     |
| Postages, Telegrams and                         | 12,000                    | 13,074                     | 14,000                    | Administration               | 1,15,000                  | 1,00,326                   | 1,00,000                  |
| Telephone                                       | 3,000                     | 2,494                      | 2,500                     | Charges                      | 8,130                     | 8,130                      | 4,000                     |
| Printing and Stationery Publications to General | 6,000                     | 6,765                      | 6,700                     | Constal Donaton to           |                           |                            |                           |
| Secretaries                                     | 700                       | 701                        | 700                       | Special Departments:         |                           |                            |                           |
| Taxes   | 16,000                    | 16,411                     | 16,500                    | Bhojanasala ,                | 14,100                    | 15,482                     | 16,000                    |
| Convention                                      | 4,500                     | 1,418                      | 2,000                     | Engineering                  | ,                         | 10,102                     |                           |
| Museum and Archives Interest on Funds and       | 3,500                     | 3,932                      | 4,000                     | Department                   | 1,62,800                  | 1,05,767                   | 1,10,500                  |
| Accounts  | 11,000                    | 9,840                      | 11,000                    | Garden Department<br>Laundry | 66,500<br>7,000           | 63,569<br>6,166            | 57,000<br>6,000           |
| Retirement Allowance and                        |                           |                            |                           | Leadbeater Chambers          | 22,800                    | 21,036                     | 21,000                    |
| Gratuities                                      |                           | 8,800                      | 8,000                     | Sanitary Department          | 1,200                     | 1,410                      | 1,200                     |
| Contributions:                                  |                           |                            |                           | Vasanta Press                | 1,70,900                  | 1,79,334                   | 1,61,000                  |
|   |                           |                            |                           | Donations                    |                           | 24,225                     |                           |
| To Adyar Library                                | 5,000                     | 5,000                      | 5,000                     | Deficit                      | 69,260                    | 89,130                     | 1,29,300                  |
| " President's Travelling                        | 6,600                     | 6,600                      | 6,600                     |                              |                           |                            |                           |
| " School of the Wisdom.                         | 3,000                     | 3,000                      |                           |                              |                           |                            |                           |
| Special Departments:                            |                           |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
| Bhojanasala                                     |                           |                            | 20,000                    |                              |                           |                            |                           |
| Dispensary                                      |                           |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
| Engineering Department Garden Department        | 72 (00                    |                            | 1,32,500<br>61,000        |                              |                           |                            |                           |
| Laundry   | 0,000                     |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
| Leadbeater Chambers                             | 24 000                    | 24,473                     | 22,000                    |                              |                           |                            |                           |
| Sanitary Department                             |                           |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
| Vasanta Press<br>Watch and Ward                 | 22 000                    | 1,79,423                   |                           |                              |                           |                            |                           |
| Commemorative Stamp                             | 23,000                    | 21,889                     | 22,500                    |                              |                           |                            |                           |
| Function  |                           | 329                        |                           |                              |                           |                            |                           |
| Depreciation                                    | 29,000                    | 28,760                     | 29,000                    |                              |                           |                            |                           |
| Capital Expenditure:                            |                           |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
|   |                           |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
| Vasanta Press 28,000                            |                           |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
| Engineering Department 10,000                   |                           |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
| Rs. 38,000                                      |                           |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
| province and annual                             |                           |                            |                           |                              |                           |                            |                           |
|   | 7,21,690                  | 6,93,578                   | 6,91,000                  |                              | 7,21,690                  | 6,93,578                   | 6,91,000                  |

ADYAR
14th December 1963

For The Theosophical Society, S. SOMASUNDARAM, Hony. Treasurer

# DETAILS OF A. B. C. FUND INVESTMENTS

## Particulars

|     |                   |  |              |   | Amount    |
|-----|-------------------|--|--------------|---|-----------|
| No. |                   |  |              |   | Rs.       |
| 1.  | 3%                | Conversion Loan 1986                   |              |   | 2,60,200  |
| 2.  | 4%                | Loan 1980-90                           |              |   | 1,13,900  |
| 3.  | 3%                | First Development Loan 1970-75         |              |   | 80,000    |
| 4.  | $3\frac{3}{4}\%$  | National Plan Loan 1974                |              |   | 60,000    |
| 5.  | 31%               | National Plan Loan 1967                |              |   | 52,000    |
| 6.  | $4\frac{1}{4}\%$  | Madras Loan 1972                       |              |   | 10,000    |
| 7.  | $4\frac{1}{2}\%$  | Madras Land Mortgage Bank Debentu      | re 1969-76   |   | 1,00,000  |
| 8.  |                   | do                                     | 1970-80      |   | 19,000    |
| 9.  |                   | do                                     | 1966-73      |   | 25,000    |
| 10. | $4\frac{1}{2}\%$  | Andhra Land Mortgage Bank 1971-76      |              |   | 30,000    |
| 11. | $4\frac{1}{4}\%$  | Andhra Land Mortgage Bank              |              |   | 20,000    |
| 12. | 4%                | do                                     |              |   | 25,000    |
| 13. | $4\frac{1}{4}\%$  | do                                     |              |   | 1,00,000  |
| 14. | $4\tfrac{1}{2}\%$ | do                                     |              |   | 1,00,000  |
| 15. | $4\frac{1}{2}\%$  | do                                     |              |   | 20,100    |
| 16. | 4%                | Mysore Land Mortgage Bank              |              |   | 15,000    |
| 17. |                   | Madras Industrial Investment Corpora   | tion Deposit |   | 83,000    |
| 18. |                   | do                                     |              |   | 1,00,000  |
| 19. |                   | do                                     |              |   | 1,00,000  |
| 20. |                   | do                                     |              |   | 50,000    |
| 21. |                   | 12 year National Savings Certificates  |              |   | 89,400    |
| 22. |                   | Treasury Savings Deposit Certificates  |              |   | 38,000    |
| 23. | 4%                | Funding Stock (Sterling) 1970, £ 11,29 | 7            |   | 1,50,640  |
|     |                   |  |              | _ |           |
|     |                   |  |              |   | 16,41,240 |
|     |                   |  |              | - |           |

THE ADYAR

#### PUBLICATIONS ACCOUNT FOR THE

| Expense  |  | F   | reviou | is Year        |          | Current Year |     |               |    |  |
|--|--|-----|--------|----------------|----------|--------------|-----|---------------|----|--|
| To Opening Stock of Publications   |  | Rs. | nP.    | Rs. 22,110     |          | Rs.          | nP. | Rs.<br>21,667 |    |  |
| " Cost of Publications: Including Brahma Vidya " Cost of Brahma Vidya Jubilee Number |  |     |        | 5,195<br>6,669 | 51<br>75 |              |     | 8,656         | 67 |  |
| " Surplus Income carried to Income and Expense Account                               |  |     |        | 1,462          | 58       |              |     | 9,843         | 64 |  |
|  |  |     |        | 35,438         | 08       |              |     | 40,168        | 09 |  |

#### INCOME AND EXPENSE ACCOUNT FOR THE

| Exi                           | Previo<br>Year |         | Current<br>Year |     |        |    |
|-------------------------------|----------------|---------|-----------------|-----|--------|----|
|                               |                |         | Rs.             | nP. | Rs.    | nP |
| To Salaries and Wages         |                | <br>    | 26,520          | 10  | 26,168 | 99 |
| " Repairs, Lighting and Conse | rvancy         | <br>••• | 1,102           | 38  | 979    | 92 |
| ,, Postages                   |                | <br>    | 946             | 56  | 582    | 2  |
| ,, Printing and Stationery    |                | <br>    | 2,611           | 74  | 744    | 42 |
| ,, Fire Insurance             |                | <br>    | 123             | 19  | 117    | 4  |
| " Miscellaneous               | •••            | <br>••• | 2,336           | 64  | 1,254  | 14 |
| ,, Depreciation               | •••            | <br>    | 846             | 33  | 2,207  | 19 |
| " Reserve for Gratuities      |                | <br>    | 1,500           | 00  | 1,500  | 0  |
| " War Risk Insurance          | •••            | <br>••• |                 |     | 176    | 0  |
|                               |                |         | 35,986          | 94  | 33,730 | 3  |

ADYAR
14th December, 1963

For The Theosophical Society,
S. SOMASUNDARAM,
Hony. Treasurer.

LIBRARY
YEAR ENDED 30TH SEPTEMBER, 1963

| Income  |  |  | Previous Year Current |          |        |     |                  | ent Year | t Year |    |
|---|--|--|-----------------------|----------|--------|-----|------------------|----------|--------|----|
|   |  |  | Rs.                   | nP.      | Rs.    | nP. | Rs.              | nP.      | Rs.    | nP |
| By Sale of Publications:<br>Including Brahma Vidya      |  |  |                       |          | 13,770 | 30  |                  |          | 16,202 | 72 |
| " Closing Stock of Publications Less Value written down |  |  | 43,335<br>21,667      | 55<br>77 | 21,667 | 78  | 47,930<br>23,965 |          | 23,965 | 37 |
|   |  |  |                       |          | 35,438 | 08  |                  |          | 40,168 | 09 |

## YEAR ENDED 30TH SEPTEMBER, 1963

| INCOME  | Previous<br>Year |           |  |  |  |
|---|------------------|-----------|--|--|--|
|   | Rs. nP.          | Rs. nP.   |  |  |  |
| By Surplus Income carried from Publications Account   | 1,462 58         | 9,843 64  |  |  |  |
| " T.S. Contribution   | 5,000 00         | 5,000 00  |  |  |  |
| " Adyar Day Allocation and Other Donations …  | 4,328 20         | 3,472 55  |  |  |  |
| "Interest on Endowment Fund and Building Fund …   | 7,685 47         | 6,727 64  |  |  |  |
| " Miscellaneous Receipts  | 1,720 15         | 1,945 50  |  |  |  |
| ", Central Government Grant for Catalogues of Manuscripts ", Central Government Grant for Publication of Rare | 842 00           |           |  |  |  |
| Manuscripts   | 5,000 00         | •••       |  |  |  |
|   | 26,038 40        | 26,989 33 |  |  |  |
| " Excess of Expense over Income   | 9,948 54         | 6,740 98  |  |  |  |
|   | 35,986 94        | 33,730 31 |  |  |  |

Examined and found correct,
M. K. DANDEKER & CO.,
Chartered Accountants.

#### BALANCE SHEET AS AT

| LIABILITIES  |       | Prev              | ious     | Year     |     |                   | Curre    | rent Year |    |  |  |  |
|--|-------|-------------------|----------|----------|-----|-------------------|----------|-----------|----|--|--|--|
|  |       | Rs.               | nP.      | Rs.      | nP. | Rs.               | nP.      | Rs.       | nP |  |  |  |
| Endowment Fund: As per last Balance Sheet Add Donations Received                               |       | 78,381            | 38       |          |     | 60,605<br>13,038  | 57<br>50 |           |    |  |  |  |
| Add Capital Receipts   |       | 78,381            | 38       |          |     | 73,644<br>400     | 07<br>00 |           |    |  |  |  |
| Less Capital Expenses Furniture, Manuscripts, Books and Customs Duty on Microfilming           |       | 78,381            | 38       |          |     | 74,044            | 07       |           |    |  |  |  |
| Equip.   | •••   | 7,827             | 11       |          |     | 72,037            | 21<br>86 |           |    |  |  |  |
| Less Excess of Expense over Income Capital Fund:   |       | 9,948             | 54       | 60,605   | 57  | 6,740             | 98       | 65,296    | 88 |  |  |  |
| As per last Balance Sheet  Add Transfer from Endowment Fund  Add Value of Microfilming Equipme |       | 1,91,179<br>7,827 | 49 27    |          |     | 2,20,998<br>1,606 | 06<br>21 |           |    |  |  |  |
| gifted during the year  Building Fund:   | •••   | 21,991            | 30       | 2,20,998 | 06  |                   |          | 2,22,604  | 27 |  |  |  |
| (i) Fixed Property: Value of Building As per last Balance Sheet                                |       | 50,000            | 00       |          |     | 50,000            | 00       |           |    |  |  |  |
| Less Depreciation to date  (ii) Other Donations: As per last Balance Sheet                     | •••   | 2,000             | 00       | 48,000   | 00  | 3,000             | 00       | 47,000    | 00 |  |  |  |
| Add Received during the year   |       | 2,00,895<br>5,577 | 80 42    | 2,06,473 | 22  | 2,06,473<br>3,153 | 62       | 2,09,626  | 84 |  |  |  |
| Add-A-Brick Fund: As per last Balance Sheet Add Donations received during the year             | <br>r | 33,931<br>8,535   | 50<br>27 | 42,466   | 77  | 42,466<br>648     | 77<br>75 | 43,115    | 52 |  |  |  |
|  |       |                   |          | 42,400   | ,,  |                   |          | 43,113    | 34 |  |  |  |
|  |       |                   |          |          |     |                   |          |           |    |  |  |  |
|  |       |                   |          |          |     |                   |          |           |    |  |  |  |
|  |       |                   |          |          |     |                   |          |           |    |  |  |  |
|  |       |                   |          |          |     |                   |          |           |    |  |  |  |
|  | C/o   |                   |          | 5,78,543 | 62  |                   |          | 5,87,643  | 51 |  |  |  |

30TH SEPTEMBER, 1963

| Assets  | Previous Year |                    |           | Current Year |     |                    |                 |                |     |
|---|---------------|--------------------|-----------|--------------|-----|--------------------|-----------------|----------------|-----|
| Manuscripts and Books: As per last Balance Sheet Add Additions  |               | Rs. 1,52,898 2,753 | nP. 75 31 | Rs.          | nP. | Rs. 1,55,652 1,516 | nP.<br>06<br>61 | Rs.            | nP. |
| Movable Property at Juhu: Value of house property gifted As per last Balance Sheet Less Depreciation up-to-date |               | 50,000 2,000       | 00        | 48,000       | 00  | 50,000<br>3,000    | 00              | 47,000         | 00  |
| Microfilming Equipment: Value of Microfilming Equipment gifted As per last Balance Sheet Add Customs Duty paid  |               | 21,991<br>12,759   | 30<br>96  | 40,000       | 00  | 25,751             | 26              | 47,000         | 00  |
| Less Refund of Customs Duty by<br>Central Government  |               | 34,751<br>9,000    | 26        | 25,751       | 26  | 25,751             | 26              |                |     |
| Less Depreciation  Furniture: At Cost As per last Balance Sheet Add Purchases                                   |               | 33,855<br>1,314    | 88<br>00  |              |     | 35,169             | 26              | 24,464         | 4 0 |
| Less Sales  |               | 35,169             | 88        |              |     | 35,169<br>400      | 88              |                |     |
| Less Depreciation up-to-date  |               | 35,169<br>10,234   | 88<br>54  | 24,935       | 34  | 34,769<br>11,080   | 88 87           | 23,689         | 9 0 |
| Furnishings: Less Depreciation  |               |                    |           |              |     | 489                | 60              | 416            |     |
| Advances: Prepaid Fire Insurance For Gratuity Deepavali Advance   |               | 82                 | 14        | 82           | 14  | 70<br>2,445<br>4   | 60<br>06<br>50  | 6,153<br>2,520 |     |
| Deposits: With the Theosophical Society   |               |                    |           | 3,15,104     | 55  |                    |                 | 3,16,945       | 36  |
| Stock on hand: Publications Insecticides, etc.  |               | 21,667<br>3,995    | 78<br>00  | 25,662       | 78  | 23,965<br>3,797    | 37<br>00        | 27,762         | 37  |
| Cash on hand:   |               |                    |           | 70           | 00  |                    |                 | 71             | 50  |
|   | C/o           |                    |           | 5,95,258     | 13  |                    |                 | 6,06,190       | 07  |

| LIABILITIES   | Previous Year |              |     | Current Year |     |              |          |          |    |
|---|---------------|--------------|-----|--------------|-----|--------------|----------|----------|----|
|   |               | Rs.          | nP. | Rs.          | nP. | Rs.          | nP.      | Rs.      | nP |
|   | B/f           |              |     | 5,78,543     | 62  |              |          | 5,87,643 | 51 |
| Discretionary Fund:<br>As per last Balance Sheet      |               |              |     | 684          | 97  |              |          | 684      | 97 |
| Gratuities Reserve: As per last Balance Sheet         | •••           | 12,170       | 59  |              |     | 13,670       | 59       |          |    |
| Add Provisions for the year                           |               | 1,500        | 00  | 13,670       | 59  | 1,500        | 00       | 15,170   | 59 |
|   |               |              |     |              |     |              |          |          |    |
| Book Deposits: As per last Balance Sheet Add Receipts | :::           | 2,011<br>480 | 00  |              |     | 2,351<br>440 | 00<br>00 |          |    |
| Less Refunds  |               | 2,491<br>140 | 00  | 2,351        | 00  | 2,791<br>300 | 00       | 2,491    | 00 |
| Advances:<br>Suspense<br>Sundry Creditors             |               |              |     | 7            | 95  |              |          | 200      | 00 |
|   |               |              |     |              |     |              |          |          |    |
|   |               |              |     |              |     |              |          |          |    |
|   |               |              |     |              |     |              |          |          |    |
|   |               |              |     |              |     |              |          |          |    |
|   |               |              |     |              |     |              |          |          |    |
|   |               |              |     | 5,95,258     | 13  |              | -        | 6,06,190 | 07 |

ADYAR
14th December, 1963

For The Theosophical Society, S. SOMASUNDARAM, Hony. Treasurer.

| Assets         | Previ   | ous Year            | Current Year |             |  |  |
|----------------|---------|---------------------|--------------|-------------|--|--|
| $\mathrm{B/f}$ | Rs. nP. | Rs. nP. 5,95,258 13 | Rs. nP.      | Rs. nP.     |  |  |
|                |         |                     |              |             |  |  |
|                |         |                     |              |             |  |  |
|                |         | ,                   |              |             |  |  |
|                |         |                     |              |             |  |  |
|                |         |                     |              |             |  |  |
|                |         | 5,95,258 13         |              | 6,06,190 07 |  |  |

Examined and found correct,
M. K. DANDEKER & CO.,
Chartered Accountants

# THE ADYAR LIBRARY

# BUDGET ESTIMATE—INCOME AND EXPENSE ACCOUNT FOR 1963-64

| EXPENSE  |     | Actuals<br>for<br>1962-63                                  | Budget<br>for<br>1963-64  | INCOME   | Actuals<br>for<br>1962-63           | Budget<br>for<br>1963-64                                    |
|--|-----|--|---|--|-------------------------------------|---|
| To Salaries and Wages  |     | Rs.  | Rs.   | D. T.G. Cont. Tout   | Rs.                                 | Rs.   |
| , Repairs, Lighting and Conservancy , Postages , Printing and Stationery , Fire Insurance , Miscellaneous , Depreciation , War Risk Insurance , Reserve for Gratuities |     | 980<br>582<br>744<br>117<br>1,254<br>2,207<br>176<br>1,500 | 27,000<br>1,200<br>1,000<br>1,000<br>150<br>1,500<br>2,500<br><br>1,500 | By T.S. Contribution " Donations including Adyar Day Allocation " Interest on Endowments " Miscellaneous Receipts " Publications Account " Central Government Grant for Publications " Excess of Expense over Income | 5,000 3,472 6,728 1,946 9,842 6,740 | 5,000<br>3,000<br>7,000<br>1,500<br>4,500<br>7,500<br>7,350 |
| CAPITAL EXPENDITUR   | Е   |  |   |  | 33,720                              |   |
| " Purchase of Books, Manuscripts and Journals … Furniture, etc   |     | 1,516.61<br>489.60   | 1,000<br>1,000  |  |                                     |   |
|  |     | 2,006.21   | 2,000   |  |                                     |   |
| PUBLICATIONS   |     |  | -   |  |                                     |   |
| Other Publications   | ::: |  | 6,000<br>10,500   |  |                                     |   |
|  |     |  | 16,500  |  |                                     |   |

SEETHA NEELAKANTAN, Librarian.

# REPORTS OF THE GENERAL SECRETARIES OF THE NATIONAL SOCIETIES, OF FEDERATION SECRETARIES, AND OF PRESIDENTIAL AGENTS

These reports in some instances have been translated into English, edited or condensed in the office of the Recording Secretary.

#### THE UNITED STATES OF AMERICA

Much has happened since 1960, when this Administration began. One might sum up briefly that *change* has been the keynote that has prevailed, and it will continue to be the keynote.

During the last year the efforts have been directed toward an emphasis on study. Exploring more deeply the basic concepts of the esoteric philosophy has been stressed. The need in the Section is for members to become students and to implement the existing dedication to truth by vigorous training for leadership and the ability to present Theosophy. The summer of fulfilment of our Society depends on these efforts. We have the potential resources and the capacities among our members to make progress in the Society. We need to direct them in a total combined effort.

To bring this about, we are making great efforts. Workshops have been increased. Research projects are being organized. Emphasis has been placed on exploring the "roots" of Theosophy. Workers on the staff have the benefit of the Institute studies, with the hopes of broadening the scope of these studies as time goes on.

General Outlook of the Section.—The situation that has persisted for years may still be noted. There are still structural weaknesses in many Lodges, with problems of inadequacy in leadership, ineffectiveness in the presentation of Theosophy and, in some instances, even a general apathy. There is some improvement, however. There are still many branches that are vital, well organized, have excellent programs, and show progressive methods of presentation. A new spirit is in

evidence, with new hope and a new outlook. The deep, underlying vitality inherent in our philosophy shows a greater dynamism in more areas. One can observe an upturn and can be assured that the picture is becoming more hopeful. Our Regional Expansion workers and the workshop seminars are training the members in better public relations. This is evidenced by the fine notices that the speakers receive in local newspapers. There is still much to be done.

The Board of Directors, the officers of the Society, and the workers are studying carefully the great needs of our Section and wisely directing and advising on changes for improvement. They feel that there is a great need to present Theosophy in the framework of modern culture and are initiating activities to bring this about. However, the total effort of the membership will be required to reach the goal we have set for ourselves.

It must be reported that there is still a sense of authority prevailing among some members. This is true of special groups who, in attempting to discipline their own lives, project discipline unwisely and harmfully on the membership at large. In some areas, also, there is a pathetic confusion of Theosophy, Church, Masonry, and other rituals. The Society charters a Lodge only for Theosophy and Theosophical teachings. The sure way to avoid confusion is to dedicate your premises solely to Theosophy.

Field Work.—Considerable field work was carried out this year. Forty-three lectures were given in the fall by Dr. and Mrs. Laurence J. Bendit. They travelled throughout the west coast and the

Wyoming and Colorado areas. They were able to pay a courtesy visit to British Columbia and gave four lectures there. They assisted and lectured at the National Theosophical Conference in Atlanta.

The National President toured through the Michigan Federation, the North-East and Middle Atlantic Federations, the Ohio Federation, and attended the National Conference in Atlanta. He also lectured in the Chicago area.

. The National Vice-President toured and lectured in the Gulf Coast Federation in the fall and, in the spring, she lectured along the entire west coast, including the Southern and Northern California and North-West Federations. Before returning to Olcott, she delivered lectures in Vancouver, British Columbia, and in Minneapolis. She conducted workshops in three areas on this tour.

Mr. Samuel H. Wylie lectured in Texas in connection with his Regional Expansion Program there. In addition to the Regional Expansion work, he lectured in the Central District and especially for the Mid-West Federation.

Mrs. Mattie Louise Moore, in addition to the Regional Expansion Programs which she carried on, lectured in adjacent areas to members as well as to the public.

A series of 12 lectures to members and to the public were given by Dr. Gordon Plummer in the west and south-west areas. Dr. Plummer was on tour from England to Southern California and offered his services to the Society.

All these lectures were very successful. The interest of the public in Theosophical concepts is greater than ever. It is important to evaluate this phase of the Society's work and anticipate other approaches to the public.

Regional Expansion Programs.—The Regional Expansion Programs this year were conducted by Mrs. Mattie Louise

Moore and Mr. Samuel H. Wylie. This work was carried on in three Federations and in each case proved very effective. Associated with these programs were workshop training sessions for members in the various areas, the purpose being to train them as effective Theosophical workers.

Mrs. Moore conducted a program in the Mid-West Federation, visiting Kansas City, Des Moines, Lincoln, and Omaha. There was excellent publicity, a new Lodge was formed, and each of the groups which she visited was strengthened; a considerable number of new members joined as a result of this effort. In the spring of the year, she conducted a Regional Expansion Program in five cities in the Michigan Federation. The result was equally encouraging. There was a strengthening of each of the centres and a considerable increase in interest and in membership throughout the area.

Mr. Wylie conducted a Regional Expansion Program in the Texas Federation, with classes in Dallas, Fort Worth, Austin, and San Antonio. In addition to this, he did some special lecturing in near-by Lodges in the Texas area and also presented a workshop for the training of workers in that area. Again we must report that in each case Lodges benefited considerably from these efforts, and new members resulted from the work.

This is an indication that this type of program has been well received and well conducted, and the results have indeed been heartening.

National Theosophical Conferences.— In November the National Theosophical Conference was held in Atlanta, Georgia. The guest speakers were Dr. and Mrs. Laurence Bendit. The National President also gave an address. The conference theme was "Theosophy Explores Human Affairs". This probably was the smallest conference that we have had to date. However, the programs were very successful and much appreciated by those who attended.

The purpose of such conferences has been to bring to the members in local areas activities similar to those of our Annual Convention and Summer School at Headquarters and to help strengthen the local work. This has been done fairly successfully for eight consecutive vears. After studying the results and the cost of such conferences, the Board of Directors decided to suspend the activity at least for the time being. While there is no question that in the local areas they are a definite stimulus, it is hoped that we may rather concentrate more on Federation conventions, implementing them with national speakers and thus discontinue the expense of National Conferences.

This year, therefore, there will be no National Conference. However, considerable interest has been aroused in an Inter-American Congress suggested by the General Secretary of the Mexican Section, who has offered to be host. The Board of Directors has decided to co-operate with this effort, and so this fall, at the time when we would ordinarily be holding a National Conference, we shall participate in an Inter-American Congress in Mexico City. This meeting should be a great help in stimulating interest in a united front in Theosophy and, of course, in a united effort in forming a nucleus of universal brotherhood.

Library Addition.—At our 1961 Convention a resolution approving the building of a new addition to our library was passed. The resolution included provision for the excavation under the old library to link it up with the rest of the basement and provide space for the library and for Press facilities.

The project has now been completed, and we now have a very beautiful and adequate addition to the library which will allow for considerable expansion in the future. Conference rooms have been included in the construction. A microfilm vault also was built, since it is probable that microfilms of the entire Adyar Library will be stored and utilized here.

The new addition is the outgrowth of a legacy to the Society many years ago which was earmarked for the purpose of library expansion. This legacy was from James Arnott and amounted to \$51,000. It was placed in the Reserve Funds and bore interest and appreciated in capital gains from investment through the years.

The original bid for the construction of this addition was approximately \$79,000. A revised contract came to \$83,000. During the process of building, it was found that some structural problems had to be dealt with, which increased the cost still more. Also, a room was remodelled for a much needed sound-proof audio room, which required some additional adjustments of space. Thus the cost of the entire construction was considerably higher than anticipated; the capital investment for the library addition, the revisions of the old structure, the audio room, some basement changes, and the microfilm vault, amounted to approximately \$94,000.

These facilities should have a farreaching effect, since we can now develop the library according to the policies that had previously been set up for it, to make this an outstanding library of Theosophy, religion, philosophy, and such aspects of science as relate themselves to philosophy.

Department of Education and Research.

—This department has continued under the efficient direction of Miss Joy Mills. Due to changes and loss of personnel, as well as the call of many duties outside the department, there has been somewhat less activity than in previous years.

The department attended to all of the routine demands made upon it, meeting

the needs of the Lodges with program material and programming. It also supplied personnel for the lecture field, an assistant editor, someone to head the Department of Information, and someone to supervise the construction of the library in the absence of the construction supervisor, Mr. George Linton, and the National President. The responsibilities and functions of this department were carried out efficiently as well as were the additional duties imposed on the personnel.

Program for New Members. The extension of the services of the Department of Education to include a program for new members has finally been realized. This program has been inaugurated and developed under the leadership of Mrs. Virginia Hanson. A series of letters leading the new member into an understanding and deeper study of Theosophy has been developed. These are sent monthly to new members for a period of two years, guiding their studies and helping them to maintain a steady contact with the Headquarters.

Audio-Visual Aids.—Tape recorded lectures are also made available through the department. Eighty-three tape lectures are available, of which 37 may be shared with the public and 46 with members. One hundred and forty-two tapes were borrowed during the year. Likewise, tape-visuals and 20 sets of slides were utilized about 50 times during the year. Soon there will be available a series of 15- to 20-minute tape lectures designed for study and discussion. Some of these are prepared for the study of The Secret Doctrine. Introductory discussion talks for inquirers' classes are now being prepared. Members of the Section have contributed generously to this program. The new audio-visual room will facilitate the production and reproduction of tapes.

Supplemental Program Material.—A wide range of study material is made

available to members, study groups, and Lodges. The material covers all levels of approach, including "Guides in Lodge Study," "The Life Process," and other such material as may be fitting for the needs of special groups or individuals. Pamphlets describing techniques of group work and research are available, as well as charts and diagrams relating to various subjects.

Workshop Seminars.—The annual workshop was held from March 25 through April 4. Twelve members participated. They represented training for workers for nine Lodges in the Section. They received a worker's training course as well as training in speaking and leadership in general.

Short workshop sessions were held in Southern and Northern California. The attendance and interest in these workshops indicate a great need for them.

Aims of the Department of Education .-In addition to the development of tape lecture series for discussion groups, now under way in the department, there are a number of other projected programs which, it is hoped, will increase the usefulness of the department in meeting the needs of Lodges and members. Among these is the development of bibliographies on a variety of topics, which could serve as reading guides for study programs. Such bibliographies would also be useful in stimulating research efforts in various directions and could provide the basis for initial reading in fields related to Theosophical study. Along these lines, a bibliography on depth psychology has already been prepared and made available to members interested in this field.

Department of Research.—Some years ago research was carried on privately, and largely under the direction of Mr. F. L. Kunz and Mrs. Emily Sellon, but the demands for increased activity in this department are such that it is necessary

to plan an effective program for the future for the whole Section.

Last year the foundation work was carried on by Dr. Laurence Bendit. This year re-organization of the department is under the National President's supervision. Research has several purposes. First, there is a profound need for greater study and exploration of Theosophical concepts so that our Theosophical knowledge may be advanced. Another reason for Theosophical research is the fact that Theosophy needs to be expressed in the cultural mode of today and therefore it is necessary not only to study the concepts of Theosophy but also to study these concepts as related to scientific discoveries and cultural progress.

This department is now being organized with members from all over the Section and we hope, during Summer School, to have a series of meetings in which specific organization in various aspects of research can take place.

Through such a department a greater amount of literature should be made available through our magazine, or in pamphlet form, or even in books. Many papers on various subjects should result from this effort.

One project that was carried on very effectively last year was accomplished by Dr. Bendit and resulted in the publication of the book *Key Words of the Wisdom Tradition*. This should be only a beginning of a very productive effort put forth by all members who will co-operate in research.

Mr. Kunz will continue his work on a comprehensive Theosophical Glossary and intends to solicit help on this project on an international basis.

Department of Information.—The Department of Information has operated under the able management of Mrs. Beatrice Boroff and, more recently—and equally capably—under Mrs. Grace

Moore. This department reports that over 8,000 mailings were made. There were 1,685 inquirers, which is a considerable increase over the year 1962. This increase may be in part due to the program of advertising Theosophical books in magazines which was carried on by the Society during the year. The department has kept in touch with those who have made inquiries, and responses were followed up. The Society's membership was increased by 44 through this department.

The Theosophical Press.—For the first seven months of the year, Miss Lola Fauser was Manager of the Press and, after being drafted for the library, she was succeeded by Mr. Edwin Lord. Because of his business ability and background, we are very fortunate to secure the services of Mr. Lord. He is very capably assisted by Miss Clarice Richie and Miss Marie Minor, and also by Mr. Charles Sass in the shipping department.

The Press inventory at the present time stands at approximately \$53,000, which is an increase of about \$13,000 over last year. This is due to new books that have been published and added to the inventory and the transfer of considerable stock which was formerly charged to the National Section. Sales for the year amounted to approximately \$37,834.00, and the net profit will be about \$1,000.

An analysis of the sales shows that approximately one-third were to Lodges directly, one-fourth to dealers, and about 40 per cent were sold retail. This reflects itself in the profits as 30 per cent from the Lodges, 20 per cent from dealers, and 50 per cent from retail sales.

The total number of books sold as a result of the two advertising campaigns was 631. The Press reports that 5,179 orders were filled and 38,000 pamphlets were shipped.

The policy which regulates the Theosophical Press is determined by the Board of Directors and the Executive Committee in consultation with the head of the Press.

Library.—The national library was under the capable supervision of Mrs. Marian Bateman during the first half of the year, after which we were fortunate to secure the valuable services of Miss Lola Fauser. She has been ably assisted by Mrs. Aldona Sirohi and Mrs. Iris White.

During the course of the year, the library has been moved into the new addition which now will serve not only for the purpose of study, but will also provide for conference rooms and for seminars and discussion groups.

During the year, more than 3,000 books were issued. New books accessioned during the year through purchase and gifts total 430.

Repair and rebinding of old and valuable books has been continued in the capable hands of Mrs. Iris White. This is a remarkable service to the National Headquarters, and would be prohibitive if done elsewhere under present labor costs.

The library sends out reading lists covering some 21 subjects. Nearly 600 of these lists were dispersed during the year. All new members of The Theosophical Society in America are contacted with information on the use of the library and are encouraged to avail themselves of its resources for study.

Membership Department.—The Membership Department is under the capable management of Mrs. Margery Parks and her assistant, Mrs. Beatrice Boroff. This department has maintained a fine degree of efficiency for many years. Aside from handling the enormous details of membership data and statistics, it takes care of all special mailings, including the mailing of *The American Theosophist*.

For a number of years we have been vitally concerned with the fluctuations in membership which have occurred from time to time. Recently these have been minor, but in the past two years the membership has slightly decreased. The Board of Directors is spending considerable time in studying this problem and trying to bring about effective changes to reverse the trend.

In analyzing the possible causes of loss of membership, there are of course many that may be considered. There has been an orthodoxy established in the Society in the last 60 years which now is fortunately beginning to show signs of disappearing. There has been a lag in the efforts of our members to study, and this will definitely reflect itself into the membership and will attract fewer people. Also, recent years have seen the development of great diversions such as the radio. television and the automobile, which keep many people from going to lectures. In enumerating other possible causes, we must remember that our workers' training in the past has been inadequate, not only from the viewpoint of the Administration, but also from the viewpoint of the willingness of the workers to receive it. And, finally, there has been a lack of adequate public relations. These defects are being corrected.

In a world in which Theosophical concepts are much more readily accepted than ever before, we must devise new means of presenting our philosophy.

We have undertaken more arduous efforts in developing study groups and workers' training. We have, in all workshops, stressed the importance and developed techniques of public relations which have been adopted by many Lodges. Public relations, particularly with newspapers, are much better than they have been at any time. It is necessary for us to consider and to develop more research

projects in radio presentation and to investigate thoroughly the possibilities of pre-recorded television programs.

Our membership as of June 30 stood at 4,292. This was a loss of 28 members over last year. During the year, 336 new members were admitted. This was an increase of five over the previous year. Three hundred and forty members became inactive during the year; 326 became inactive during the previous year. Four were transferred to other Sections; 39 resigned, and there were 78 deaths.

There are, at the present time, 143 active Lodges, five official study centres, and a number of unofficial ones. One Lodge was dissolved because of inactivity, and three were dissolved for the purpose of merging with other Lodges.

Financial.—Our budget for the year 1963 estimated a deficit of \$35,092; the actual deficit was \$37,335. There are several reasons for the difference. There was a decrease of income in certain departments, as well as an increase in expenses. A factor that must be considered is the increasing cost of labor and materials.

During the year there were no outright bequests to the Society except as follows: There was an income of over \$10,000 from the H. H. Mason Trust. This Trust will exhaust itself within a few years. Upon the death of Mr. Herbert Kern, an annuity of \$21,000 was assigned to the Society, bringing in approximately \$790 a month. This will exhaust itself in less than two years.

The Membership Endowment Fund has been steadily growing. There are now 149 members who have participated in this program; 113 have paid in full; 36 are paying on a time basis. The total amount of endowment from this source now stands at approximately \$39,700. There was an increase of approximately \$13,000 during the year in this endeavor. This

is probably the most important fund upon which the Society can rely to perpetuate itself.

The Theosophical Investment Trust consists of the following members: Mr. Edwin N. Lord, Chairman, formerly International Treasurer of The Theosophical Society, Mr. Alfred Schindler, Mr. John Sellon, and Mr. Paul Dunakin. The National President, the National Vice-President, and the National Treasurer of The Theosophical Society in America make up the remainder of the Board of Trustees.

The American Theosophist.—During the past several years we have made special efforts to improve The American Theosophist and have had some excellent reports from the readers. Last year we again published two special issues which were extremely well received. The November issue stressed the theme "Some Aspects of Science and Its Emerging Philosophy". The more recent special issue was on "Aspects of Mysticism". We have also added a "Question and Answer" department.

Discovery.—This publication has continued to be well received. More than 73,000 copies were distributed. Over 65,000 were sent to Lodges. The rest were sent to individuals, Theosophical groups in Canada, study centres, and one each month to each National Member of the Society. Discovery is set up to allow the Lodges to utilize the back page for announcements. Each issue presents short articles on Theosophical subjects which have an appeal to the general public.

By-Laws Revision.—For a good many years the By-Laws have been studied, and a committee completed its work of revision last year. The National Board of Directors has unanimously passed upon this revision and the Judiciary Committee has approved it. The new

By-Laws have been printed and will be submitted to the members for referendum vote in the near future.

Building and Grounds.—Mr. Samuel Wylie, who is capably in charge of building and grounds, with the able assistance of Mr. Lee Roed, has had a strenuous year because of labor problems and the many changes necessary on the grounds and in the building.

Institute of Theosophy.—The Institute of Theosophy was conceived primarily for the staff at Olcott, so that during the period members are employed at Headquarters they may receive adequate Theosophical training which will be of value to them and to the Society when they leave Headquarters.

This year the work was very successfully carried out along topical lines, and in addition the staff had the opportunity to attend a workshop seminar conducted by Mr. and Mrs. F. L. Kunz. Also, Dr. Gordon Plummer, a lifetime student of Theosophy, gave a series of classes in Mathematical Symbolism which were of great interest and value.

During the current year, as in previous years, there have been a number of changes in the staff. I shall mention just the major changes. Since there was a vacancy in the library, we were very fortunate to secure the valuable services of Miss Lola Fauser as chief Librarian. Her many years of management of The Theosophical Press have been greatly appreciated and have given her a knowledge of books which is essential for the work she is now doing. The position of Manager of the Press has been filled by Mr. Edwin N. Lord.

National Advertising Program.— During the past year, two programs of advertising Theosophical books were undertaken on a national scale. The first was a 13-week program with The Saturday Review. The books featured were Through Death to Rebirth, by James S. Perkins; Reincarnation, the Hope of the World, by Irving S. Cooper; and The Ageless Wisdom of Life, by Clara Codd. This contract cost the Section \$ 3,414. The results were as follows: There were 229 orders for books and 52 requests for catalogues. These figures do not include any orders that may have come in later as a result of this advertising.

The second program was with the Sunday Book Review Section of the New York Times. This consisted of 12 consecutive insertions, although these were interrupted by the prolonged newspaper strike in New York. In addition, our advertisement appeared for six consecutive week-days in the Western edition of the New York Times published in Los Angeles. The cost of this program was \$3,768.00. The same books were advertised. As a result of this second program, 402 books were sold and there were 115 requests for catalogues. Again, these figures do not take into account later orders which may have come in as a result of this advertising. Additional orders have followed both programs on a relatively small scale.

Federations.—There are 14 active Federations in this Section. Each of these is a local and independent organization receiving some assistance from Head-quarters in the way of speakers and workshops. All of these Federations have been much more active in recent years than previously. There is a change from simple organizational meetings, which were formerly the vogue, to local conventions and workshop seminars, together with the conducting of business.

This year the North-east and Middle Atlantic Federations carried on a Pilot Program for leadership training. This was conducted with the co-operation of Mr. and Mrs. F. L. Kunz. All Lodges thus assisted report excellent results from these workshop seminars,

The Theosophical Order of Service.— This activity has been for some years under the supervision of Mrs. Lois Holmes. Included in the Order are the Social Service Department, the Animal Welfare Department, the Health Department, the Division of Music, and the "To Those Who Mourn" group.

Parents Theosophical Research Group.— Mrs. Muriel Lewis is still in charge of this activity, now in its 29th year. It is dedicated to presenting Theosophical ideals to parents and children and to guiding them in their family relationships. A magazine is published at regular intervals and is available to all parents who are interested in availing themselves of the information thus presented.

Order of the Round Table.—This program is under the direction of Mrs. Sarah Jordan of Ojai, California.

Theosophical Book Association for the Blind,—This organization, under the inspiring and capable leadership of Mrs. Flavia Snyder, has carried on a very remarkable work for the blind members in the Section. The work has been considerably expanded in recent years. It not only extends through the American Section, but has also been assisting the blind members of other Sections. The Association publishes an English Braille magazine which has 650 subscribers, and it has been organized to help promote Braille in other languages so that there is now a Spanish Braille magazine with 260 subscribers and a French Braille magazine with 120 subscribers. The Braille library consists of 1,172 volumes, and there are 386 tape recordings in circulation.

Theosophical Book Gift Institute.— The fiscal year of The Theosophical Book Gift Institute ending May 31, 1963 reveals a total of 754 books distributed in the United States of America, principally to public and college libraries. The solicitation of orders has been conducted by mail, contacts being made almost exclusively by Miss Belle Williamson of Ojai, California.

Miss Edith C. Gray was instrumental in placing approximately 60 books in Indonesia, Australia, New Zealand, the Fiji Islands, and Cairo, Egypt, following her visits in those places.

Radio.—The Foundation for Radio Theosophy, now under the direction of Mrs. Arleen Heintz, was founded by a group in California, where it still has its headquarters. The entire radio effort is financially supported by a special grant given by Mr. Herbert Kern. The Foundation makes the tapes for the radio programs and replaces them when they are defective. If tapes are made elsewhere they must be reviewed and approved by the Foundation.

The National Radio Committee, with headquarters at Olcott, reviews all applications for radio programs received from Lodges or other Theosophical groups, and determines the policy with regard to defraying the costs (under the direction of the Board of Directors). The Society owes a deep debt of gratitude to Mr. Kern for the very remarkable work that he carried on for so many years.

This past year, twelve Theosophical groups have participated in a series of radio broadcasts in as many different areas of the country. There were five yearround programs: Meridian, Mississippi; Miami, Orlando, and Tampa, Florida; and the Southern California Federation at Glendale, all had 52 weeks of broadcasts. The two "live" programs-at Trenton, New Jersey, and New Orleanseach had 39 weeks. Mrs. Molly Kay in Trenton and Miss Olga Kaufmann in New Orleans continue to plan and execute their own programs without the aid of the Foundation for Radio Theosophy. Austin. Texas, had 26 weeks on the air; Billings, Montana, had 13 weeks; and Des

Moines, Iowa, had seven programs, working with the Regional Expansion Program. Boston tried something new in Radio Theosophy with a series of 26 weekly five-minute broadcasts based on answers given by prominent people to the question, "How can a thoughtful individual find a meaningful explanation for the purpose of life and its many problems?" The response to these short broadcasts was very gratifying, and plans are being made to continue in the fall with a similar series answering another vital question. Announcements concerning literature and local activities are included in these broadcasts.

Theosophical Camps.—The Theosophical Camps are not projects of The Theosophical Society but were developed by individual groups for particular purposes. These purposes were mainly fellowship, vacations, and relaxation, and for outdoor living. Of course, an important part of the camp programs is always the lively discussions on Theosophical subjects and the programs that are initiated during camp activities. The inspiration of these activities has been carried out into the surrounding areas. The efforts of those who have founded and maintained these camps are deeply appreciated. At the present time, four such camps are active: Camp Indralaya at Orcas Island, near Seattle; Pumpkin Hollow Farm in New York State: Far Horizon in the mountains near Fresno, California: and The Oaks in Ann Arbor, Michigan. It is an interesting fact that wherever these camps are, there can be found young Theosophists, and they should receive our full co-operation and support at all times.

Conclusion.—In this report we have dealt largely with the external aspects of Theosophical activities and it must be remembered that there are inner aspects of the work which are vital. There is no question that each member is a channel for Theosophical ideals and through this dedication becomes also a channel influenced by the Elder Brethren.

There is a remarkable internal unity throughout the Society which creates a vitality that one can experience in spite of the outer weaknesses of the structure of our organization. We must build a solidarity, a real brotherhood, so that we can reflect more definitely this inner vitality that exists.

Theosophy stresses the value of the individual, his initiative, his creativeness, and his dedication. If every member stressed these ideals for himself he would find himself a very vital and integral part of the organization, capable of achieving much more than appears on the surface. He could then attain results which he himself might not perceive, but from which the work would benefit profoundly.

HENRY A. SMITH, General Secretary.

# **ENGLAND**

The Unity Campaign of 1962 has been followed up this year by giving special emphasis to basic Theosophy, the "fundamentals without the frills". The increased interest by the public has been evidenced by a general demand for syste-

matic courses on Theosophy, and new members have welcomed the arrangement, made last year, of being able to consult a panel of correspondents on questions which arise in their early studies. The above has been associated with some publicity on the advantages and responsibilities of membership.

Membership.—For the first time in many years I am able to report an increase in membership. There have been 323 new members during the year compared with 185 in the previous year. After allowing for resignations and lapsings, both of which are less than the previous year, the net gain in membership is 94 compared with a loss of 71 in the previous year.

The General Secretary visited Adyar in December and January and was therefore able to attend the international Convention and the meetings of the General Council. He also attended the French/German-speaking Summer School at Leysin, Switzerland, in September.

The President, Mr. N. Sri Ram, spent a few days in England in April on his way to America, and again in August on his return. These visits, however short, are much appreciated as they enable us to keep in touch with his work and with international affairs.

Srimati Rukmini Devi undertook a  $4\frac{1}{2}$  weeks lecture tour in May-June when she visited Lodges in five of the Federations, including three Federation conferences. We also had many visitors from other Sections, including Mrs. Radha Burnier.

The Annual Convention was held as usual at Whitsun with Srimati Rukmini Devi as the Guest Speaker. Dr. E. Lester Smith, F.R.S., delivered the Blavatsky Lecture on "Science and the Real," and there were symposia by The Theosophical Order of Service, The Theosophical Research Centre and the Young Theosophists.

There was a two-weeks Summer School in July-August at High Leigh, Hoddesdon, Herts, at which the theme was "Theosophy, its Meaning; The Theosophical

Society, its Purpose". 150 members attended with an average of 110 each week.

There have also been many study week-ends arranged by the various Federations, The Theosophical Research Centre and some Lodges. Tekels Park, Camberley, continues as a centre for week-end activities on different aspects, including three arranged by the General Secretary for the training of workers.

A Reading Guide on the Third Object has been prepared and issued by the Study and Training Committee, which is now preparing one on the Second Object. These Reading Guides are an alternative to the established Study Courses which the Committee has issued during the previous 16 years. Their purpose is to assist the student in his choice of reading matter rather than to give him a readymade course of study. The Guide on the Third Object covers the following aspects: Occultism, Mysticism, Psychism, Science, Psychology, the Nature of the Mind and the Practice of Meditation. Yoga, Healing, and Creative Living.

Department.—The Publicity ment has published the following new booklets: What the Masters Teach, by Christmas Humphreys, Q.C.; What can we believe? by T. H. Redfern; Theosophy and The Theosophical Society by Miss I. H. Hoskins; a revision of The Mystery of Life by Miss Clara Codd; and a leaflet for public lecture audiences— Welcome to The Theosophical Society. The following reprints have also been published: A Scientist looks at Evolution (Dr. E. Lester Smith, F.R.S.), Reincarnation (Dr. A. Besant), and The Unclouded Image (N. Drinkwater). Many of our pamphlets are being used by other Sections.

The public lectures at the National Headquarters have been so well attended that it has been necessary to arrange for three Beginners' Classes to be held each week to meet the requests from the public for systematic courses in Theosophy.

Library.—There has been an increased demand for books, the predominant interest being in general Theosophy, with Religion coming second.

The Theosophical Publishing House (London) Ltd., has published the following new books: *The Passionate Necessity*, by Hugh Shearman, Ph.D., and *Science and the Real* by E. Lester Smith, F. R. S., and the following reprints and new editions: *The Story of Atlantis and the Lost Lemuria* (Scott-Elliot), H. P. Bla-

vatsky and the Masters of the Wisdom (Dr. A. Besant), The Mystery Teaching of the Bible (Daisy Grove) and The Principles of Astrology (C. E. O. Carter).

Tekels Park Estate Ltd., wholly owned by the Section, is becoming more and more active as a centre for the various activities of members and Lodges. Both Mr. E. L. Gardner and Miss Clara Codd live there and continue to inspire the Section.

V. W. SLATER, General Secretary.

## **INDIA**

The past year has deprived the Section of some of its most valued workers, the first among them being Rai Bahadur Panda Baijnath, who joined the Society in 1890, before the Indian Section was given a charter and while H. P. Blavatsky was still alive. He was unwaveringly devoted to the work of the Society during the seventy-three years of his membership. After his retirement in 1922, he spent all his time and energy in doing that work. holding later the post of General Secretary of the Indian Section and that of International Treasurer. He was a deep student, lectured widely, translated a number of Theosophical books into Hindi and gave generous donations to the Section, including the endowment National Lecturers. Thus, in many ways has he earned the respect and gratitude of the Indian Section.

Another of our oldest members, Sri A. Rangaswamy Aiyer, also passed away during the year. He joined the Society in 1897 and worked with Dr. Besant in her varied activities. He was a member of the Indian Section Council and well known to many.

Sri K. Rajagopalachari, who was my predecessor in office, passed away in November 1962 after a prolonged illness. He was educated in the Central Hindu College, Vārānasi, and was himself a very successful educationist. He was enthusiastic and deeply loyal to the Society and more than once sacrificed prospects of worldly betterment in order to work for the Society, which was the case when he undertook the responsibility of being General Secretary under difficult conditions. Unfortunately, his health did not permit him to remain with us and help us.

Sri Radhakant Sharan of Bihar was another much respected member, who joined in 1915 and devoted nearly a quarter of a century of his life, after retirement, entirely to Theosophical work. He was Secretary and later President of the Bihar Federation for very many years and also a member of the Section's Council and Executive Committee.

Others who passed away were Mrs. D. R. Dinshaw, who gave invaluable help as Assistant Editor of *The Theosophist* to several Presidents and whose devotion was most estimable; Sri Charu Shashi

INDIA 47

Banerjee, who was deeply versed in Theosophical literature and spread the message of Theosophy wherever he was; Sri C. J. Sutaria, who was a stalwart member of Gujarat and Secretary of that Federation for a long time; Mrs. Dorothy Jinarājadāsa, who was a life-member of the Indian Section and active in earlier days in the Women's Indian Association, etc., although she did not retain her connection with the Society later on.

During the year under report, the number of Federations increased by one as it was found that the Telugu Federation covered too vast an area to make satisfactory administration possible. It was therefore decided to form a separate Federation to be known as Rayalaseema Federation comprising the Rayalaseema and Telengana districts including Hyderabad. We trust that this arrangement will make it possible to do more effective work in these areas in the future. The two Federations, which have a common language, have a field of happy co-operation among other things in the publication of the Telugu journal, Divyajnana Dipika, which is now a joint endeavor.

I am glad to say that the total number of members in the Section increased by 67 from 7,389 to 7,456. The number of Lodges has increased by 10, while we have 2 Centres less than in the last year. In spite of the work of re-organization during the year, there was an increase in membership by 127 in the region of the former Telugu Federation. Next comes the Karnataka Federation with an increase of 103 members and a comparatively small number (36) of lapses owing to non-payment of dues in relation to its total membership of 1,174. As against this, the Tamil Federation shows a fall of 98 in its membership.

The membership chart shows no less a number of lapses during the year than 758. These figures, as well as the possible

reasons for increases and decreases in the number of members, in relation to the type of work being done in each area, may be well worth the study of Federation officers and workers. In the Karnataka Federation, for example, the percentage of lapses seems to have been low for a few years. This may be the result of the contacts that several of the Federation's senior workers are able to maintain with the members. I have already pointed out in a previous report the need to keep in touch with new members and unattached members. Unfortunately, it was not possible to make progress in this direction through correspondence from the Section Headquarters as I had hoped, due to the paucity of workers. But I am glad to read in the report of the Bombay Federation that Lodges in that Federation have enthusiastically co-operated in contacting dormant members. The Secretary of the Madras Federation writes: "There is always the problem of retaining the interest of new members or deepening the interest of members of a few years' standing." The Kerala Federation Secretary also reports: "The enthusiasm of some of the new members wanes gradually and that is a problem that has to be tackled."

I feel that there can be real enthusiasm and deepening interest in the work of the Theosophical Society only in people who begin to have an understanding or appreciation of the fundamental truths which constitute Theosophy, including the truth of the Brotherhood spoken of in the First Object. Unfortunately there are people who join the Society and do not even take the first step of making an intellectual acquaintance with Theosophy. I think we have to try to help new members to realize the need to know for themselves at least in some measure what Theosophy is. A superficial interest in the Society, based on a wrong idea or no

idea of why the Society exists, is likely to wane.

In a large number of Lodges, much time is devoted to study classes judging by the news received from them. Yet there are quite a number of members who do not even know clearly what the Objects of the Society are. In one Lodge, when members were asked to state the Objects, the majority were unable to do so correctly. Some merely think of "Brotherhood" in a vague way as the Object. Even some members of long standing are unable to explain to inquirers what the Society stands for, much less what Theosophy is. There are others who are confused. It is with a view to seeking clarification on such fundamentals that discussions have been arranged during the Convention on these subjects. Obviously the study made in Lodges has to improve in quality and should not be a mere cursory reading which is quickly forgotten.

There are many people who feel that study is dull and there are unfortunately very few good students in our Section. Most Lodges and members feel a need for stimulation and inspiration from without. Of course, the visits of lecturers and others have their value and can help to refresh and broaden our thinking and also establish contacts between different parts of the Theosophical world. But I feel that it is necessary for members to understand that the greatest and most lasting inspiration can come only from one's own deepening realization of the truths of Theosophy and our efforts have to be in this direction.

The study of Theosophy has to be unlike other study, in the sense that it should not lead to a mere intellectual grasp of certain concepts, but should be closely linked to an inward realization of the truths of Life, finding expression in every act. Such an attempt to know

Theosophy can be a day-to-day adventure which is full of interest and inspiration. Members should be encouraged to embark upon this adventure and not merely depend on lecturers and visitors for inspiration and stimulus. There are complaints sometimes from Lodges that lecturers do not come often enough and that there are no suitable people to speak at Lodge meetings and lead discussions. We are of course trying to arrange for lecturers to visit the Lodges as much as possible. But I feel that if the majority of members decided to apply themselves to studying Theosophy and knowing it for themselves, each Lodge would have its own well-springs of energy and the problem of waning interest, large-scale lapses, etc., could be tackled.

It would be relatively easy for us to add to our membership by having more entertaining programs or by satisfying people in various ways. But we would not then be really carrying on our work. I therefore agree with the Kerala Federation Secretary who in his report says that Theosophical Lodges have a unique message to convey. "It would not be wise on the part of Lodges to direct their activities in such a way as simply to please the members. Theosophical study alone will inspire the members to continue their allegiance to the Society."

The reports from the different Federations show that work has been carried on steadily. The Karnataka Federation had 23 camps and conferences during the year with an average attendance of 54. The Federation Secretary and other workers visited a large number of places. In the Telugu Federation there were seven camps and here also besides the Federation Secretary, Bro. K. Satyanarayana and others visited a number of places. A new feature in the Delhi Federation was the holding of monthly meetings for all members of the Federation, in an attempt

INDIA 49

to strengthen the work there. I trust that the coming year will see this Federation growing in every way. Madras Federation also started a program for strengthening weak Lodges. It is reported that "splendid work" is being done in Bombay for the young through Lotus Classes and the Round Table. Lotus Classes are held in several places in Kerala also. A special event in Gujarat was the celebration of the eightieth anniversary of Bro. Harjivan K. Mehta in conjunction with the Federation's annual conference at which the International President presided, and the collection of a memorial fund to be used for Theosophical work. Some more books have been published during the year in Gujarati, Marathi and Telugu. The Uttar Pradesh Federation has started publishing publicity pamphlets which are being distributed in other Hindi-speaking Federations also.

The South Indian Conference was held as usual in Advar at Easter, with Prof. Jal B. Dorab, Recording Secretary, in the Chair. A North Indian Conference was not arranged in view of the Convention having Vārānasi for its venue this year. The President, Sri N. Sri Ram, presided over the Tamil Federation conference at Tanjavur and as usual visited some places in the Section, for which we are grateful. The Vice-President, Mr. J. S. Perkins, presided over the annual conferences of the Madras and Telugu Federations and also over the Golden Jubilee of the Kerala Federation. He and Mrs. Perkins also gave lectures at various other places and our thanks are due to them. Srimati Rukmini Devi presided over the recent Bihar Federation conference.

The Theosophical Workers' Training Camp was held this year at Baroda with the President's permission. Bro. Harjivan Mehta was the convener and Bro. C. R. Kamath went there to participate in the proceedings.

I had the privilege of participating in the annual conference of the former Telugu Federation, held at Chittoor, and of presiding over the annual conferences of the Karnataka, Rayalaseema, Madhya Pradesh and Rajasthan, and Uttar Pradesh Federations and at the Salem District conference. I was able to visit some of the Lodges in Kerala, Uttar Pradesh, etc.

Brother S. G. Venkataramanan, who was appointed both as National Lecturer and as Assistant General Secretary for the South, as usual visited a large number of Lodges, 41 in number this year, and gave talks to members and the public. Prof. M. N. Tolani also visited many places in Gujarat, Madhya Pradesh and Rajasthan, Panjab, Uttar Pradesh and Bombay. Bro. Ramjivan Sinha visited various places in Bihar, Uttar Pradesh and Bengal. I thank all these National Lecturers for the good work they have done.

Besides the National Lecturers various others have made lecture tours. Chief among them are: Bro. Harjivan Mehta, who, in spite of his age, went to Delhi for a camp and visited Lodges in Madhya Pradesh and Gujarat; Dr. C. R. Kamath, another dauntless octogenarian, who lectured in places as far removed as Baroda, Calcutta, Bombay, Bangalore, the Tamil districts, etc.; Prof. Badri Narayan, who has addressed members and the public in a number of places in Uttar Pradesh, Madhya Pradesh and Bihar: Srimati Seetha Neelakantan. conducted a study camp in Coimbatore and lectured at various places in Maharashtra, Gujarat, Bombay, etc.; Bro. M. Krishnamacharyulu, who visited a number of Lodges in Madras, Telugu, Rayalaseema and Bengal Federations; and Bro. K. N. Ramanathan, who has given talks in various Lodges in Madras, Kerala and Tamil Federations. Thanks are also due to Mr. and Mrs. Richard Brooks, who took advantage of a private

tour, to address members and the public in Bengal, Uttar Pradesh, Rajasthan, Gujarat, etc. I am mentioning only some who have travelled in several Federations. It is not of course possible to mention all those who have lectured and visited Lodges, but we appreciate their work equally. The work of every sincere member, whether he lectures in public or whether he keeps the torch burning in some lonely corner, is equally valuable and on this occasion it is but fitting that we should remember all such members.

Bro. K. N. Ramanathan, who recently retired as Editor and General Manager of the Press Trust of India and who is now the Information Officer at the International Headquarters, has obtained very effective newspaper coverage for the Theosophical activities of the past year. He has offered to help our Federations in this way, as already announced in *The Theosophical Review*, and advantage should be taken of his experience and help.

The Theosophy Science Group continues to carry on its activities under the enthusiastic leadership of Dr. A. Kannan of Delhi. There is an active branch in Madras and possibly in other places. At the last meeting of the Indian Section Council it was decided to affiliate the Science Group officially to the Indian Section, which has enabled the Group to obtain assistance from the Theosophical World University for the purchase of books, etc.

Sri Pannalal of Ujjain has donated Rs. 2,000 to the Reserve Fund and another Rs. 1,000 has been received from a friend who wishes to remain anonymous. We are grateful to both of them for adding to this Fund to which I hope more members will generously contribute. Another anonymous donation of Rs. 10,000 has been placed at my disposal to be used at my discretion. To this donor also we

are very thankful and also to all the others who have given their mite.

At the Section Headquarters, we continue to be handicapped by the lack of a sufficient number of suitable workers. As the result of an appeal I made, a few members have offered to come and help, but there is no accommodation to offer them because some houses and rooms are occupied by persons who are not helpful to the Section in any way and who have failed to vacate their quarters in spite of repeated requests. This difficult problem has to be satisfactorily solved if the Section's work is not to be stultified and paralyzed.

Sri P. L. Bhargava of Vārānasi, has made a handsome donation to the Indian Section in the form of a room which is being used by the Vasanta Kanya Mahavidyalaya (Girl's College). Two bathrooms have also been constructed in the building used by the Shishu Vihar (Children's Section of the Besant School) with donations received through Srimati Sati Phansalkar. Another gift in kind we have received is a large and valuable carpet, which covers part of the floor of the Annie Besant Hall in the Headquarters building, from Her Highness the Rajamata of Gwalior. Our grateful thanks are due to all the donors.

Srimati Tara Kulkarni has undertaken the work of running a much-needed community kitchen. This has proved very useful under her supervision.

During a major part of the year, Bro. D. V. Kanvinde was away from Vārānasi owing to personal reasons. I am grateful to Bro. P. L. Bhargava, who carried on all the work of the Indian Bookshop during this period, as usual in an honorary capacity. He continues to help Bro. Kanvinde since the return of the latter.

We are glad to welcome Bro. G. K. R. Patri and Dr. and Miss Broacha at Vārānasi, Bro. Patri, who was for a short time Secretary of the Telugu Federation, was appointed as Principal of the Besant Theosophical School during the year. Miss Sherine Broacha has been working in the Library. I am sure that the presence and co-operation of every such earnest member can help to strengthen Vārānasi headquarters. I thank them and all others who have helped me, particularly the Assistant General Secretary, the Treasurer and other members of the Executive Committee whose guidance and ever-ready aid and co-operation have been available to me.

A regular feature of the work at Headquarters are weekly public lectures. Besides these, study classes are held every Tuesday and the Lodge program includes reviews of important Theosophical journals, etc. During the year very useful discussions were held both in

Vārānasi and at Kanpur, during the Uttar Pradesh Federation conference, on "Obligations of T.S. and Lodge Membership". This is a subject which members everywhere can think about. It is not uncommon to find members who feel that there is little that they can do to help the Theosophical Society. But I feel that every member can be of help; there are many ways of helping including participating regularly in the work which is done in Lodges, being punctual, keeping the Lodge clean, coming prepared for study classes, living in a helpful and upright manner and so on. Everything counts and it rests upon each member to reflect on the ways in which he can help and fulfil the work of the Theosophical Society.

> RADHA BURNIER, General Secretary.

# **AUSTRALIA**

Overseas Lecturers.—We have been very fortunate this year in being able to arrange two major tours from overseas lecturers. First to arrive were Mr. and Mrs. Felix Layton of the U.S.A. who returned to Australia in March after a term at Adyar. They spent three months in this country and were guest speakers at our annual Convention. Their friendly and dynamic talks were very much appreciated.

At the end of June Mr. Geoffrey Hodson, accompanied by Mrs. Sandra Hodson, arrived in Sydney to commence an extended tour of Australia. Mr. Hodson is a very popular lecturer and he attracted large audiences. While in Sydney he devoted considerable time to recording more than twenty new tapes for the tape library, and these will be available for use by the Lodges. This tour has been most valuable.

Convention.—Again this year at Easter time we had a memorable residential Convention, this time at Binna Burra in the Lamington National Park in Queensland. Our theme, appropriately, was "The Wonder of Nature" and those who attended explored together some of the laws of Nature and experienced her beauty. Brisbane Lodge was host Lodge for the occasion. There were fine contributions by our guest speakers, Eunice and Felix Layton, and everyone had an opportunity to participate in the group discussions at the guest house and out in the forest.

Headquarters Staff.—Miss Helen V. Zahara, A.A.S.A., was re-elected as General Secretary. With the departure overseas of the Assistant General Secretary, Mrs. Joyce Carr, Miss Ruth Beringer was appointed to succeed her in

that office. Mrs. Shirley Miller joined the staff as Office Assistant. Dr. H.S. Murdoch, A.C.A., continued to serve as Hon. Treasurer.

Savoy House.—An important item of business completed during the year was the reconstruction scheme in connection with the nine-storey office building in Sydney known as Savoy House, in which are situated the Headquarters of the Theosophical Society Australia and Blavatsky Lodge. previously owned by a public company floated originally by members of the Society. Over the years many of the shares passed out of control of the Society and its members, and so a reconstruction scheme was evolved requiring the formation of a new company—The Theosophical Foundation Pty. Ltd.wholly owned by the Society in Australia component Lodges. This new company has now acquired the undertaking of the old company, thus securing ownership of Savoy House wholly for the Society in Australia.

Other Lecture Tours.—The General Secretary visited Adelaide, Tasmania and Melbourne during the year, as well as attending the annual Convention in Queensland. In Sydney she accepted several engagements to speak to women's clubs as well as appearing on the Theosophical platform.

Mr. Leonard Wade, this time with Mrs. Wade, undertook a second visit to North Queensland. Mr. George Morrison spent two weeks in Tasmania and also assisted the Lodges in Brisbane and Toowoomba.

Lodges.—The number of Lodges on our rolls remains unchanged at seventeen. Five of these in the capital cities are large Lodges with more than 100 members, while the remainder are smaller in numbers, some of them being in distant country areas. There are also some drawing-room groups meeting regularly.

The principal Lodges maintain bookshops and libraries open to the public and promote a varied range of activities. While all the larger Lodges have ample premises in which to carry on their work, only two of the small Lodges have their own premises in which to meet and from which to receive income to sustain their activities. All the small Lodges need as much assistance as can be given by way of the provision of program material and visits by guest speakers.

Membership.—It is encouraging to note that although there was a slight decrease of eight in the number of members at the end of the year the steep downward trend recorded in the previous two periods (71 in 1963 and 53 in 1962) has been slowed down, and we can be hopeful that there may be an upward curve once again next year. It depends on us all as to whether this is achieved and how we manage our Lodge work, keep contact with new members and those who do not attend regularly, and present a program that will meet the needs and interests of both inquirers and students.

Letters to New Members.—A new service instituted in the Headquarters office this year was that of sending monthly letters to all new members, as well as to some of our country members, telling something of the founding, development and activity of the Society and introducing some basic concepts of the Theosophical philosophy. These letters are based on those compiled by the Society in the U.S.A., and we are grateful for permission to draw on them for our own use. Up to September, 118 members were receiving these monthly letters, which will continue to be despatched to each such member for at least one year. We hope they are helping to integrate new members into our movement, and we have appreciated hearing from some who have received them that they have been helpful.

SWEDEN

Services to Lodges.—The Headquarters continues to provide program material for Lodges. The principal demand is for tape recordings and more than sixty talks and studies on tapes were sent out during the year. Our tape library is continually being built up and improved and the new tapes especially made by Mr. Geoffrey Hodson for this purpose while in Sydney will be a great help. They include a series on Cosmogenesis, a series on the Wisdom in the Hidden Christian Scriptures, and a varied range of other subjects. Isis Lodge members supplied four discussions on the Fundamental Propositions of The Secret Doctrine, and tapes by Mr. and Mrs. Layton, Mr. L. Wade and others were also added. Study courses of various types were supplied to various Lodges and groups for use on their programs.

The Headquarters stocks a varied range of publicity material. 4,900 pamphlets and 7,400 leaflets were supplied to Lodges during the year, as well as 3,200 publicity leaflets for the tours by Mr. and Mrs. Layton and Mr. Geoffrey Hodson; 600 lecture announcements were duplicated in the office for the smaller Lodges. Some of the reading lists were brought up to date and 23 dozen of these were supplied to Lodges.

Journal.—As usual, Theosophy in Australia was prepared and despatched from the Headquarters every two months, with the General Secretary as Editor.

Broadcasting.—The National Society continues to conduct a weekly session

from Station 2GB in Sydney, with overseas, inter-state and local speakers assisting on the program. There are regular requests for copies of talks and other evidence of response from the radio audience. Melbourne Lodge continued to sponsor a weekly session on Station 3TR in Sale, Victoria. They were to commence a new program in October from Station 3GL, Geelong.

53

Young Theosophists.—Groups in the larger Lodges have continued their activities during the year, and in December 1962 they organized a successful camp at Garie Beach near Sydney. We were glad to see a good attendance at the Convention at Binna Burra, and they were also prominent on the program. The Australian Federation of Young Theosophists continues to publish its own journal Fraternity with an occasional special issue named Project.

The Theosophical Order of Service.—Groups are active in most of the larger Lodges and are affiliated with other service organizations, as well as working on specific projects to assist worthy causes.

Conclusion.—It has been a very busy year for all our workers, and it has only been because of group effort and co-operation that we have been able to carry on our work in so many fields of activity. May it flourish with ever greater strength and vitality!

HELEN V. ZAHARA, General Secretary.

## **SWEDEN**

The work of the Swedish Section has continued rather quietly during the past year, but undiminished in zeal and activity. The membership was 377 at the end of the year under report,

including 26 new members and a loss of 14.

There has been a small increase in the exchange of lecturers between Lodges in different parts of the country. In addition

to the meetings for members, arranged by the Section, the three active Lodges in Stockholm have had some joint meetings, one member from each Lodge introducing a general discussion on a chosen topic. (E.g. How can Theosophy be the ancient wisdom and at the same time a modern and living knowledge of life? and How is it possible to live with harmony in the world of today?) This arrangement has turned out to be useful and we have appreciated the opportunities for a closer contact between the Lodges and non-attached members.

We were happy to receive in November Mr. Otto Viking, from Denmark, who visited Stockholm and the Lodges in Gothenburg and Uppsala. Unfortunately visits by two other lecturers from abroad, Mrs. Mary Elmore, England, and Mr. Jorgen Winde, Denmark, had to be cancelled.

The publication of the bi-monthly magazine *Teosofi i Norden* has continued in co-operation between the three Sections of Denmark, Norway and Sweden. The

Theosophical Publishing House of the Swedish Section has a small but steadily continued activity. It gets its main resources from the surplus of the bookshop which is carrying on rather successfully. This year saw the reprint of *At the Feet of the Master*.

In order to promote a closer contact between the Finnish and Swedish Sections no Swedish summer gathering was held this year and members were encouraged to attend the Finnish Summer School in connection with the European Council meeting in Helsinki. During this week a Northern Regional Committee was formed on a geographical basis and consists of the Danish, Finnish, Icelandic, Norwegian and Swedish Sections.

Young Theosophists have an active group in Stockholm with a number of interested young people attending their meetings. The Order of the Round Table is increasing its activity.

KERSTIN BERG, General Secretary.

# NEW ZEALAND

After an interval of nearly three years the members of the Section were very pleased to receive a second visit from Mr. and Mrs. Felix Layton. Following a period of work at the Adyar Headquarters, Mr. and Mrs. Layton found it possible to break their journey back home to the U.S.A. with visits to both the Australian and New Zealand Sections. They spent over six weeks in this country during which they visited some 11 Lodges and 2 Centres. Although coinciding with our mid-winter period, public interest in their lectures was strong and appreciative. Indeed it was noted that where they were able to present more than one lecture in the larger cities, the attendances invariably showed a sharp increase. It is considered that if the greatest benefits from such visits are to be obtained, a longer series of lectures, at least in the main centres, should be arranged.

En route, Mr. and Mrs. Layton also stopped for a week in Fiji, meeting and lecturing to the members there. Reports to hand indicate that as a result of their visit, several applications for membership have been submitted and it is intended presently to apply for a Lodge charter under the New Zealand Section.

The Section roll now has a total of 921, this being one less than the previous year. 61 members joined, 10 re-joined and 3 transferred from other Sections. Against this, 11 members died, 37 resigned, 24 lapsed and 3 were transferred out of the Section.

There are 18 Lodges on the roll of the Section. Four of these are large Lodges ranging in membership from 50 to just on 300 members. Of the remainder, 5 Lodges average about 25 members and 9 Lodges have rolls of from 5 to 12 members. Three of the smallest Lodges have been inactive during the past 12 months but it seems inadvisable to call in charters until it is clear there is no hope of activities being resumed. At the same time it is encouraging that in at least three areas keen interest is being evinced in the Theosophical work, which is the case at Fiji, Orewa and Whakatane. At the first two of these the groups of members are planning to form Lodges in the near future.

The Section magazine Theosophy in New Zealand continues to be issued three times a year and under the able editorship of Mrs. E.M. Lavender its interest and topicality have been maintained. In addition, the monthly newsletter is regularly despatched by the General Secretary chiefly for the benefit of unattached and isolated members. Its distribution has now risen to 230, and there is a suggestion that a copy be sent to every member in the Section.

To assist in the furtherance of its propaganda work the Section this year invited Mr. Geoffrey Hodson to prepare a 32-page booklet dealing with the symbolical and allegorical interpretation of portions of the Christian Bible and suggesting how some of its passages might be illumined by the light of Theosophy. We have found it a very good form of propaganda to continue advertising the Theosophical teachings in national periodicals. Thus during the 12

months under review, over 70 copies of An Outline of Theosophy as well as about 60 copies of Mr. Hodson's booklet, The Divine Wisdom in the Christian Scriptures have been distributed free of cost to people who have responded to these advertisements.

Following the appeals in the February Theosophist repeated in the Section's newsletter, there was a good response by the New Zealand members towards Tibetan refugee relief. Their especial concern was for the young people and £336 (Stg.) was remitted for the Dalai Lama's Children's Homes and Villages Scheme. In addition a number of members have collected and forwarded parcels of clothing. It has also been ascertained that the CORSO organization in New Zealand this year despatched no fewer than 38 bales of blankets and clothing expressly earmarked for the Tibetan children in India. The Organization had done this, it appears, in response to a number of appeals, particularly one from the Wings of Friendship group in England started by John and Betsan Coats.

Over the years perhaps the most outstanding feature of Section work in the minds of many members is the annual Convention when, after the transaction of the formal business, several days are devoted to meetings and discussions at National level concerning the nature and propagation of the Theosophical teachings. These discussions revolve around, or are based upon, a particular theme or keynote. At the last Convention, held in the city of Dunedin, the theme "Seek the Light Within," reminded each member of the need to pursue and deepen his own understanding of Theosophy. For the true Theosophy is this inner Light, this Wisdom, which, since it is a Divine attribute, is known and can be increasingly

realized by each individual. Each member, possessing a measure of the knowledge or wisdom which is Theosophy, sooner or later awakens to and increasingly responds to the call: "Rise to the sense of your own Divinity". is this awareness of one's own Divinity which is of vital importance to the Theosophist. The realization, however imperfect, that he is a "God in the becoming" endows a member with a sense of inner purpose-with a clearer understanding of the path which he, as an Ego, is treading. There is then, a perception from the heart of a deeper, more spiritual purpose which is lasting, eternal, no longer restricted to the merely external manifestations of an incarnation. For life is now realized as a continuing, never-ending state of Being; the consciousness, centred in the Ego, knows itself to be immortal. The individual has discovered and is content to live in the "eternal now" and the ageing and impermanence of the physical vehicle is no longer important.

A further effect of this extremely vital concept is that it is recognized as the principle upon which the Society's first object is founded. It is the basis, as it were, of our attempt to practise brother-hood, since, if we recognize the "Father-hood of God" we must surely accept the Brotherhood of Man.

In the light of this knowledge it is fitting that the keynote for the coming Convention will be: "Brotherhood, the way of life".

STUART NICHOLLS, General Secretary.

# THE NETHERLANDS

Membership of our Section is still dropping continuously and has diminished by another 52 members and now stands at 1,296. This does not affect, however, the activity of our Section, which may be called rather good and satisfactory. So is the contact with kindred movements in Holland.

Our experiment with a National Discussion Group, consisting of the Board of officers and a number of participants, selected from all over the country, has proved to be quite a success. We discussed various problems, as for instance:

- (a) For what reasons can a member be expelled from our ranks? (The Hague)
- (b) Can there be a reason not to admit a candidate who endorses the three objects of our Society? (Amsterdam)
- (c) What has the problem of euthanasia to tell us? (Arnhem)

- (d) What is the essential difference between occultism and esotericism? (Haarlem)
- (e) What is the function of art in Theosophical teachings? (Utrecht).

We issued several new pamphlets for free distribution through the Lodges, as well as two new books, the first a translation of E. Norman Pearson's Space, Time and Self, and the other a translation of Evelyn Underhill's Practical Mysticism. We are now preparing a reprint of The Idyll of the White Lotus and are considering a translation of Mystery Teaching of the Bible by Daisy Grove. Two new pamphlets are in course of being published.

Our National Convention was a great success, especially because of the cultural evening arranged by our Young Theosophists. It drew a great many people to be present at a performance of an instrumental and youal concert and a

FRANCE 57

Mystery play, based on the Book of *Ruth* from the Old Testament. Other societies, such as the Movement for European Integration, the Esperantists, the Brotherhood Federation and several others asked for a repeat performance, but as the actors were all students at different universities, it was not possible to do so.

Our National Library is growing very satisfactorily and nearly 500 volumes have been added this year. It is a pity that it is not much used by our own members, but by outsiders, while books are sent abroad, even as far as Hungary, Poland, Yugoslavia and other countries in Europe.

Our study week at Oosterbeek was well attended by over 80 members, who were very enthusiastic and studied deeply several Yoga methods, criticizing them on their moral, social, spiritual and esoteric values.

A new experiment has been inaugurated for stimulating co-operation and mutual appreciation between the Section and the Huizen Centre, "St.

Michaels," by inviting prominent speakers and sharing expenses. The first was Karlfried, Count Dürckheim, who spoke very eloquently and deeply about Zen Buddhism. Over 300 persons filled the overcrowded Besant Hall. There are already plans for other speakers as soon as the season starts after the 1st of October. In this scheme of helping the International Centre the Netherlands Section offered £1,200 (Fl. 12,000) for building a Youth hall on the premises of the Centre. Plans have already been submitted to the Naarden municipality for approval and it is hoped that next year the Hall will be inaugurated.

Regional gatherings at Delfzijl, Haarlem and Dordrecht have met with an enthusiastic response and are a splendid stimulus to the work of the branches. We are starting our new season with a growing understanding of the splendid task given to us by the Founders of our Society.

A. J. H. VAN LEEUWEN, General Secretary.

# FRANCE

No major event has marked the life of the French Section.

We had the privilege of welcoming to our Headquarters the Executive of the Council of the European Federation of National Societies and of having a public lecture by its Chairman, Mr. J. Coats. The President, Mr. N. Sri Ram, and Srimati Rukmini Devi each paid us a visit and addressed us.

We tried to give our National Convention the character of a small National Congress by adding to our usual meetings a theatre play entitled *La conquête des Trésors*" (which is now issued in book form), an informal Questions and Answers

meeting and an excursion to Versailles. It was to some extent a success and we are encouraged to continue on the same lines.

In order to affirm our Theosophical brotherliness we sent a friendly message to the United Lodge of Theosophists in Paris on White Lotus Day, and read at our meeting the message they sent us in return.

We intend to have closer contacts with them next year and ask them to hold a joint White Lotus Day meeting.

Our magazines are issued regularly for all French-speaking Theosophists in Europe.

Our publishing house has printed one book by the President and a second one will soon be ready.

Many members of the Section participated in the multilingual Summer School in Leysin, Switzerland, and are grateful to M. Tripet for providing this wonderful opportunity for meeting so many friends.

P. THORIN, General Secretary.

#### **ITALY**

This year we held our Annual National Convention in Milan, from the 23rd to 26th May. Mr. John Coats, Chairman of the European Federation Council, was our Guest of Honour. The Convention proceeded in an atmosphere of sincerity and goodwill and with great liveliness. It was just one year since I was elected General Secretary, with a new Executive Committee. As we had already foreseen, the work in our Section during this year was particularly difficult to manage. In the past there was in our Section a strong tendency to accentuate all forms of psychism to the neglect of the original teachings of Theosophy as given by the Masters through H.P.B. The general situation in our Italian Section was unsatisfactory, so that last year the majority of the older members felt the need for a radical change in the direction of the Section; and the new Executive Committee undertook a very clear program of renewal.

Our personal experience has brought us to realize that many of the incongruities which have happened in the past not only in Italy but in many other places in the Theosophical Movement, were particularly due to insufficient knowledge of the original Theosophical teachings or to the fact of their having been forgotten. For this reason we felt that it was urgently necessary to give our members the opportunity to acquire as much as possible of such fundamental knowledge, so as to prevent them from falling back into

sectarian habits of mind. We have concentrated our efforts on the most careful preparation of the articles published in our monthly magazine Alba Spirituale. so that our members could follow as much as possible the actual trend of thought manifesting itself in the Theosophical Movement, especially that of our President, Mr. N. Sri Ram. We also published a regular series of articles about the history of the modern Theosophical Movement since its beginnings. In this age of rapid growth of coarse and illogical materialism, esoteric philosophy alone can withstand the repeated attacks on everything man holds dear and sacred in his inner and spiritual life.

In my Report at the Convention I reminded our members of what a Master wrote in the year 1900 in a letter to Mrs. Annie Besant about the increasing danger of manufacturing in the Society a creed; and that the Society as a body, has no creed, as creeds are but the shells around spiritual knowledge itself—the very essence of philosophical and theistic inquiry; that the very root-idea of the Society is free and fearless investigation, as H.P.B. wrote in October 1879 in the first issue of The Theosophist. I stated that progress in the Theosophical field is inevitable if the inquirer does not lose the spirit of the Theosophical ideal, for Theosophy must not only be studied, but, above all, practised and lived in order to be really understood.

During the year two Lodges, recently formed, were dissolved and a new Lodge was formed in Rome. The number of Lodges is now 26 (a decline by one); plus one Centre. The number of members on the 23rd of May was 582. The membership of the older Lodges remained generally unvaried or with a small increase. There have been 26 new admissions during the year.

Our Publishing House "Sirio" in Trieste, has just published the first Italian translation of the book by our President, An Approach to Reality. In preparation there is a translation of H.P.B.'s The Key to Theosophy, and a new revised edition of The Voice of the Silence.

There is a gradual revival of the Theosophical Order of Service. The Lodges are carrying on their usual activities through lectures and study groups. The discussion method is being increasingly used in the Lodge programs.

The words with which our President closed his last Presidential Address will inspire the daily action of all our members:

"As Theosophists we have to learn to look at all things especially in these times in terms of fundamentals, in terms of what is truly good and good for all, instead of what is superficially advantageous or gratifying, the personal or partial gain, . . . To help even one truly is to help all. What we do in the present will determine the future. Let us. in view of the centenary of the Society. which is only 13 short years ahead, make the intervening time a period of preparation, in which each one does his best, with no ambition, no self-magnification, according to the needs of the world, the needs of those around him, and his own opportunities of service."

> ROBERTO HACK, General Secretary.

#### **GERMANY**

In the year under report the German Section fulfilled three tasks:

- 1. New Rules: The Convention of representatives of the German Section meeting on 18th May 1963 at Hamburg, accepted the new Rules. A Committee of six members appointed at the Annual Convention of 1962 at Frankfurt has drafted them on a really democratic basis.
- 2. The Annual Convention held on 4th-5th August 1963 in the Home High School of Hustedt near Celle, elected a new managing committee. The General Secretary, Mr. Heinrich Nagel, was reelected.
- 3. A Summer School was held from 5th-10th August 1963 in beautifully situated Hustedt and with its best accommodations. The central idea was

"Community of Spirit". Mr. John Coats, Chairman of the European Federation Council, Young Theosophists from Scandinavia, and about 70 German members attended the Summer School. The Young Theosophists had many opportunities to be active. All members resolved to hold a Summer School of 10 days in 1964 at Hustedt again.

The 24 Lodges of the Section carried on their work without difficulties, and there is a well-founded hope that the 3 Lodges in Berlin, too, will soon work together. The kind visit of our beloved Srimati Rukmini Devi was a great help in that direction.

The German General Secretary attended the meeting of the German Regional Committee of the European Federation

in May 1963 at Basel, and the Federation Council meeting in June 1963 at Helsinki, where he lectured on "Youth and Age". We are sorry to report that an illness made it impossible for him to attend the two Summer Schools at Pichl and Leysin, where he was to have lectured. Relatively a large number of German T. S. members were present at Pichl and Leysin. Our German Young Theosophists had an inspiring camp at Gammel Praestegaard in Denmark and several German T. S. members attended Huizen again. Four German T. S. members are working

in Sydney nowadays. They have an active connection between Australia and the German Section. We are very happy about all these contacts, which include the U.S.A., England, Holland and Switzerland, and we know that both our younger and elder members are always trying to revitalize Theosophical work in quiet confidence and peace, in co-operative activities between the German and other Sections of the Theosophical Society.

Heinrich Nagel, General Secretary.

#### **CUBA**

Sectional Executive.—In accordance with the By-laws of this Section, the National President and Vice-President are elected for a period of three years, and the other officials are appointed by the Board of Directors for a year's term. The names and office terms of the principle Executives are:

National President.—Mr. Celestino Aguilar Mora, elected in January 1962 for three years.

National Vice-President.—Mr. Manuel Martinez Mendez elected in January 1962 for three years.

Treasurer.—Mr. Adolfo Aizpurua Aizcorbe, appointed by the National Board for a year.

Vice-Treasurer.—Mr. Mario Alvarez-Guerra Vila, appointed by the National Board for a year.

Librarian.—Miss Hortensia Diaz de Villegas, appointed by the National Board for a year.

Lodges and Members.—The number of Lodges remains the same as during the previous year at 23. The number of members reported last year as 472, at the close of the present period under

report reached 476, which shows an increase of 4 members, with new admissions 37, re-incorporations 3, lapsings for non-payment of annual dues 25, died 8, transferred to other Sections 3.

Of the 25 lapsings reported above, for non-payment of annual dues since 1960 inclusive, 19 had been members for five years of membership, a majority of them youths under 25 years of age who entered our Society showing much interest in the Theosophical teachings during the early years, and developing great activity and enthusiasm; but later their lives turned to other activities keeping them away from the Theosophical Society. This confirms the remarks made by other Sections, as published in the annual report of Mr. Sri Ram corresponding to the year 1962.

Lodges: Of the 23 existing Lodges, 9 are located in the City of Havana, capital of the Republic and our Section's Headquarters, and have been functioning throughout the year regularly and making new members; while 14 are situated in different cities of the national territory, of which 11 have continued functioning

CUBA 61

normally, and the other 3 have remained inactive.

Revista Teosofica Cubana.—Our Magazine, the official organ of the Section, has continued publication but with a slight delay due to reasons beyond our control. It contains Theosophical articles carefully selected. In the December 1962 number we finished publishing the lectures delivered by our International President, Mr. N. Sri Ram, in Latin America during the year 1961. These lectures appeared on the central pages of our magazine, in such a way that they can be removed easily to make a book.

From the May-April 1963 number on we started publishing a Spanish translation of *An Elementary Course of Theosophy*, by Emogene B. Simons, of the American Section, in the same form that the lectures of Mr. N. Sri Ram were published.

This aroused much interest among the subscribers and readers of our magazine, and subscription requests have been received from persons not connected with the Theosophical Society.

Publications.—This year we completed publication of the booklets containing eleven of the lectures delivered in Latin American countries by Mr. N. Sri Ram, six issues in all of 500 numbers each. Besides, we are also binding in book form the limited number of 200 containing the eleven lectures.

Two thousand booklets have also been published containing an article by Mr. Jinarājadāsa entitled "The Fundamental Principles of Theosophy," translated into Spanish by a member of this Section, for free distribution as propaganda. We have obtained authorization from the Theosophical Publishing House at Adyar, for publishing a translation into Spanish of the book, *The Seven Veils over Consciousness* by Mr. C. Jinarājadāsa, which

we expect to issue at the beginning of next year.

We are also printing two booklets containing six lessons each, of *An Elementary Course of Theosophy* by Emogene B. Simons, translated into Spanish and authorized by the American Section.

Festivities.—Through the initiative of the National President and aided by all the Lodges in Havana, celebrations of all the dates accepted internationally by the Theosophical Society were observed. The large attendance demonstrated the great enthusiasm of the members and their veneration for the great leaders. Our National Convention, which took place on 26th and 27th January 1963, was a clear demonstration of the solidarity and unity, as well as the harmony and rejoicing, among the delegates and visitors from all Lodges of this Section.

Course for Theosophical Workers.—
This course, which began in 1962, developed its activities with a good attendance of students, all members of our Society. The course for the year 1963 was divided into two parts. In both courses experienced instructors and devoted brothers worked very satisfactorily and excellent results were obtained.

Course 1963-1964 Theosophical Society School of the Wisdom, Adyar.—The suggestion from the National President to develop in unison with Adyar the subjects of the School of the Wisdom course, was accepted by all the Lodges of Havana, to begin on the same day as at Adyar, Friday, 2nd October. On Saturdays and Sundays the Lodges hold their gatherings and continue with the subjects already developed during the week. Up to date we have complied with the program, and hope it will render fruitful results.

Social Building.—The collection of voluntary offerings started in 1961 was

completed last year, and early in the present year the mortgage on our building was paid off. An extraordinary National Convention, was held to effect the transfer of the property and its administration to the Cuban Section of the Theosophical Society.

Our Section's Economy.—Our budget, as in previous year, maintains itself well balanced, with a small increase in income during the nine months from January to September 1963. In addition different funds established with voluntary contributions received for Theosophical

publicity and assistance to members of the Theosophical Society and also for improvement in our building, which cannot be implemented due to lack of construction materials, have been reserved; these funds surpass \$2,500.00. The income from annual fees and diplomas fees, during the year to September 30, 1963, amounted to \$1,192.10. including dues to Adyar of \$119.21. Our debt with Adyar is now \$237.66.

CELESTINO AGUILAR MORA, General Secretary.

#### HUNGARY

No Report

#### **FINLAND**

The membership of the Finnish Section is now 388 which means a decrease of 34 members from last year, 9 having died and 44 lapsed. There were 19 new members. The number of Lodges is 23 of which 9 are situated in Helsinki.

Our activities have continued as before in all Lodges. They hold their meetings once a week; some smaller Lodges once a fortnight. The work in the Lodges consisted mainly of discussions based on short lectures delivered by members or on translated articles.

Public lectures, for people not belonging to the Theosophical Society, were delivered in Helsinki every Sunday and the audience continued to increase steadily, being between 50 to 70.

We have continued to celebrate as in former years the Foundation Day of the Society, Adyar Day and White Lotus Day. Our Kalevala Day was celebrated in February and "Old Ones Day" in September. The Annual Conven-

tion was held as usual during Easter time.

Last November seven of our members visited the Headquarters at Adyar and brought us from there greetings through beautiful pictures and words.

The Council meeting of the European Federation in connection with the Summer School was held at Otaniemi Tech Town near Helsinki, from 24th to 30th of June. The Summer School was attended by 160 members from abroad and from Finland and presided over by Mr. John Coats, the Chairman of the National Societies in Europe. To many members who had not attended the Council meeting before it was very interesting to listen to the reports of other Sections and learn about the work in other countries. We also had the opportunity to listen to many fine lecturers from abroad. In the annals of the Finnish Section there is now an annotation of the first Summer School as being to

some extent international. In the history of the European Federation the Council meeting was the first to be held in Finland. In the minds of the Finnish members this being together has certainly left many incentives for future work. With grateful hearts we remember the days of being together.

These days we feel that all the peoples in the world sincerely wish that

peace should be maintained between the nations but, in spite of it, we are afraid for the future. What can we as Theosophists do in order to give people new hope and help? This is, no doubt, our most important problem for the moment.

> Sylvi Horstio, General Secretary.

#### **RUSSIA**

Section Dissolved

#### **CZECHOSLOVAKIA**

No Report

#### SOUTHERN AFRICA

Having lost through sudden death our President, Mrs. Mary Patterson, in May 1962, and our Vice-President, Dr. Rolf Hartig in September 1962, the affairs of the Section were in the hands of an Acting President, stoutly assisted by the members of the National Executive Committee, until the next election in April 1963.

The present Administration then elected is just beginning to get into its stride and is feeling its way to a better insight into the meaning and nature of our work. We feel that a greater depth of understanding is very necessary among our members, and particularly in those of us whose work it is to implement the Theosophical ideals in a practical way. The life-force playing through the Society as a whole sounds in each Section a particular note, and we are trying to discover our own special note and our particular contribution to the work. We are trying also

to see things from the contemporary seeker's point of view, and to develop in ourselves an individual sense of self responsibility in our contribution to the Theosophical effort. Some of us favor the idea of what has been called the new religion of discovery, and are trying, through study and work and a fresh approach to our own lives, to discover truth for ourselves at every step in that unique field of action and opportunity for service which the Theosophical Society offers.

Our thirteen Lodges scattered throughout our wide territory are carrying on their work as best they can and are holding regular members' meetings and also public meetings in all but the smaller centres.

The 1963 Convention.—This was held at the Johannesburg Lodge, and was felt by many of us to have been a signal

success in that, whereas we had during the previous months felt like a rudderless ship after the unexpected deaths of Mrs. Patterson and Dr. Hartig, we suddenly realized that it would be not only necessary but salutary to learn to stand on our own feet, and to produce from amongst our own number the workers and lecturers we needed. We were therefore delighted to find considerable talent within our own ranks and a willing spirit of co-operation and keenness to carry on the work, despite difficulties.

Regional Congresses.—These are becoming a regular feature; the coastal Lodges generally hold their Regional Congress during September and the Transvaal Lodges and the Rhodesian Lodges in October. As this Section covers an enormous territory, it is found to be a good thing for groups of neighboring Lodges to meet once a year to draw fresh ideas and inspiration from one another and to discuss the work generally and their own particular local situations and problems.

We are trying to catch up on our outstanding tasks as time and opportunity permit, and have completed arrangements to bring out our official magazine *The Link* in a new form. It will be more compact and, we hope, more up to date in appearance, beginning with the October issue. We also hope to make of it

something with its own identity and character.

One of the new projects launched during the year called "The Lodge of the Air," is aimed at promoting contact through meditation among our members, especially unattached members who live apart and are unable to attend Lodges. This project is still in its initial stages but we hold high hopes for its success.

On the whole we feel that not enough field work has been done during the year under review, with the outstanding exception of Southern Rhodesia, where field workers have been particularly active and successful under the able leadership of Miss L. M. Benton. In the rest of the Section we are attempting what we feel to be a very necessary consolidation of our work before launching out on a program covering fresh territory.

I think I speak for many of our more earnest members when I say that we deeply feel the need of a clarification of our thoughts and ideas regarding Theosophy and its interpretation in the Southern African Section. We hope through individual thought, group discussion and creative experimentation and meditation to arrive at a clearer understanding of the task before us.

LEONIE DE WET, General Secretary.

# **SCOTLAND**

On 30th September 1963 there were 147 members on the register with eight active Lodges.

Losses by death have been heavy, but against that we have been able to welcome several new members. Lodges report steady and keen interest in the work, and Theosophy and the Theosophical Society are attracting many inquiries.

The Annual Convention was held in Glasgow when we were greatly honored by the presence of Srimati Rukmini Devi as our Guest of Honour. Her talks to members and to the public were inspiring, enlightening and were warmly appreciated by all who attended the meetings.

Throughout the year, Lodges in Scotland have played their part in the Freedom

from Hunger Campaign. Our Commemoration Days have been celebrated in the customary manner, and United Nations Day given prominence in our programs.

At Headquarters in Edinburgh there have been a few innovations this year. On the first Sundays of the month a Study Group for members only is held; an Inquirers' Study and Discussion Group has brought in people in the younger-age section of the public who want more information about Yoga and meditation; another Group with a different audience studies Buddhism. As one result, new life is flowing into the Section.

Touring lecturers during the year included Mrs. E. C. Clarke of Stockton-on-Tees who gave generously of her time and knowledge and was warmly received wherever she lectured. At Easter, an experimental Study Week-end was held, the leader being Miss Ianthe H. Hoskins, M.A., of London. The subject, "Spiritual Development," attracted about 50 members and public and provided stimulating interest and experience. Miss W. B. Knowles, General Secretary for Wales, made her first appearance in

Scotland as a lecturer and was enthusiastically welcomed by both the larger Lodges and the smaller groups she was able to contact.

The Theosophical Order of Service is in process of organization in Scotland and already there are groups and individual members now officially attached to the office in London.

The General Secretary attended the Convention of the English Section at Whitsuntide in London, and the meetings of the European Federation Council and Summer School at Helsinki, Finland, as well as the Summer Schools in Denmark and England. The contacts made during these visits have been helpful in bringing together a closer understanding of our Continental and Scandinavian brothers and their problems.

The general impression is that the Section is recovering slowly but steadily from inertia and becoming more stabilized. We look forward to greater expansion in the coming years, with the help and blessing of our Founders.

JEAN CARSTAIRS, General Secretary.

## **SWITZERLAND**

The number of members in the Swiss Section remained unchanged during the year in question. There were four resignations, one lapsing, one transfer to another Section and five of our brothers entered the Light. At the same time we recorded two transfers from another Section and nine admissions, so that the total membership remained at 203.

Activities relating to lectures, Questions of the Month and Guide for Lodges continued as in the preceding year.

Our financial position is normal,

The Section's activity this year was mostly centred on the organization of the multilingual Summer School held at Leysin, at which 260 persons from 21 countries were present; extensive details appeared in *The Theosophist*. This school was a great success and we are sure that it will contribute to the development of the Swiss Section and to strengthening the bonds between all those who attended. May I remark that the lectures, papers, etc., presented were all of a high standard and extremely well prepared.

G. TRIPET, General Secretary.

## **BELGIUM**

In spite of all efforts our membership continues to decrease due mainly to the dissolution of the Branch Persévérance (Antwerp), whose President, our beloved Brother Wittemans, has passed to the Greater Light; and secondly to the lapsing of many members for not paying their contributions over several years.

Trying to improve matters, we started during this year a new type of Theosophical course, under the title of "École de Sagesse," which has proved successful; it deals with the problems of life from the psychological point of view, instead of the usual phenomenological-

descriptive; the students were enrolled either as regular or as corresponding students. They received brief contents of each lesson. This seemed to receive much appreciation, as most of our new incoming members came from these students. This experiment proved to be positive, giving a new vitality and strength in two branches, and leading to the establishing of a Theosophical Centre in a town where we had till now tried in vain.

A. E. DE PAUW, General Secretary.

#### **INDONESIA**

During the last quarter of the year 1962, we were engaged in the preparation of the second Indo-Pacific Conference, planned to be held in Mid-Java. The Committee had done its utmost to make the conference a success. The month of August 1963 appeared to be the most suitable for the conference.

The Indonesian Section had held a Congress from the 12th to the 15th April 1963. The Indonesian Government had given permission to hold this convention.

After the Congress was over, we came to know that the Indonesian Government had resolved that the P.T.T.I. (Theosophical Society Indonesian Section) would not be permitted any longer to exist, being a branch of The Theosophical Society, Adyar, and that in the constitution of the Indonesian Section of the Theosophical Society acceptance and adhesion to the Political Manifesto, the general outline of the State's Policy, was not specifically mentioned,

Since the prohibition of the Indonesian Section was declared some members of the P.T.T.I. set up a new Theosophical organization as a successor to the former Society. In the beginning we chose the name "Pertiwi," but later changed to wathin." from derived the words "Persatuan Warga Theosofi Indonesia" (The Union of the Indonesian Theosophists). Till the next convention a temporary Board includes Mr. Soesiswo as Chairman, Mr. S. Soejatno Mr. Soetono Secretary and Treasurer.

The difference between the former Society and the present one lies in its acceptance of the State's Foundation and Policy called "Pantjasila" and the Political Manifesto. The objects of Perwathin remain in accordance with the Theosophical Society, but we have had to stress that Perwathin is not a branch of any international Society domiciled abroad,

BURMA 67

From the organizational point of view Perwathin has no connection with the Adyar Headquarters. The inner relationship might still be maintained on the basis of brotherhood.

We are still waiting for the formal legalization of Perwathin from the Government's Ministry of Justice. We hope that before the end of this year, Perwathin will be legalized formally and that the activities of the former Society may be carried on continuously without hindrances.

> Soepadio, General Secretary.

#### **BURMA**

The year under review was an eventful one in the sense that the Golden Jubilee of the Section was celebrated on 14th October 1962 amidst colorful scenes. having happily coincided with the Thadingvut festival when the entire street was lit with multi-colored lights. The Society's own premises were tastefully decorated with fifty multi-colored lanterns and festoons indicating the age of the Burma Section. The large assembly for the occasion included delegates from Man-Tada-U, Taungdwingyi Kyaukpyu. It may be said that this was one of the most representative of the Conventions held in the post-war era.

The Convention address, "The Trend of World Events in the Light of Theosophy" delivered by U Po Lat, M.A., was well received. The symposium organized in the afternoon was very lively and most of the delegates participated in it. The two classical items of music and dance during the interlude contributed by the pupils of the B.E.T. School, one in Burmese and the other in South Indian Bharatanatyam lent color to the celebrations and were much appreciated by the audience. Members and delegates assembled carried the spirit of the Convention along with them pledging themselves to work enthusiastically for the consolidation of the Theosophical movement in Burma and the spread of the message of

Theosophy. Commemorating the occasion a special Golden Jubilee publication carrying the messages received from the International President and other dignitaries and a few articles by fellow members of the Society was brought out as an attractive booklet and was widely distributed both locally and to all the Sections of the Society the world over. The success of the Golden Jubilee celebrations was due mainly to the whole-hearted co-operation and hard work of the special committee set up for the occasion.

The number of Lodges remains the same as in previous years and the slight decrease in membership from 63 to 61 is mainly due to lapses. The two active Lodges of the Section, the Olcott Lodge, Rangoon, and the Lotus Lodge, Mandalay, continue to maintain their standard of activities. This year's Convention at the Lotus Lodge, Mandalay, is in itself an acknowledgment of its growing importance. It is the earnest hope of the Burma Section that this Lodge with its new building and the guidance of such experienced and seasoned Theosophists as U Kyaw Hla, U Maung Maung Hmin, U San Maung and others will grow in strength and usefulness to the citizens of this ancient capital city.

The Blavatsky Lodge, Maymyo, continues to be almost dormant because of the paucity of active members. Now that

the Lodge is put back on its feet and all arrears of taxes have been paid off by the Section, efforts are being made by the Section Council to revitalize this Lodge once again and also to rebuild the wardamaged and dilapidated Lodge premises. I take this opportunity of appealing to our Brothers in Maymyo to come forward and assist the Burma Section in this important work of reconstruction and revitalization.

The Olcott Lodge, the oldest in the country, continued to be active throughout the year. Its Book Depot which is well stocked with Theosophical books continues its useful work in the spread of the message of Theosophy. They have also recently opened a book corner in the Lotus Lodge, Mandalay, for the benefit of the members there. Here also the Lodge building is in urgent need of extensive repairs and the Library which had lost many of its valuable books needs replenishment. Thanks to the financial assistance it has received from the Burma Educational Trust, they have a plan on hand to renovate the Lodge premises and make the Library up to date.

The B.E.T. School run by the Olcott Lodge records a steady growth in strength and usefulness. The institution has been registered under the new Act of the Revolutionary Government and it is hoped that it will continue to play an important part in the life of the people of the country.

Bro. San Hla in spite of his indifferent health continues to be the driving force of the Burma Humanitarian League. This is an important part of our work and every Theosophist is expected to give a helping hand in this noble work. Much of the future of the League depends upon the intensity and extent of good work that we Theosophists do in this connection. The call of the Masters for workers is always there and it is up to every one of us to make the best of it.

The T.S. land at Thingangyun, however, still remains occupied by squatters and it is my earnest wish that some concerted action will be taken to redeem the land and find a suitable purchaser for the same. It is up to the in-coming Council to tackle this problem effectively and solve it instead of passing pious and well meaning resolutions about this matter year after year.

I wish to record the passing away on 20th July 1963 of Miss R. Samuels, who was for many years one of our earnest members. May her soul rest in peace.

Our General Secretary was called by the Revolutionary Government of the Union of Burma to join the official delagation to the United Nations General Assembly Session commencing on 17th September 1963 and I have therefore been called upon to prepare the Annual Report of the Section.

Let us dedicate ourselves heart and soul to make Theosophy a living force in our lives and become centres of peace and love radiating the message of the Universal Brotherhood of humanity so that the Commonwealth of Nations and a World State may become a reality in this world!

T. S. RAMANATHAN, Asst. General Secretary.

### **AUSTRIA**

This year activities continued in the usual manner in the four Theosophical "Local Groups" of Vienna, Graz, Bruck and Linz. In Vienna were 4 Lodges and a new and active Centre (135 members), in Graz 4 Lodges (100 members), in Bruck 1 Lodge (13 members) and in Linz (9 members). All of them endeavored to carry on the spiritual level of the work.

In Vienna some stalwart members tried to stir up the attendance through publicity of our organization. We hired a public lecture-room in a more favorable part of the town and invited two Theosophical speakers with academic titles to deliver lectures on two attractive topics: "Messages from the beyond—rightly understood" and "Europe and Asia: a polarity". The lectures were delivered in German and were announced by printed placards and special invitations sent to different organizations with aims similar to those of The Theosophical Society.

The Local Group of Vienna arranged, in the course of 7 months 26 public lectures by 26 speakers. Also in Vienna 16 Lodge meetings were held by studygroup "Einheit," 14 by study-group "Gnosis," 6 by study-group "Aletheia" and 6 by "Orpheus". A new Centre which is to become a Lodge shortly, arranged 18 Theosophical information meetings with discussions for interested people.

The Local Group of Graz arranged fortnightly public lectures and meetings in Lodges "Blavatsky," "Paracelsus," the "Art Lodge" and "Leadbeater". In Bruck and Linz, fortnightly members' meetings took place. In the course of the year three of our Local Groups had the pleasure of welcoming Herr Karl

Schmid from Passau (Germany) as a lecturer, who was 30 years ago a member of our Section and is still an old and good friend to many of us.

Our membership last year was 270; this year it is 257. Though we had 10 admissions and 1 readmission, an equal number (11) resigned, 6 died and 7 had to be dropped as lapsing.

With the consent of the German Regional Committee of The Theosophical Society in Europe the Adyar-Verlag (managed by Dr. Norbert Lauppert) in Graz has published German translations of 3 books: *Man, His Origin and Evolution*, by N. Sri Ram, *This Ordered Universe*, by Corona Trew and *The Bridge of Consciousness*, by Phoebe and L. J. Bendit. The manager reported that the result of the business was relatively satisfactory this year.

The major part of our work in the Section was done again by organizing the German Regional Summer School (the 11th in its series), in the beautiful hamlet of Pichl (Austria), near the well-known winter sport place of Schladming. The success of this annual social enterprise is proved by the constantly increasing number of delegates of the German-speaking people of the European Federation of the Theosophical Society.

In spite of the International Multilingual Summer School held in Leysin (Switzerland) from September 14th to 21st this year, the Summer School in Pichl (8th-15th September) had 64 visitors out of the 84 originally booked. The leading topic was: "Why Form a Nucleus of Brotherhood?"

The Chairman of The Theosophical Society in Europe, Mr. John Coats, presided over the School. His predecessor, the original founder of the idea of national Summer Schools, Mr. J. E. van Dissel and his wife Mrs. Adele van Dissel, were warmly welcomed as visitors. Besides the Austrian members, there were visitors from Germany, the Netherlands, England and Switzerland and also some guests from other countries.

Fritz Schleifer, General Secretary.

## **NORWAY**

Last year was a very serious year for the Norwegian Section. At the beginning of 1963 we held the election of the General Secretary, and Ernst Nielsen was reelected for the next three years. But soon afterwards our popular General Secretary passed on to greater Light after a short illness, on 15th April, at the age of 62. This was a great loss for the Norwegian Section, and a shock to the members. The sympathy and loving thoughts from brothers in many Sections was a great help during a difficult time.

Another election for the General Secretary took place in June, and Mrs. Ruth Wessel Nielsen was elected.

It was in 1913, 50 years ago, that the Norwegian Section was formed, and this was celebrated during the Annual Convention this year on 8th September at an inspiring meeting in harmonious surroundings. Members from other parts of the country were also present.

A Jubilee Address on "How the Norwegian Section was formed" was given by Mrs. Ruth Wessel Nielsen. We received congratulations, flowers and good wishes from a number of Sections and friends on the occasion.

At the end of September we had a very highly appreciated visit from Dr. Hugh Shearman, who lectured in Stavanger, Bergen and Oslo. He spoke to the public on "Yoga," and to members on "Occult Revelations" and "Can Human Immortality be proved?" His visit was a great stimulus to the Section.

Our magazine *Teosofi i Norden* which is published in co-operation with Denmark and Sweden as a Scandinavian magazine, has been in existence for three years, and has proved itself to be a success both spiritually and economically.

RUTH WESSEL NIELSEN, General Secretary.

# **EGYPT**

No Report

# **DENMARK**

No Report

### **IRELAND**

This report dates from last year's Convention held on June 23rd and 24th. Mr. John Coats, Chairman of the European Federation, was our Guest Speaker. It was a very happy and interesting Convention.

During the year under review we have had few visiting lecturers. We welcomed Miss Winifred Knowles, General Secretary of the Welsh Section, also Mrs. Hilton from England, and Dr. H. Shearman from Belfast. Other speakers were Mr. R. Morrison, Miss D. Emerson, the Rev. R. Buckman, Miss J. F. Hoy, Mr. C. Parfitt, Mrs. Hornidge, Mr. J. Dollard, and Mr. A. Finlay. This year the lectures have been shorter and there has been more discussion afterwards. We have also had several symposiums and tape recordings.

In the Dublin Lodges the public meetings have been fairly well attended. The very cold weather in the winter and later a bus strike reduced our attendance considerably. but nevertheless meeting was held and perhaps the smaller number conduced to an intimacy which is not possible in larger numbers. The number of the public attending our meetings is very low and we would like to see more people from the outside world. Members' meetings for study and discussion continue and are both interesting and friendly. The meditation group continues and is well attended, also a healing group under Mr. J. Dollard has been started.

Our library this year has been augmented by 170 books left to us by Mr. Pielou, many of which are rare and out of print.

This year White Lotus Day meeting was especially lovely and was quite well attended. The room was decorated with white flowers and we had the usual read-

ings and a short talk on H.P.B. and her work.

At the Annual Business Meeting of the Dublin Lodges I was nominated as General Secretary, and Mr. Richard Morrison as National Treasurer. There were no other nominations.

Our Magazine Theosophy in Ireland continues with three issues yearly. The financial difficulties of keeping this magazine going continue to grow and it is run at a loss as you will see from the Treasurer's report. I do urge members to try and increase its circulation and to add a donation to their subscription which is very low.

We received a legacy left to the Irish Section by Mr. P. L. Pielou for which we are deeply appreciative. It will help to put the Section on a more secure financial footing which was always Mr. Pielou's aim when he was National Treasurer.

During the year an attempt has been made to organize the T.O.S. in this country. Many members are already serving in existing altruistic groups. There has been activity in the departments of animal welfare, healing, antivivisection and vegetarianism, also the Freedom from Hunger Campaign, to which latter we have sent a substantial cheque.

Membership.—Last year two of our most valued members passed to the higher life:

- (1) Lawrence Ryan, Hermes Lodge, who passed on last September. He had been a valued member since 1939. He was widely read and a very deep thinker and spoke with real authority and sincerity on a great variety of subjects. He is greatly missed from our gatherings.
- (2) Our much beloved late National Treasurer, Pierce Leslie Pielou who passed to higher life on 4th December 1962 in his 93rd year, He was a

Founder member of our Section. He was a great scholar and writer and a staunch member of the Society for more than 50 years. All through his long life he worked untiringly for Theosophy. Though we miss his outward presence and his wise council we feel that he is not very far away and that he still guides us in many of our deliberations.

Eight new members have joined, which makes an increase of six during the year.

The General Secretary represented the Irish Section at the international Congress of the European Federation at Swanwick. I would like to thank those who have helped so splendidly in the work of the Lodges during the year. I hope that the years ahead may see a greater strength in the Irish Section and that members will realize more and more the responsibility of membership. Our membership is small but we work with the knowledge that no effort is ever lost, and during the coming years may we bring Theosophy more fully into everyday life and thought to the greater service of mankind.

EVELYN O. HORNIDGE, General Secretary.

### **MEXICO**

No Report

## **CANADA**

In central Canada Theosophy received extensive and favorable publicity during the past year. There is an ever increasing interest-or perhaps curiosity-in Reincarnation and Karma and these two subjects were presented in a Radio interview with the General Secretary early in 1963. In July, prior to the visit to Toronto of our President, Mr. Sri Ram. one of the largest Toronto newspapers carried a four-column interview with the General Secretary on Theosophy and the Theosophical Society with stress on the concepts of Reincarnation and Karma. This interview attracted the attention of the producer of a popular television program which covers the Province of Ontario and part of Quebec, an area with a population of about eight millions. Two days before the arrival of Mr. Sri Ram, the General Secretary was interviewed on this program, and again the emphasis was directed to Reincarnation and Karma. It was felt that this interview aided the extensive publicity arranged by Toronto Lodge for the visit of the President as on the night of his public lecture the Hall was crowded for the first time in many years with many visitors coming from cities and towns near Toronto and some from Montreal 350 miles away.

Later the same newspaper carried a long interview with a travelling lecturer to Toronto Lodge, the Reverend Harold Boon, a member of the Society and a former pastor of an Anglican Church in Philadelphia. This interview dealt with Reincarnation as a Christian doctrine which had been the subject of Dr. Boon's thesis for his degree. Many newcomers were attracted to his talks.

Through the generous contribution of a former member some 600 copies of that excellent book Reincarnation: An Fast-West Anthology were distributed free of charge to public and institutional libraries across Canada. The Society did not share in the cost of this, but undoubtedly has benefited from it. The Canadian Section later financed the free distribution of 400 copies of the new edition of The Gnosis, or Ancient Wisdom in the Christian Scriptures by William Kingsland to libraries in Canada; many librarians, in expressing their thanks for the book, mentioned that there was a growing interest in this subject in their community.

It would have been very gratifying to report that all this publicity resulted in an increase in membership, but perhaps this will come later. Although there were 21 new members and 13 re-instatements, there were 29 lapsings. Our membership is now 307 as against 306 for last year.

The work of our fifteen Lodges has gone on steadily during the year and the public lectures are attracting more newcomers. The Secret Doctrine is the main study book in several Lodges and the keynote of the work across Canada has been the Theosophy of H. P. Blavatsky and the Masters.

Dudley W. Barr, General Secretary.

### **ARGENTINA**

In general the Theosophical movement in our Section is improving steadily, the diminution in the number of Lodges and the decrease in the number of members do not reflect the reality for the former figures were incorrect because a large number were incorrectly identified with our movement. It is almost certain that two more Lodges will have to be dissolved, since they are not truly identified with the Theosophical movement. Some other Lodges have ceased to exist on the same grounds.

On assuming the General Secretaryship for the first time in 1957 I informed our beloved President that there would probably be during my term of office some decrease in the number of Lodges and that the membership would fall to some extent, because I was already aware of the fact that there were Lodges and members who had no interest in our ideologies, nor did they comply with our Statutes. It is not advisable to allow irregularity in the Section, disregarding the Statutes and

diverging from the established Objects. Some of the Lodges even from the moment of their formation, were never really genuine, having been started for either election purposes, or, because of disagreements among the leaders, were made to separate into new Lodges. Members have also noted that there are localities where Lodges have been formed in excess of the need and are asking why. Buenos Aires, for example, we now have 17 Lodges where there were 26. Rosario had 9; now there are 6. This action of the Executive Council was an endeavor to vitalize the Lodges; in some cases we succeeded; in others the contrary has happened—they have succumbed. There are some Lodges which vegetate. Nevertheless in general we can affirm that the Lodges existing today are very active and, being basically united, attempt to increase membership in the normal way, slowly and firmly.

We organized the first Summer School in Latin America during the year.

It was conducted by our Section and was held from 27th January to 5th February, and was a great success. We are now making plans for the second Summer School, to be held following the regular annual Convention from 15th February 1964.

The 45th Annual Convention, as in former years, was held in San Rafael. Two members from the American Section were present and the Congress for the first time was for a single day.

Mrs. Vera Boardman of the American Section accompanied by the General Secretary made a tour of different localities in our Section. This tour had a good influence on our members.

During the current year new elections for the General Secretary were held and Bro. Rimini was elected by a large majority.

The General Secretary, after re-election, visited the Lodges, especially the more distant ones. He intends visiting all the Lodges in the Section during the coming year.

The project of obtaining our own premises has received a good impulse this year. The property in Buenos Aires acquired in 1960 has been sold, in order that we may acquire new and adequate premises suited to our needs and also more centrally situated. We already have a sum of \$500,000, so that only \$500,000 more has to be raised.

In Mendoza also we have premises in which the Mendoza Lodges meet for the most part, and here too steps are being taken to sell it and acquire a new and adequate place suited to the needs of the Lodges there. The property belonging to the present Lodge Gnosis in Rio Cuarto is a gift. It was formerly the property of Mr. and Mrs. Ushman who recently transferred it to the Section.

We have just published the two volumes of the History of the Theosophical Society, a project that occupied a good deal of time and we are thankful that all our Spanish-speaking members will have an opportunity of reading it.

We have also printed 3,000 additional copies of the Letter of the Mahachohan for distribution.

We shall shortly be sending to the printers the leaflet *To Those who Mourn*, and *The Doctrine of the Heart*.

We have subsidized the printing, in co-operation with other Spanish-speaking Sections, by taking 700 copies of each of the books issued. We have already received the first title, and are looking forward to receiving the second. In this matter we are indebted to Bro. Ballesteros, because in order to avoid exchange costs we are arranging to send to Colombia the History which they are buying from us in exchange.

We have sent to all Spanish-speaking countries a quantity of booklets including one entitled *Theosophy and the Theosophical Society* of which we have printed 10,000 copies.

The Section's magazine *Teosofia*, which is issued every second month, is sent to all Spanish-speaking countries.

The Section has contributed generously to various funds, especially to the Fund for Tibetan refugees.

We are also sending our delegate to the Inter-American Theosophical Congress which is to be held in Mexico next November.

In our Section now the dues are \$240 per annum, that is to say, \$0.655 a day; low enough to make it possible for an unemployed person to pay his dues to the Section, which means that those who leave us or lose interest do not do so because our dues are too high. More often this is due to unstable and weak adherence to the Society.

Prospects for our immediate future.—
I can see much interest being roused in

BRAZIL 75

persons of the middle class, and there appears to be a possibility of forming Lodges in other localities, apart from new individual members who come in. Those who are firmly established are most enthusiastic and very understanding and are endeavoring to co-operate and serve to the best of their capacity.

In general it may be said that our movement is strong and definitely progressing; our Section is alive, awake, and active in serving our ideals throughout the whole of South America.

NAZARENO E. RIMINI, General Secretary.

## CHILE

No Report

### BRAZIL

Owing to the illness which obliged our National President, Brother Tenente Armando Sales, to temporarily withdraw in October 1962, the Vice-President, Bro. Joao B. Brito Pinto, assumed the direction of the Section.

Theosophical work in Brazil is working smoothly, following the rhythm of former years, some Lodges presenting this year even better results.

Membership.—There is a decrease of 45 in membership over the year, chiefly because one of the Lodges, whose formation was found to be out of order, had to be closed down. We have 939 active members on our rolls as on 30th September 1963.

The Federation of Lodges in the State of Sao Paulo is now under the direction of Sister Carmen Penteado Piza, who was elected in 1962 in place of Brother Gastao Sales whose last services were in connection with making possible the completion of payment for the headquarters premises, which is now a valuable property, right in the centre of the city. It has become the Headquarters of the National Section, and is used by seven

Lodges, besides allied activities, the T.O.S. and the Service for the Spread of Theosophical Books. The present directorate is working in co-operation with the heads of the Lodges under its jurisdiction, maintaining good contact with the members, planning visits to Lodges in other cities in the State, sending speakers from the Capital, and obtaining the collaboration of dedicated associates for services which otherwise would need to be paid for, such as cleaning, the decoration of the Headquarters, etc., which incidentally has much improved in its appearance.

Although no report has been sent by the Federation of Lodges in the States of Guanabara, Rio De Janeiro and Espirito Santo the latest information with regard to these Lodges is that the Federation is functioning at its headquarters in Guanabara and other places. The premises are maintained with the collaboration of various members. They are borrowing money in order to acquire this magnificent headquarters which they treat with the utmost care.

Apart from the increased cost of publication, we continue to issue O Theosofista, our

official organ, for circulation to Lodges, associates and others who are interested. We must not fail to mention Brothers Luiz Cristone, Rene Sales and Joaquim Gervasio de Figueiredo who are responsible for bringing out the magazine, and distributing it.

The Department for the Service for the Spread of Theosophical books which has now been in existence for six years. has increased its activities and thanks to the dedicated and intelligent guidance of its Director, Sister Carmen Penteado Piza, applies the profits to publish other works which are of interest to students of Theosophy in general. Thus, in the period under review, it has published the following books: A Yoga of Light by Geoffrey Hodson, translated by Mario A. Costa, of Porto Alegre; a new edition of At the Feet of the Master; and a second revised edition of the Manual of Information for F.T.S. So far ten works have been published and 34,000 copies have been printed. All possible efforts are made to sell these books, both in the Lodges and in the Capital, as well as in the other States. We have also begun placing them in the libraries of this city.

The work of the Department of Public Relations continues under the direction of Bro. Alcyr Anisio Ferreira, who as Vice-President of the Federation of Lodges in the State of Sao Paulo, continues his dedicated work, the most important being the publication in a Sunday paper, O Diario de Sao Paulo, one of the principal morning papers in the State, of articles on Theosophy, including translations of articles from various Section organs. His articles also cover the activities of the National Section and of the Lodges in the Capital.

Under the direction of Sister Maria Jose Abyaza, the Art Department promotes the organization of artistic programs and meetings during the year. She also organizes other activities such as a course in painting, a course in rhythmic gymnastics, and also a course of rhythmic and expressive dance, including folk dance, for young women and children, the idea being to bring back the dance to its true place in life so that it may contribute to ways of culture and beauty.

About four years ago Bro. Armando Sales acquired a piece of land situated some 27 kilometres from the centre of the city, with the idea of giving to our country a centre for Theosophical work and other institutions affiliated to Theosophy. The centre has been called "Raja Theosophical Centre" in honor of Brother C. Jinarājadāsa, who was so greatly attached to our country. Our National President is personally superintending the plans and the work of construction, which is already well advanced; the buildings may be ready for use even before the expected date. Three buildings are being erected at this Centre. One will be residential where some of our members, whose financial condition and qualifications permit them to dedicate themselves entirely to service, will reside. Two other buildings will be devoted to Theosophical and other activities. In spite of his weak state of health, Bro. Armando manages to be present where the work of construction is going on, for this special work is dear to him as much as the affairs of the Society.

Our Section had the great satisfaction of receiving a visit from 5th May to 2nd June of Mrs. Vera Boardman and Mrs. Gladys Goudey, both dedicated workers and resident at Ojai, California. Sister Vera Boardman, who speaks Spanish fluently, devoted herself to visiting the Sections in Central and Latin America, their extensive tour covering all the South American countries. They were well received in all the Lodges and they created strong links with our

ÌCÉLAND 77

members by their warm sympathy and brotherly affection.

The Theosophical Order of Service is an autonomous organization, and sends regularly an annual report for inclusion in the general Section report; its activities in the period under review show some expansion. The work is confined to two departments, namely, Social Assistance, and Devotional work. Under Social Assistance 18 families are helped including 58 children. In this we receive the co-operation and assistance of other spiritual organizations. The Devotional group continues to meet every week for its Healing service.

It was suggested at the meeting of our General Council and unanimously approved that a convention be held in 1964, at a date to be fixed later, in this Capital city at which an attempt may be made by the leaders of the Section, the Federations and the Lodges, together with other organizations or their representatives, to study the question of making more dynamic the work for the Theosophical Society and its allied activities, and to consider the rules of procedure for practical administration; and above all, to foster greater unity for the work in our country which, by reason of its extensive area, makes it difficult to deal with effectively.

JOAO BAPTISTA BRITO PINTO, Acting General Secretary.

### **BULGARIA**

No Report

## **ICELAND**

Theosophical work has been going well throughout the season and many new members joined our section. On 1st October 1962 there were 549 members, 43 newcomers joined the section, three of them re-entered, seven members died and two left the Society while another was taken off the records. The net gain in number is therefore 32 new members making a total of 581 members. Apart from this a large number of people who do not join our organization but who sympathize with the Society and its objects render us valuable assistance in various ways.

The Annual Convention of 1963 was held from 10th to 12th August. The President of the Society, Mr. N. Sri Ram,

presided. He also gave a public lecture in Reykjavik on the topic: "Theosophy and the Modern Outlook on Life" to an audience of 240. His visit to the Section has proved to be a great impetus to the work.

The letters from the General Secretary appeared seven times during the year. They are a useful link between the General Secretary and the members because they are based on problems that members often have to deal with and questions and ideas which appear when discussing with them.

Several public lectures were given during the season and Lodge meetings that were open to members and nonmembers alike were held once a week. Mr. Grétar Fells, former General Secretary, delivered several lectures on Theosophy over the radio, which have been of great value for the cause.

Gangleri, the organ of the Icelandic Section, has a circulation of 1,500 copies. Our intention is to make the magazine a publication dealing with spiritual matters in general in such a way as to appeal to the general public and we are trying to increase the number of copies sold to 2,500. Thus our magazine would become a much more powerful organ for the propagation of the Theosophical view of life.

The Theosophical Society in Iceland maintains an extensive instruction course in Theosophy. Two study groups were active throughout the season. Mr. Grétar Fells directed a study group called "The Black Rose" which dealt with psychic powers and met twice a month. The General Secretary directed a study group called "The White Circle" which met three times a month and discussed subjects like "Theories on the Nature and Reality of Other Planes of Existence" as well as "Practical Instruction in Meditation". Diapositive slides were used extensively as a means of instruction.

The main lecturer of the Icelandic Summer School this year was Mr. John B. S. Coats, Chairman of the European Federation, who gave six lectures. Eleven lectures and short talks were given by various members of the Icelandic Section who attended the Summer School. One evening was dedicated to the World's Religions and another evening to the History of the Theosophical Society and a social meeting was in the hands of the Young Theosophists. The theme of the Summer School was "Theosophy and the Future".

Dr. and Mrs. L. Gordon Plummer from the United States visited our Section in May. Dr. Plummer gave two lectures

and the Section received from him some tape recordings and diapositive slides dealing with metaphysical subjects.

The Lodges also carry on a great deal of instruction in Theosophy for members as well as the general public. The open meetings have never been so well attended before. As an innovation an experiment was made during open meetings to invite the audience to ask questions. Those questions were then either answered directly at the next meeting or indirectly by discussing the answer in the lecture on the following meeting. From time to time the General Secretary followed up the main lecture with a short talk on some highly metaphysical subject.

The Chairmen of the Lodges met as usual to discuss "How to improve the Lodge work". This year's discussions were focused on the duties of the Chairman of a Lodge and others holding office in a Lodge. They also discussed how each Lodge should develop its own individuality by means of planned study and by acquiring a fixed nucleus of volunteers who were ready to work for the Lodge.

This season two Lodges celebrated their 50th anniversaries. They were the Reykjavik Lodge on 17th November and "Systkinabandio" (The Fraternity) in Akureyri on 20th April. The Rev. Jakob Kristinsson, the first General Secretary of the Icelandic Section, celebrated his 50th year of membership of the Society. He is a member who has been longest in the Society in Iceland.

The Young Theosophists held nineteen meetings. Four Young Theosophists translated Ramacharaka's book *Raja Yoga* which they read and discussed during their meetings. The Young Theosophists have acquired a Trans-Atomic-Detector from the De La Warr Foundation in Oxford. This is a scientific instrument for the study and research of etheric phenomena.

The Theosophical Book Service has done a great deal of valuable work. Procurement and import of Theosophical books and books dealing with spiritual matters increased enormously this year and the final objective is to open our own Theosophical Book Shop. It is with this in mind that we are steadily increasing our stock of books.

The financial side of our Section has often been a source of difficulties, although everything has been going on smoothly for the last two or three years. Increased activities demand more capital and in order to strengthen the financial position of our Section, a trust fund has been founded, the two primary objects being:

(1) to try to raise enough money to build a new Theosophical Headquarters in Reykjavik with a large lecture hall; and

(2) to pay the expenses involved in employing a member to work permanently for the Society, so that he could make his living by working solely for the Section,

for we cannot depend entirely on volunteers to do all that is required.

A great need is felt for the composition of simple courses and lessons in Theosophy for small Lodges where the members are mostly beginners, regardless of the amount of work required. The subject of such courses would, of course, have to be directly in line with the modern way of thought in this century where science has become almost a religion more than anything else. A great deal of energy must also be spent on checking wrong ideas about what Theosophy really is. Misunderstanding about the nature of Theosophy can prevent good people from joining the Society. The future work of the Society must mainly be to attract the right kind of people who are prepared to give rather than to receive, or who come to receive in order to be able to give later on.

> Sigvaldi Hjálmarsson, General Secretary.

## **SPAIN**

No Report

# **PORTUGAL**

During the year we have maintained our work with true enthusiasm. We celebrated all our great festivals, such as Founders' Day, White Lotus Day, and so on, and held public meetings at the Headquarters every fortnight.

The work in the Lodges proceeded with fortnightly or weekly meetings. Unfortunately Lodge "Horus" remains dormant, as announced in the last report; Lodge "Pitagoras" was almost dormant

because of the temporary absence of members, but its President, Dr. Maria da Gloria Firmino, expects to reorganize the Lodge in order to enable it to hold regular meetings next year. We are happy to state that the Lodge of Lagos (Algarve) "Amor, Verdade e Beleza," which began its activities in February 1962, continues its work with great enthusiasm.

Among the important lectures delivered during the year under report, we must mention a study of the "Divine Comedy," by Mr. Chaves Cruz; another on the Dead Sea Scrolls, by Mr. Jorge de Araujo; some lectures on Portuguese culture, by myself and two lectures on the "Spirituality of Music," by Dr. Maria Beatriz Serpa Branco, our Vice-General Secretary.

Five members of the Portuguese Section, including myself, were able to attend the International Week at Huizen and other members had the opportunity of attending the International Meeting in Switzerland.

During this year we have had the pleasure of a visit from Mr. John Coats, who was kind enough to deliver lectures at the Headquarters in Lisbon, and helped in the work of the Lodges in other towns of our country. His kindness and warm words charmed the members

of our Section, who are looking forward to another opportunity of listening to the Chairman of the European Federation.

Concerning membership, we report the following: 25 new members were admitted, 2 re-admitted, but we lost 2 by death and 9 by resignation; the total number of members increased from 198 to 214.

On 19th October 1963, we began our Theosophical year, with public meetings every fortnight.

Regarding the financial situation, the Section continues with the usual difficulties; financial support comes chiefly from a few devoted members. Nevertheless, we continue our work with the same enthusiasm for the great Theosophical Ideals.

Delio Nobre Santos, General Secretary,

## WALES

The work begun last year continues. After an arctic winter, during which meetings continued wherever possible, new life began in the Lodges in the spring. In North Wales, Rhyl Centre was formed in October 1962. In South Wales, Barry Centre was formed in March 1963. Dormant Lodges are being helped to reawaken and interest in Theosophy is being stimulated. The number of members remains the same and it is hoped it will improve gradually.

Much necessary work on the Headquarters Building has been done and more work is being carried out.

The General Secretary has undertaken several lecture tours in many parts of the British Isles as well as monthly visits to Lodges in the South Wales area.

The Theosophical Order of Service work continues actively, particularly in collaboration with the Freedom from Hunger Campaign. Members in all parts of the Section are helping in this great world effort which is a challenge to all thinking men.

Our Convention theme "Theosophy, a Living Organism" will be a vital note for the Section during the coming months. As Giordano Bruno said "It is better to see the great and fail to achieve it, than never to see it, nor try to achieve it at all."

Winifred B. Knowles, *General Secretary*.

### POLAND

No Report

### **URUGUAY**

Our Section has eight Lodges which work normally and hold consecutive weekly meetings. Each Lodge draws up its program in accordance with the wishes of the majority of its members, all of them showing a notable expression of collaboration among themselves and co-operating with the General Council in all its suggestions.

We regret to report that Vidya Lodge is in Pralaya; it is hoped that some enthusiastic members will soon re-start the activities of this group for it is one of the oldest Lodges of the Uruguayan Section.

Our beloved Brother Juan P. Baridon, founder of Karma Marga Lodge, passed away. We are grateful to him for his constant collaboration and for the donation to our library of all his Theosophical books.

The most important event during the year is that our Government has granted us legal status. This means that our members will be in a position to effectively fulfil a more fruitful task.

As far as our economic situation is concerned, we are progressing slowly. With contributions from almost all the members, we have closed the first financial period with a total of \$7,400.00, actually about \$435.00 (U.S.) which we will keep with the object of making real our dream of having our own head-quarters. We hope that those Brethren who will come to work in the administration of our Section, will continue to

appeal periodically for economic help in order to attain our goal.

Regarding Theosophical activities, it can be said that all the Lodges have attempted to do their task efficiently. We must also mention the magnificent work done by the young people, many of whom have taken active part in our work.

During the middle of this year 1963 we received a visit from Mrs. Vera Boardman and Mrs. Gladys Goudey who established strong links of sympathy. Sister Vera Boardman delivered some lectures on Theosophical subjects which were attended by many people and received unanimous approbation.

We are making efforts to be represented at the first Inter-American Theosophical Congress to be held in Mexico City in November, in order to exchange ideas with the other American Sections.

During the period under report we started our activities with 125 members. We closed this period with 133 members.

We must also mention the groups of workers who represent the hope for a better future. There is a ladies' group which organizes meetings for all the members of the Section in order to know each other better; a group of young people trying to organize the Young Theosophists Group and another group which will soon prepare the official Bulletin and the publication of interesting booklets.

VICTOR ALVAREZ BISBAL, General Secretary.

## PUERTO RICO

The highlight of the year was the visit of the President in early August. Mr. N. Sri Ram came to San Juan, following his tour in the United States, and gave three public lectures and a talk to members. The threat of a hurricane did not prevent the audiences from turning out to full capacity of the Society's headquarters. Very good publicity had been secured in the newspapers and, in addition, an interview was broadcast over the government television station. This was the second visit of our President to our small Section; and our members were genuinely grateful that he was able to be with them for a few days.

The annual Convention of the Section on Easter Sunday is always a highlight of the year; and this year was no exception. After fourteen years of service to the Section, our energetic General Secretary, Sra. Esperanza C. Hopgood, declined to stand for office again; and in her place, Sra. Carmen G. Ballard was nominated and elected during the business session of the Convention. The members expressed their gratitude to Sra. Hopgood for her long years of work for Theosophy in this island.

With regard to activities, Sunday morning meetings at Headquarters for members and the public continue. We are trying out new types of programs and are hopeful that the attendance will increase. Every Sunday morning there is a radio broadcast by Srta. Stella Plard over a San Juan station on a Theosophical theme. In recent months a discussion group led by Mr. S. D. Ballard has been meeting on a weekday afternoon.

Efforts are being made to revitalize the work of branches in other parts of the island. Sr. Miguel A. Charneco periodically visited during autumn and winter months the branches and conducted a study course. More recently the first of a series of occasional meetings with members in other branches was held. The programs for these special meetings are prepared and presented to the selected branches by members in San Juan. first of these meetings proved very successful in terms of enthusiasm and attendance. These efforts, besides other plans, are much needed if there is to be an increased awareness on the part of the members of the Theosophical Society and of their participation in an effort which is both local and worldwide.

The mimeographed Section journal, with articles from recent Theosophical magazines of other Sections translated into Spanish, is sent free to members in Puerto Rico and in the other Spanish-speaking Sections. Incidentally it is interesting to note that the Spanish-speaking members constitute the second largest language group in the Society.

Finally, mention must be made of the passing of the senior member of the Section, Sr. Augusto J. Plard, who was a member for more than fifty years and one-time General Secretary. Sr. Plard was an example to all in his unswerving dedication to the work of the Theosophical Society.

CARMEN G. BALLARD, General Secretary.

## RUMANIA

No Report

### YUGOSLAVIA

No Report

#### **CEYLON**

The Section consists of seven Lodges of which three are out of Colombo. Lanka Lodge and Lotus Lodge have been quite active during the year and are responsible for a substantial amount of the work of the Society in the period under review.

At Lanka Lodge, Mr. N. K. Choksy, Q.C., conducted a series of talks on Dr. Hugh Shearman's *Modern Theosophy*. He also gave a series of talks on Mr. Geoffrey Hodson's book *Reincarnation—Fact or Fallacy*. Mr. F. Rustomjee conducted a series of study classes on Madame Blavatsky's *Key to Theosophy* and is now giving a series of talks on *The Secret Doctrine* at Lanka Lodge.

Members received periodically a news sheet entitled *Notes to Members* through which the Society was able to keep in touch with a number of members who were unable to attend meetings due to their residing at a distance from Lodges.

A development of significance in recent months is the establishment of a Theosophical Order of Service with the special purpose of promoting religious harmony among the adherents of the various world religions existing in our country. Relations between Buddhists, who constitute the majority of the people of the country, and the adherents of other religions, have not been entirely harmonious in recent years and have shown signs of further

deterioration. To meet this situation the Order of Service has inaugurated an island-wide movement to promote happier relationships among the adherents of the various religions which constitute our heterogeneous community.

The movement is gaining momentum and has received publicity in the Ceylon Press. Special articles indicating the scope of its activities have appeared in the two English language newspapers which have the largest circulation in Ceylon, the Ceylon Daily News and The Times of Ceylon.

The broad plan of action which the Order of Service has formulated is being carried out into effect.

Miss Daphne Darrock from Auckland, New Zealand, passed through *en route* to Karachi. We also recently had with us Miss François Vetter, a member and a distinguished Dutch cellist, at present resident in the U.S.A. who gave a talk at Lotus Lodge, Veyangoda, during her brief stay in Ceylon.

There was a slight drop in membership during the year under review, but with the establishment of the Theosophical Order of Service and the enthusiasm with which its activities have been received, it is anticipated that there will be a number of new members joining the Society this year.

D. L. F. Pedris, Acting National President.

## GREECE

The Greek Section continued its work within the framework of the pursuit of Theosophical aims and ideals of the Theosophical Society. Liberty of thought is considered to be an indispensable prerogative of every Theosophist and essential for World Brotherhood, the final objective. We are endeavoring to spread these ideals to the broader public through our quarterly Magazine Ilisos. Our Lodges are endeavoring through their meetings to cultivate these ideals. At the same time we are studying the teachings of Theosophy

on Evolution, Natural Laws, Reincarnation, Karma, etc., as well as Greek and Indian Philosophy. We are studying the talks of Mr. J. Krishnamurti also.

There are in all six Lodges holding their meetings in Athens and four in the Provinces. The total membership amounts to 245 of which 165 are in Athens and 80 in the Provinces.

Due to the small number of members our financial standing is naturally difficult always.

> K. Melissaropoulos, General Secretary.

## CENTRAL AMERICA

No Report

# **PARAGUAY**

No Report

# THE PHILIPPINES

Every time we submit an annual report of our Section of the Theosophical Society, we are keenly aware of the fact of the fast tempo of change and movements all around us, which reminds us, by contrast of how comparatively slow is our progress in the work to which we devote practically all the resources of time, effort, as well as material means that we can spare from the ordinary necessities of daily living. Repeatedly we ask the searching question: "What have we accomplished?" We forget that much of it is no doubt in the realm of the occult and

intangible—minds illumined and hearts ennobled through contact with Theosophy and the Theosophical Society. At any rate we need have no anxiety for we know that the evolutionary process is inexorably working on the side of our noble cause. Of course as usual our preoccupation is with the fruit of action, forgetting that what should preoccupy us is to give our best to the act of sowing, and leave the fruit and time of reaping to the wise beneficence of the Good Law.

We are happy to report that our Section's progress is as usual slow but steady. The year is marked by the formation of three new Lodges and the addition of forty new members. The location of these new Lodges in three of the largest provinces in Southern Luzon is significant, because it indicates that we are beginning to extend our field of activity. Most of our older Lodges are in and around Manila, except for one in Central Luzon and another in the Visavas. It is perhaps noteworthy that two of these new Lodges were organized by members as an adjunct to their main work in business organizations.

With the peculiar development and organization of these two Lodges, we are led to think that perhaps in the future, business organizations would not remain merely or primarily profit-making institutions, but become channels for the moral and spiritual training of people connected with them. Many of the young among the new members and others who had come in before them seem to have developed forward-looking ideas, and judging from the eager enthusiasm which they evinced and the searching questions they asked we can reasonably hope that the future of the Theosophical Movement is encouraging. Some of the questions asked are: Why have we so few members of the Theosophical Society in the Philippines? What is wrong with our public relations? Why do we not present the teachings of the Ageless Wisdom in consonance with the new scientific knowledge and culture of modern times? Where are most of the older members and why don't we meet them in the Lodges or in the gatherings in the national headquarters? How can we make Theosophy a living power in our lives?

It has been for long our plan to revive the Philippine Theosophical Institute, now defunct, through which we can channel the enthusiastic energies of these younger members and harness the accumulated knowledge and experience of the older members in instituting organized courses of graded studies, and in the formation of groups who would engage in constructive researches, as well as train those who have the capacity and inclination for lecturing and literary work for the propagation of our teachings. We are looking forward to Mr. Geoffrey Hodson's projected lecture tour in this region, during which he promised to stay with us for some time and help us in our plans. We also expect other leaders to visit and help us.

It is a matter of great regret that in Indonesia, whose people have close racial affinity and friendly relations with us, our Society is banned. We hope, however, that our brothers there will continue the work individually.

All this should arouse our members to renewed and more intensive efforts not only to live actively the Brotherhood we profess, but also to express more dynamically the Theosophical ideals by taking advantage of and seeking every opportunity to propagate the teachings which we know will change for the better the whole nature of man.

In closing we report that the routine activities of the Section continued well during the year: the Sunday public lectures where our own members as well as some non-members talked on subjects of Theosophical or related interests; the inter-Lodge programs held every first Sunday of the month when members gathered in fraternal fellowship; regular visits to Lodges and meetings of inquirers' groups. The work of some of the T.O.S. departments continues. The Young Theosophists were as usual very active and helpful in the work.

Domingo C. Argente, General Secretary.

### **COLOMBIA**

As regards the activities of this Section during this year, there is nothing special to report. I visited the Lodge at Barranquilla, and also some members who have formed a study group at Santa Marta. I have also kept in constant touch through correspondence with all the Lodges and some of the members scattered over the country, trying to keep up the flame of their enthusiasm. In spite of all this, there is a reduction of 18 in membership with 40 new admissions.

The Lodges are working satisfactorily, and greater emphasis is being placed on the occult side of the meetings. The presidents of Lodges are conscious of their responsibility and are doing their best for the Theosophical work.

We continue to publish every three months our 32-page magazine, Seleccion Teosofica, with translations made by Bro. Walter Ballesteros from carefully selected material, most of it from The Theosophist of Adyar. The five issues during

this period contained a total of 160 pages with 37 articles, 12 of them from our President, Bro. N. Sri Ram. One thousand copies of each issue are printed, making a total of 5,000 pamphlets distributed free of charge all over the country through the Lodges, with specimen copies to other Sections in Latin America.

Our Section bought from the Mexican Section 1,000 copies of the pamphlet "To Those Who Mourn," for free distribution.

We also subscribed to 300 copies of the book *The Technique of the Spiritual Life* by Miss Clara Codd, translated by Bro. Ballesteros and printed in co-operation with several other Latin American Sections. This book will be made available to our members and the public in general at a very low price equivalent to US. \$0.65.

CARMEN C. DE VENGOECHEA, General Secretary.

# EAST AFRICA

Once again, I have to report steady progress of Theosophical activities in East Africa during the year 1962-63. There is a further though slight decrease in membership this year. Looking to the fact that our membership comprises mainly Asians and there being an air of uncertainty existing in the minds of the Asian community in general and those in civil services in particular, regarding the security of their jobs at the advent of independence in these territories, it has not yet had much effect. Our endeavors to interest the African population in the teachings of Theosophy are still without apparent success. We are, however, not disappointed and our efforts continue unabated.

Reports received from all the Lodges show the total number of members is 613 as against 621 last year and 683 in the year before last. 57 new members joined during the year whereas the names of 64 were deleted from the registers for non-payment of dues for two consecutive years. Some of the lapsings are due to some members having left the country for good.

The annual Convention at Nakuru and Mr. and Mrs. Rohit Mehta's visit were two important events of the year.

The 13th annual Convention was held at Nakuru in Kenya in the Easter holidays

from 12th to 15th April, 1963, where as many as 100 delegates assembled in a spirit of brotherliness and dedication to the cause. The Convention was a great success and it provided a forum for taking stock of the situation in the country and guidance for our future work.

As Mr. and Mrs. Mehta were invited by the Southern Rhodesian Lodges of the South African Section, our Section decided to invite them to East Africa. During their three previous visits they had carried out very extensive lecturing tours of our Lodges far flung from each other. This year they stayed mostly in Nairobi and gave public lectures and conducted a week's study seminar, both of which were very well attended.

I visited Lodges at Nakuru, Eldoret, Jinia, Kampala, Kakamega, Kisumu and Kericho in company with our National Vice-President Bro. H. S. Patel. Both of us not only addressed Lodge members and the public but met members individually and tried to explain to them the meaning and purpose of change and advised them to take the matter calmly and with understanding in order to be able to contribute our share to the fulfilment of the Great Plan which is being unfolded in these countries. The Lodges in Tanganyika and Zanzibar could not be visited but I hope that this will be done next year. The country is very vast and the facilities for transport are scarce and expensive. We hope to invite a visitor from India next year who will visit all places in East Africa giving sufficient time to each place. Studies of Theosophical principles were regularly conducted by members in all Lodges. Bro. H. D. Shah conducted a class on Theosophy and The Theosophical Society, in Dar-es-salaam.

The Theosophical Light was published bi-monthly in English and Gujarati during the year, It has linked all members

and Lodges together and by sending it to most English speaking Sections overseas we have linked ourselves with other Theosophists also.

With the efforts made by our enthusiastic book-stall manager we were able to sell books worth £150 during the year. Our book-stall is well stocked and books on a variety of subjects are kept for sale.

Our Section suffered a great loss through the death of Mr. B. D. Peshavariya of Padma Lodge, Jinja. Bro. Peshavariya was not only the President but a main worker of the Lodge at Jinja.

A translation of At the Feet of the Master in Ki-Swahili entitled Mafundisho Ya Bwana has been printed and members of our Lodges who bought copies from the Section book-stall are distributing them free of charge to their African friends. It is hoped in two years we will have distributed 4,500 copies in this way. The response to this gift is not yet fully known but one report indicates that the Africans do not like to read in Swahili as much as in English. We are, therefore, not undertaking further printing in Ki-Swahili at present and are waiting to see the response to our first book venture in Swahili.

Our Section was represented once again at the School of the Wisdom by Mr. J. J. Amin who attended the second session this year. The 1963-64 School session also has one of our members, Mr. T. Edmonds, as a student. Our Section is greatly benefited by these studies.

Our Lodges at Mombasa, Zanzibar and Dar-es-salaam were very fortunate in having Mr. C. D. T. Shores visit them while his boat touched at these ports. Bro. Shores addressed members and the public at these places.

Mrs. M. E. Nairn, the National Vice-President of the South African Section and a past President of the Salisbury Lodge, visited Nairobi Lodge on her return from Adyar after attending the first session of the School of the Wisdom and the 87th International convention. Visitors from overseas are always a source of inspiration to local members and we are grateful to both Mr. Shores and Mrs. Nairn for their visits.

Mrs. Nairn's visit opened up a possibility for collaboration in matters of mutual benefit to the East African Section and the Lodges in Rhodesia. The first act of such a collaboration was Mr. and Mrs. Mehta's visit sponsored by both. In future also we hope to continue in this manner.

H. K. Mehta Felicitation Fund.—This Section owes much for its growth to the Gujarat Theosophical Federation of the Indian Section and its stalwart workers through their books in Guiarati and lecture tours in this section rendering sterling service to the Theosophical movement in this country. On the occasion of the celebration of Mr. H. K. Mehta's attainment of 80 years of age, the total amount contributed by our Section to the appeal launched by the Gujarat Federation amounted to £250 which in the circumstances of the country is a gesture of respect and love for this great servant of Theosophy.

All the Lodges except Mwanza, Morogoro, Kitale, Chake-Chake, Ruiru and Thika have been very active throughout the year. Meetings of the Lodges are mostly open to all and many sympathizers are regularly attending them. The Nakuru Lodge is successful in attracting educated Africans to Theosophy and after the visit of Mr. and Mrs. Rohit Mehta several Africans are seen regularly attending weekly meetings.

Most Lodges celebrated the usual Theosophical days of Remembrance. Members of several Lodges are actively engaged in humanitarian activities connected with hospitals, youth work, social services, etc. Bro. Ramanlal Shah of Nairobi Lodge was transferred to his home town, Ahmedabad, last year. He conducted study classes at several places and gave the benefit of his deep study of Theosophy through his many lectures. The Section is very grateful to him for all his services.

Mr. K. P. Rathod, a very enthusiastic and useful member of Unity Lodge, Mombasa, was transferred to the Congo Republic last year, where he intends to continue with his Theosophical work.

I regret to record the dissolution of the Mombasa Central Lodge for lack of activity for some time. Three other Lodges: Kotale, Morogoro, and Mwanza, also dormant for some time, may be revived when somebody is able to visit them in the near future.

In conclusion, I have to report that the movement of the Theosophical Society has gained more strength despite decline in membership last year. Due to the visit of Mr. and Mrs. Mehta the Society's work has been very much appreciated and misunderstandings about its ideals and role have been removed to a great extent from the minds of the general public. The Society and its work have many more sympathizers today than ever before. The coming year will be harder for us, but I trust we shall emerge successfully through our members' integrity and sincerity. I appeal to all members throughout the world to bless us in our arduous task of bringing peace, harmony and understanding between the races in this country.

I invoke the blessings of the Great Ones who are the true founders of the Society to inspire and guide us in the service of the cause in this country which is entering the new era of political independence.

R. H. PATEL, General Secretary.

### **PAKISTAN**

The year has gone by rapidly, leaving much that remains to be done. This is always so. The two "wings" of the country are divided by 1,200 miles. There are vast areas to be covered and the need all around is very great. The country as a whole has passed through a critical year with inevitable repercussions on Theosophical work. But this is more in relation to expansion of Theosophical Lodges and Centres and not to existing work which has continued smoothly and in some places satisfactorily.

Last year we reported a total strength of 261 on 30th September 1962. During the year, 36 new members were enrolled and two were transferred from Belgium. On the other hand we lost through lapsings, resignations and deaths 22 members. We close the year therefore with a membership of 277, spread into six Lodges and one Centre. Due to increasing inactivity and differences among members, the Rukmini Devi Youth Lodge was temporarily suspended from activities. None of its members, however, have resigned and there is hope that the Lodge can be revived in the near future; of the existing Lodges and Centres mentioned, there are five Lodges and one Centre in West Pakistan and a Lodge and a Centre in East Pakistan.

Regular activities continue in the Karachi and Comilla Lodges as well as at the Besant Lodge, Hyderabad, and the Youth Lodge in the same place. Anniversaries of Founders of Religions and Theosophical leaders are regularly observed in all Lodges.

Karachi Lodge has maintained its good work throughout the year. It held two public lectures and two members' meetings each month. There was a weekly study class. The subjects studied were "An Introduction to Theosophy," "Man

Savage to Superman," "Zoroastrianism," The Secret Doctrine and The Lotus Fire. There were Urdu Classes on "Darsiyate-Theosophy" and studies in the Christian approach to mysticism by the Aquarian Group. There were lighter activities for Youth evenings—films, discussions, forums.

Among special celebrations, the Lodge observed the anniversaries of the Founders of various Religions and special Theosophical anniversaries. It also observed with enthusiasm Remembrance Day which is dedicated to Jamshed Nusserwanjee after whom the Lodge building is named. United Nations Day was also celebrated.

The Comilla Lodge, the oldest in Pakistan, having been founded in 1886, is a unique Lodge, as it meets daily, formally or informally. There are public lectures every Sunday. On other evenings, members regularly gather to study *The Theosophist* and scriptures of various religions. The Lodge has a library which needs to be brought up to date.

The Besant Lodge at Hyderabad has revived its activities during the year. It has public lectures periodically. The Lodge has a fine library and a reading room for the maintenance of which it receives a substantial grant from the Hyderabad Municipality.

Due to the foresight and hard work of the earlier members of the Lodges, most of the Lodges in Pakistan have their own buildings. The Karachi Lodge built a beautiful, two-storeyed building and opened it in 1957, after demolishing the old structure which was giving way. The new building, besides providing rooms for the Lodge and library activities, has an auditorium with a theatre-stage attached, and a roof-garden. One floor is rented out to the National Book Centre. The

Besant Lodge at Hyderabad similarly has a large building of its own, affording a big lecture hall, library and reading rooms and two guest-rooms. A wellkept garden is patronized by members and the public alike. Comilla's Lodge building is in the centre of the town, in a large square which also accommodates the Town Hall. It is a smaller building affording a lecture hall only. Quetta's beautiful Lodge building was lost during the great earthquake of 1935. On the same site, a small temporary building has been erected. Other buildings were those of Multan Lodge, Lahore Lodge and a small plot of the Shikarpur Lodge. Efforts were made to recover the first two buildings since the partition of the sub-continent, but to no avail.

Officially the activity of The Theosophical Order of Service is operative only in Karachi but in all Lodges there are members who are actively engaged in good work for their fellowmen. work in Karachi is well organized and efficient. The Theosophical Order of Service works under five committees: (1) The Art and Education Committee, (2) The Relief and Rehabilitation Committee, (3) The Health and Healing Committee, (4) The Animal Welfare Committee, and (5) The Committee for the Welfare of the Handicapped. Much useful work is done by these groups. There is monetary help from the Jamshed Nusserwaniee Memorial Relief Fund to a good number of needy persons. Through liaison with the Save the Children Fund we have found sponsors from overseas for over 60 children. More cases are under consideration. Every fortnight a number of adult blind come to the Karachi Lodge for Club activities, and members also help to coach students privately for higher studies. Healing ceremonies are held. Education courses are conducted and they are very well attended. A number of members are active individually in work for the blind and other afflicted persons.

For propagating Theosophy one of the facilities that our Lodges lack since the partition of the sub-continent, is availability of Theosophical books. Practically all the Lodges have libraries and the Karachi Lodge Library has over 10,000 books. But it is very difficult to keep these libraries up to date because of difficulties in importing books due to foreign exchange regulations. The Karachi Lodge Book Depot is not licensed to import books and getting them through indirect sources makes the cost of the books which is already rising, prohibitive. With great difficulty the Karachi Theosophical Society was able to obtain a licence for Rs. 2,000 only during the year under report. Even this could not be fully utilized due to the short time before the expiry of the licence. Nevertheless it was a great help to be able to get some of the much needed books, specially modern publications. Most of the stock has been bought over by the Karachi Lodge Library and only a few remain for sale with the Book Depot. We are hoping to make the Book Depot into a proper licensed concern so that the difficulty of obtaining books may be overcome. The smaller Lodges are financially handicapped and are unable to meet demands made by inquirers. We would be very grateful to receive gifts of books for libraries out of Karachi and to meet the requirements of individual members scattered over the country.

The national journal, Theosophy in Pakistan has been published every quarter and is sent free to all members in the country. It is also sent to all the national Sections of the Theosophical Society and to a number of friends in different countries of the world. Due to lack of original articles, some of the matter

printed is reproduced from other Theosophical journals of larger and more established Sections and from our invaluable international journal, The Theosophist. But this does not make the journal any the less useful to members in Pakistan; especially as only a handful subscribe to The Theosophist and have no access to other magazines. The magazine has printed a useful series of original articles on Islamic subjects, by Mr. M. H. Abdi, who continues with his studies and researches in the Koran. Efforts have been made this year to take up the work of Urdu translations of Theosophical classics and it is hoped that some definite results will soon follow. There has been some interest shown in the work of the Islamic Association by members in England and India.

Karachi had a brief visit from Mr. C. D. T. Shores while his ship docked at the harbour.

In May 1963, Dr. Cecile de Sweemer arrived from Ghent, Belgium, and stayed in Karachi for nearly five months. While engaged mostly in medical work, she gave much time to Theosophical activities in Karachi, giving public lectures and conducting study classes. The Karachi Theosophical Society deeply appreciates Dr. de Sweemer's contribution to the Lodge work.

Another visitor to Karachi was Mrs. Mathilde de Sweemer Cornand who joined her daughter, Cecile, in early August. During her six-weeks' stay in Karachi, Mrs. Cornand helped the Presi-

dential Agent in much of her secretarial work.

Just as the year closes, Miss Daphne V. Darroch from Auckland, New Zealand, arrived for a year's stay in Pakistan at the invitation of the Presidential Agent. She will help the Karachi Lodge in various ways and will travel to other Lodges whenever possible.

Miss Jeanne Dumas, who has been in East Pakistan under the Peace Corps program, has been very helpful in meeting inquirers and in arranging meetings of the Dacca Centre. She is, we are happy to know, likely to stay on in Dacca for the next year.

Mrs. Gool Minwalla visited East Pakistan in March 1963 and gave several lectures at Dacca and Comilla. As a result of her visit, the two centres have been strengthened and the number of inquirers increased.

There are those who deserve our gratitude for their support, financially and otherwise, for the work of the Theosophical Society in Pakistan. The number is small but has it not been said by the Prophet, "There is no limit to what a man can do, if he does not care who takes the credit"? Theosophy requires that quality of worker—a selfless dedication, an earnest effort, an intelligent approach, a kind and humane friendship for the "Great Orphan, Humanity". On such always will rest the blessings of the Great Ones. Of what avail anything else?

GOOL K. MINWALLA, Presidential Agent.

# MALAYA AND SINGAPORE

No Report

## NORTHERN IRELAND

The Society in Northern Ireland had a quiet year, with interesting and varied programs. As a party of friends pursuing the objects of the Society with dedication and enjoyment, our little group of members is very active and alive; but its contact with an outside public is relatively slight. Although publicity efforts of the normal kind are regularly and conscientiously made, and we receive some of the benefit of publicity work done by the Society in England, and although our members are active and prominent in many other movements, the small additions to our membership in recent years have come about almost entirely through personal connections. Among interested friends who are not members, a certain reluctant attitude towards any degree of commitment makes them also reluctant to cross the line into membership. Our annual Convention, held in April 1963 with Miss Winifred B. Knowles as our guest speaker, was one of the most lively and the best attended for some years past. All our three Lodges were represented at the Summer School of the Society in England and we were also represented at Conventions in Dublin and London and at the multiglot summer school in Switzerland. Membership at 30th September, 1963, was 53.

HUGH SHEARMAN, Organizing Secretary.

## **ISRAEL**

The first decade of Theosophical activities in Israel was completed during the year just ended, and it seems to be fitting to review here shortly our set-backs and achievements experienced during that period of initial "ground-breaking" and slow but steady progress.

It was under the Presidential Agency of Dr. I. S. Cohen, appointed to this office by Brother Jinarājadāsa, that our first Lodge "Galilea" came into being in the township of Safad, famous in the Middle Ages as the seat of renowned Kabbalists and Jewish sages. Shortly afterwards, a change was effected and Brother Sri Ram nominated Mr. Hans Zeuger as successor to Dr. Cohen on 1st November 1954. By that time, a second Lodge, Covenant, was already active in Tel-Aviv, and the years 1956, 1957 and 1958 saw each a new Lodge established, viz., Lodge Moriah, in Jerusalem, Lodge Harmony, in Tel-Aviv, and Lodge Emmanuel, in Haifa. Our youngest Lodge, "Lotos", in Haifa, was founded on 27th September 1962.

Unfortunately, the status of our first Lodge "Galilea" in Safad had to be reduced to that of a Centre recently, owing to lack of sufficient membership, but efforts are being made to re-activate the Lodge as soon as circumstances permit.

One of our very first tasks undertaken was the publication of a news-sheet (Mitteilungsblatt) Theosophie in Israel, originally in the German language, but later enlarged to include articles in English, French and Hebrew, in order to reach all our members who had immigrated into Israel from so many different countries. It might be worth while mentioning that at the Philosophical Seminary of the Hebrew University in Jerusalem Theosophie in Israel was made use of by a body of students in the course of their regular work.

İSRAEL 93

Besides lecturing in our own Lodges, there were many occasions during these years to speak on Theosophical subjects in various parts of the country as well as over the Government-owned broadcasting stations. Local newspapers in various languages—Hebrew, English, German and Jiddish—reported, time and again, extensive articles and interviews upon Theosophical doctrines and ideas.

Visitors from many other Sections-England, U.S.A., France, Austria, The Philippines, Ghana, Belgium-brought us much warmth and brotherly love. First and foremost, our dear friend John Coats. Chairman of the Council of the European Federation of National Societies, helped us enormously in the building up of our polyglot library. On the other hand, several of our members were fortunate enough to take part in national and international Theosophical gatherings, e. g. the European Congress in Swanwick, the International Week in Huizen, the Summer School at Pichl, the Jubilee Convention at Vienna.

During the year just ended we admitted 4 new members, one of them unattached, but lost one by death; the current figure of our membership is, therefore, 103, but a number of them are not in good standing at the moment.

As in previous years, Mr. Hans Zeuger, the Presidential Agent, was again invited to speak over one of our radio stations, this time the "Voice of the Israel Defence Army," where he was interviewed, at the beginning of 1963, on "Events of the current year as seen by an Astrologer". Several months later, a long article appeared in one of our German dailies, "Kontrolle ueber Hans Zeugers Horoskop" (Hans Zeuger's astrological predictions—controlled), in which his state-

ments were analyzed, compared with events that occurred since and proved correct in the vast majority of cases. This brought us many letters of inquiry, and attention was thus drawn to our Society and the ideals it is standing for. Two invitations to lecture in co-operative settlements were extended to Mr. Zeuger in this connection, one of them, Kibbuz "Nir-Am," situated near the Egyptianheld Gaza-strip in the Negev, the other, Kibbuz "Tsora," in the Judean Hills, both populated by a large percentage of young people, very keen to absorb our Theosophical ideas. In addition, lectures were given by Mr. Zeuger in Mrs. Margot Klausner's para-psychological group in Tel-Aviv and Dr. E. Bloch's circle in Naharija.

Mrs. H. Poller from England and Dr. C. de Sweemer from Belgium addressed some of our meetings, the latter visiting Lodges in Tel-Aviv, Haifa and Safad, and gave us very interesting facets of the Divine Wisdom as seen from their points of view.

A fund for the publication of Hebrew translations of Theosophical literature, created at the beginning of the Theosophical year, met with considerable success, and it is hoped that the first volume: Reincarnation, the Hope of the World, by I. Cooper, carefully translated by our Brother Zion Gonen, will be printed in the course of the coming year.

Valuable donations for our library have again reached us from abroad, and we wish to thank Mr. Edward C. Abdill, Vice-President, The New York Theosophical Society, in particular for his very kind assistance in this connection.

HANS ZEUGER, Presidential Agent.

## **JAPAN**

No Report

### VIET-NAM

The Directive Council is entering its third year out of a term of three years (July 1961 to July 1964). Normally it would finish its term of office in July 1964, but for practical purposes we have decided to shorten this term by six months and to organize the general election on 29th December 1963. During the turbulent period this country has passed through we have attempted to maintain the fraternal Theosophical attitude; we carry on our activities regularly and without break, confining ourselves to the three Objects of the Society; above all we try to make our Theosophical centre a centre of peace and harmony for everyone.

The Theosophical Society in Viet-Nam pursues its activities and is generally esteemed. Our country has passed through severe tests, but our Section, is able to carry on its mission of Fraternity and Peace, diffusing widely the teachings of Theosophy. In this way we have escaped many difficulties and dangers.

The activities have followed the lines of a general program established by the Council at the beginning of its term of office. This program includes: (a) The study and spread of Theosophy. (b) The encouragement and formation of active members and of new members.

During the year under review study meetings have been held every Sunday (excepting the first Sunday of the month, when there is a public lecture), concentrating on the Theosophical Society and the practical application of Theosophical teachings.

At the Headquarters in Saigon a course of study has been organized for advanced students on Dr. Besant's A Study in Consciousness. About thirty members actively participate, the subjects for study being distributed to the members in advance.

The monthly public lecture deals with Theosophy in general and interests a large audience. Many of them, recognizing the value of Theosophy, afterwards join the Society.

Parallel to the lectures and courses on Theosophy, and on a wider level, we are happy to have the bi-monthly review *Tim Hieu Thong-Thien-Hoc*, the official organ of the Section. For ten years this review has provided the public, and also the members, with an abundant supply of literature on Theosophy. With its issue of 2,000 copies it is of particular interest to the intellectual classes. This official organ of the Section is able to continue efficiently its mission thanks to the devotion and the financial help of Mr. and Mme. Nguyen Van Huan.

To maintain our Theosophical solidarity we organize visits and social meetings among members. The commemorative festivals are also a precious help for they create an enthusiasm for the ideal of Service and remind us of the highly spiritual, devoted and consecrated lives of our Theosophical Leaders.

We pay frequent visits to the Lodges in Saigon and attend their meetings, while, with the Lodges at a distance and in the provinces, we maintain our relationships through letters and communications. The Theosophical Orphanage constitutes our principal social activity. In fact, to maintain some fifty orphans of a very tender age, is a real charge on the Section. Happily, as in previous years, thanks to gifts and contributions from numerous benefactors and social organizations the budget is stabilized.

The year under review has been a difficult one for us. The critical situation of the country, insecurity, and economic crises have affected our activities, principally in the provinces. Nevertheless new members have joined our Section, and the number has increased by 9. The total number now stands at 669. Two new Lodges began active work in the Capital: Lodge Minh-Triet (Wisdom), and Lodge Tu Bi (Compassion). Lodge Minh-Triet meets once a week and conducts a study group for Theosophy; while Lodge Tu Bi organizes public lectures every Saturday afternoon in its large hall, where a large and interested public attend lectures.

The older Lodges maintain their activities generally as heretofore. Those in the Capital are more active; Lodges Kiem

Ai, Dung Hanh and Saigon are note-worthy.

All Lodges participate in the Section meetings, particularly the commemorative festivals.

The present Directive Council has almost come to the end of its term of carrying on the work of Vietnamese Theosophical Section. Numerous difficulties have been overcome by the judicious decisions and the devotion of members to the Society, which the Council has several times occasion to witness.

During the difficult times from which our country has suffered deeply, the Section has rigorously maintained its Theosophical activities, keeping itself entirely pure and not mixing in political affairs. The Section has constantly followed its mission of spreading Theosophy, the divine message of Peace, Harmony and Fraternity.

May the Holy Ones continue to enlighten us with Their Wisdom and to inspire us with Their Compassion. May Theosophy help our country to attain a future that is more and more luminous.

NGUYEN-THI-HAI, General Secretary.

# **VENEZUELA**

This annual Report, covers our tenth year of Theosophical activities in the Venezuelan Section.

During the year five new members joined the Society.

We received a request for help for Tibetan Refugees in India from Mr. John Coats, and our Section had the pleasure of sending a small sum for the purpose.

I have to include in this report the disagreeable fact that our country is on the edge of a crisis, from the political point of view. It can be saved only with Their help.

I am happy to inform you that, accompanied by another member, I shall go to Mexico, to be present at the first Inter-American Congress of Theosophy. I am confident that something will arise out of this for a better development of our ideals over this Continent.

In the names of all the members of this Section and in my own, I send to you very cordial greetings and to all the members who work at our beloved Headquarters.

Pablo Bonilla T., General Secretary.

## WEST AFRICA

This year, on account of the declaration of a State of Emergency in Accra, the Section's headquarters, we were not able to hold the usual annual Easter Convention. A National Council meeting was, however, held on Easter Saturday at which certain important matters affecting the Section's work were discussed and decisions taken.

A final decision was taken regarding the site of the Section's headquarters building and it was resolved that the work should be taken in hand without further delay and a beginning made with whatever little fund was available. A committee was appointed and under its enthusiastic chairman the site has been cleared and surveyed, a plan has been drawn and the soil was cut by the Organizing Secretary who in that act called upon the Great Ones to bless the work thus begun in Their name. It is hoped that soon the foundation will be laid.

Another decision taken was in regard to annual dues paid by the brethren in Nigeria. The idea of annual dues is distasteful and repellent to some of our brethren. It was suggested from one quarter that a free supply of text books should go with dues; a second thought that if one joined Adyar as a Fellow-atlarge rather than the Federation only five shillings would be the dues. A third argued that our brethren can ill afford the annual dues of 42/- because they belong to the low income group. Since many Nigerian brethren had lapsed in membership on account of failure to pay their dues and in view of complaints received that these brethren found the dues too heavy, it was decided that the Nigerian brethren should be asked to pay only half the usual dues, i.e. £1.1.0 instead of £2.2.0. This was done to ensure that

financial considerations should not constitute a barrier to membership. This decision is to be reviewed after three years.

It was agreed at the National Council meeting that the setting up of a local Theosophical bookshop was desirable and a committee was appointed to consider the business aspect of the venture and recommend what form the bookshop should take. The setting up of the bookshop was raised because it was felt that its existence would greatly help the propagation of Theosophy among the general public and also facilitate studies by members. At present all books have to be ordered from London.

During the year under review some progress has been made. It saw the formation of two new Lodges, one in Ghana, "Dharma," and the other, "Leadbeater," in eastern Nigeria.

Activities at the former Lodge are noteworthy: First, its internal lecturers include Roman Catholic priests. flecting that but yesterday one of the priests of this great Christian body published a pamphlet warning the faithful off our philosophy, we rejoice at the change of heart and the significant gesture. Second, an overseas couple who declared themselves "atheists," fascinated by the teachings of Theosophy, the freedom of thought and the harmonious relationship that pervade our meetings, are regular visitors. There is a bright future for this young Lodge. The other is the first Lodge of the Theosophical Society to be opened in Nigeria (all along there have been only Centres and scattered unattached members). The formation of this first Lodge is an event over which we rejoice for now there is a nucleus in that country around which we may hope that more will be built. Indeed

we look on it as the true beginning of Theosophy in Nigeria.

In addition to the two Lodges, a new Centre has also been started in northern Ghana. Like the new Lodge in Nigeria, the new Centre in northern Ghana represents the beginning of Theosophical work in that region of the country. We wish the two new Lodges and the new Centre all success and devoted endeavor.

Consequent to the implementation of the Resolution passed at the 1961 Convention to the effect that the names of lapsed members who did not apply for reinstatement within the specified period of two years be removed from the Federation register, the membership stands to date as follows: Membership rose from 305 to 340. This was made up of 74 new enrolments, 39 lapses and 1 death.

Library: Additions to our Library include five parcels of second-hand

books from the Blavatsky Lodge, London.

One last thing worth reporting is the visit to Ghana of Dr. Michael Alexander, a German F.T.S. from Australia. Dr. Alexander stayed with us for six weeks and went back (much sooner than originally planned) to Australia. During his stay with us, Dr. Alexander gave us many addresses. He was the second F.T.S. to visit us in West Africa from outside, the first being Mrs. Mary Elmore in 1954.

It is heartening that the signs of the times are pointers to the fact that Theosophy erstwhile regarded by our contemporaries in this corner of our world as a Cinderella has come to her own and is so recognized and welcomed by her peers.

K. Brakatu Ateko, Organizing Secretary.

## CANADIAN FEDERATION

The past year has been one of neither spectacular gain nor loss in membership, the gain being offset by the loss of members who have passed on. In general all the Lodges have been active, some in Lodge studies and in others, the weekly public lecture.

We witnessed again this year the interest shown in Theosophy by the public when a speaker of note is lecturing. At Hermes Lodge in Vancouver we had in order, Miss Joy Mills, Vice-President of the American Section, Dr. Laurence J. Bendit and Mr. N. Sri Ram. In each case the audiences were large and keenly interested. Dr. Henry Smith, President of the American Section, spoke in Toronto, sponsored there at one lecture by the Federation Lodge.

Apart from the visit of Mr. Sri Ram, which was the highlight of the year, the

next was the annual Convention held in Vancouver. It was most successful. We were most fortunate in having Dr. Bendit with us and he gave the Convention lecture. All the western Lodges were represented and we also welcomed visitors from the United States. Next year the Convention will be held in Edmonton where it is hoped we will welcome some of the Lodges in eastern Canada, Edmonton being some thousand miles or so nearer the east than Vancouver.

The Federation still faces the old problem of attracting new and younger members. This can only be done where public lectures are organized and in that regard some serious thought is being given to pattern the public lectures in such a way as to prove attractive. Hermes Lodge is having a Full series of lectures

on Yoga—actually lecture-discussions in which the speaker talks for about half an hour and then an open discussion is carried on. The first attempt was quite successful.

The Federation is looking forward to another year of activity in doing everything possible to spread the ideals of Theosophy.

JOHN P. BARNES, Federation Secretary.

### **EUROPEAN FEDERATION**

The most important event of the year was the 24th Congress of the Federation of European Theosophical Societies held at Swanwick, Derbyshire, England, and attended by 388 members representing 29 nationalities, of whom about 165 were visitors from outside the United Kingdom. The President, Mr. N. Sri Ram, presided over the gathering and addressed the assembled members on more than one memorable occasion, with beautiful and inspiring words, besides taking a Ouestions and Answers meeting and joining in many other activities. The general theme of the Congress was "Evolving Consciousness and Established Values" and this evoked many notable and thoughtful contributions from such speakers as Srimati Rukmini Devi. Dr. Henry Smith, National President of The Theosophical Society in the United States. Prof. A. Haas, Vice-Chairman of the Federation, Miss Clara Codd, Dr. Corona Trew, Chairman of the Theosophical Research Centre, and many others. Nineteen General Secretaries were present, including, besides those from Europe and the United States, Mrs. Radha Burnier of India and the Presidential Agents of both Israel and Pakistan, Mr. Hans Zeuger and Mrs. Gool Minwalla. The President took advantage of the new rule recently passed by the General Council to hold two meetings of the General Councillors present to consider an Agenda presented by himself. The European Federation Council also met on several occasions

for official business and many points were discussed and projects planned:-e.g. the need for more international lecturers; the question of a World Congress to be held in Europe; arrangements for a Theosophical Information Centre: the publication of books in languages other than English; the establishing of a Headquarters for the Federation at the International Theosophical Centre at Huizen. The Rules of the Federation were approved in a new form and a Trust was created with the Federation Officers and two other elected members as Trustees, to hold funds on behalf of the Federation and to this was officially handed over the monies known as the North-Siegfried Donation which the Federation had received through Professor Marcault. It was agreed, further, to bring Israel into a closer relationship with the Federation. The usual 3-yearly elections were held and the three chief officers of the Federation were re-elected together with six members of the Executive Committee.

Warmest thanks are due to the management of The Hayes, Swanwick, for their splendid arrangements as well as to all who helped to make the occasion a happy and successful one. Especial mention must be made of Dr. P. Thorin, General Secretary of France, whose untiring translating made the proceedings clearer to many who might otherwise have missed much.

Attention was paid to the work of the Research Centre, the Theosophical Order of Service and the Order of the Round Table, children of the latter organization taking part in a ceremony for the benefit and inspiration of all who attended.

Immediately after the Congress the President left for Scandinavia, where he first of all attended the Summer School at Gammel Praestegaard and then went on to Finland, Sweden and Norway, afterwards staying for a short while in Huizen during August and leaving there to preside over the Golden Jubilee of the Austrian Section which was held in Vienna at the beginning of September. It was a happy and useful Convention, which Mrs. Radha Burnier and the Chairman of the Federation were also able to attend. The President passed through Paris on his arrival in Europe and departed from this city on his return to India. We are all extremely grateful for the time he was able to spend with us this year.

Srimati Rukmini Devi spent some time in Huizen both before and after the Congress and visited the Netherlands Summer School, spending a few days at the extremely successful and well attended Summer School at Gammel Praestergaard and visiting Copenhagen. She also presided at the International Week at Huizen leaving there for the United States, and returning via Geneva for a day or two on her return journey to India. We are always glad when she can find time in her busy life to visit us here in Europe.

The Regional Committee of the German-speaking group met in Basel in May and again in Pichl during the 10th consecutive Summer School of the Region to be held there in the delightful surroundings of the Austrian Mountains. It was organized most efficiently by Herr Schleifer, General Secretary of the Austrian Section, and his wife, over 80 members attending including about 15 from countries where our work is at present suspended. This Summer School usually

has a rather international character and provides a meeting place for many whose appreciation of these contacts is deep and heartfelt.

The German Section also celebrated its Diamond Jubilee in Frankfurt last year, a very friendly and successful meeting, which was splendidly organized by Herr Nagel, General Secretary of the German Section. Mr. J. van Dissel, the recent General Secretary of the European Federation, presided. The publication of books in German is proceeding well.

On account of the Congress there were fewer Summer Schools than usual and none in the Pays-Latins area. The Pays-Latin Regional Committee met in Swanwick. Special week-ends for study and training have been arranged at Tekels Park, Camberley, by the English Section and are proving instructive to those who can attend.

Other visitors from overseas who were able to attend our gatherings this summer and whom we were happy to welcome included Mr. and Mrs. Mitford-Barberton from South Africa, Miss Tehmina Wadia from Bombay, the Misses Darroch from New Zealand, and, of course, Mrs. Gene Smith, who accompanied her husband from America and who delighted the Congress with a short but charming talk at the closing meeting.

We welcomed Signor Roberto Hack as General Secretary of the Italian Section, Prof. Delio Nobre Santos for Portugal and Miss Winifred Knowles for Wales. We report with great regret the death of Mr. Ernst Nielsen, late General Secretary of the Norwegian Section whose efforts last year brought about the success of the Northern Summer School.

Adyar, the German-language magazine of the Federation, is now appearing in another form—smaller in size but with an increased number of pages. This has met with much appreciation and our

thanks must go to Herr Roesch who, in spite of difficulties of health, has continued to devote his very competent services to the publication of this journal. Dr. Thorin still continues to edit Le Lotus Bleu and La Vie Théosophique—the magazines of the French-speaking Sections. Teosofi i Norden continues to serve the needs of the 3 Scandinavian Sections in 3 languages. Theosophy in Action, which has had to increase slightly its subscription rates to 5 shillings per annum, has a wide circulation amongst English-speaking members on the Continent of Europe and an even larger number of subscribers in other parts of the world, where it provides the main source of contact between such members and our activities in Europe.

The Young Theosophists have elected a new General Secretary for Europe—Miss Monica Ostelius of Sweden. The movement is growing. A Youth Centre has been formed in England. There are many plans for a yet busier future.

The Theosophical Order of Service is becoming increasingly active in many countries. Work for the Tibetan Refugees and for Animal Welfare in particular is going ahead. In England the T.O.S. has been responsible for buying and organizing a home for elderly members of the Society. Refugee children have been adopted by T.O.S. groups. Many members are helping in the Freedom from Hunger Campaign.

The Order of the Round Table has held several camps—both in Huizen and in

England. Mrs. Ingrid Fjellander of Sweden is the very active International Secretary of the Order.

The Chairman has travelled rather extensively during the year, visiting Conventions, Lodges, Summer Schools in Switzerland, Austria, Germany, Sweden, Finland, Denmark, Holland and France where the Federation Executive Committee met in Paris in January. Later, he visited Portugal and Spain and attended the Convention of the Italian Section in Milan. He also toured Lodges in England and attended the Conventions in Scotland and Ireland.

Standing as we do in this Federation for a Europe united in its wholeness, whilst proud of its varied cultures and national characteristics, it has been something of a lesson to all of us in this last vear to note how hard it seems to be for statesmen, motivated incontrovertibly by much goodwill, to find means of closer association amongst themselves. No one doubts that the problems are real ones but they should stir us to ever more determined efforts in thought as in activity to set an example of what it means to be European first of all. We can also see very clearly that this is in itself only a step towards the greater wholeness of a World Citizenship or Government in which and by which alone, some of our greatest problems may find solution.

JOHN COATS, Chairman.

# LODGES ATTACHED DIRECT TO ADYAR

#### PERU

#### LODGE "PAZ Y AMOR"

The Lodge has carried on its activities in the best way possible. There were twelve meetings at which lectures were delivered, both by our own members and by illustrious visitors such as Mr. Matt and Mrs. Vera Boardman from Krotona, California. We also had as visitors members from Lodges "H.P.B.," "Armonia," and "Evolucion," of this city. There were reciprocal visits by the members of our Lodge, to strengthen the fraternal links. We also

received a visit from Bro. Herman Valdettaro.

Dilligent attention was paid to the subsidiary activities of the Theosophical Society. We had twelve celebrations of the Ritual of the Mystic Star, and a Pontifical Mass celebrated by the Rt. Rev. Walter Ballesteros on 28th April last. The task of forming in Peru a branch of the International Round Table is in progress.

ALFONSO REVOREDO IGLESIAS

President.

# HEADQUARTERS

#### ADYAR, MADRAS 20

#### **OFFICERS**

#### 1962-1963

#### **Executive Committee:**

- (1) THE PRESIDENT
- (2) THE VICE-PRESIDENT
- (3) THE RECORDING SECRETARY
- (4) THE TREASURER
- (5) SRIMATI RUKMINI DEVI
- (6) Mr. C. D. T. SHORES
- (7) Mrs. Radha Burnier
- (8) Mr. S. G. VENKATARAMANAN
- (9) Mrs. Norma Y. Sastry
- (10) Mr. K. N. RAMANATHAN

Adyar Library: DIRECTORS: MRS. RADHA BURNIER AND PROF. J. B. DORAB.

LIBRARIAN: MRS. SEETHA NEELAKANTAN.

Archives: MISS KATHERINE A. BEECHEY.

Bhojanasala: Superintendent: Mr. D. V. Syamala Rau.

Committee of Administration: SECRETARY: MRS. NORMA Y. SASTRY.

Engineering Department: Adviser: Mr. R. Balfour-Clarke. Garden Department: Adviser: Mr. N. Yagneswara Sastry.

Information Department: Mr. K. N. RAMANATHAN.

Laundry: Superintendent: Mr. M. V. Gopalakrishna Iyer.

Leadbeater Chambers: Superintendent: Mrs. Ruth C. McMyler.

Legal Adviser: Mr. N. K. CHOKSY, O.C.

Medical and Sanitary Department: Medical Officer: Dr. S. V. Joseph. Movable Properties Department: Custodian: Mr. Narainji K. Kevat.

Post Office: Sub-Postmaster: Mr. V. Srinivasan.

The School of the Wisdom: PRINCIPAL: MR. N. SRI RAM.

The Theosophical Publishing House: Manager: Mr. K. S. Krishnamurti.

The Theosophist: Asst. Editor: Miss Caroline Tess.
The Vasanta Press: Manager: Mr. K. Ramanathan.

Watch and Ward Department: SUPERINTENDENT: MR. S. NATARAJAN.

Ex-officio

## THE ADYAR LIBRARY

#### ANNUAL REPORT FOR 1962-63

It is with much pleasure that we present the 77th Annual Report of the Adyar Library. During the year two more works were added to the Adyar Library publications: *Indian Theories of Meaning* in the Adyar Library Series and *Laukika Nyāya Ślokāḥ* in the Adyar Library Pamphlet Series.

Obituary.—As this report is being submitted we have just received news of the passing away of Dr. C. Kunhan Raja, who joined the staff of the Library as Pro-Tem Director in 1926 and later served as Director from 1927 to 1934. From 1934 to 1953 he was the Curator of the Eastern Section. He has been very closely associated with our work for very many years and was responsible for editing many of the publications in the Adyar Library Series. He was also responsible for starting the Adyar Library Bulletin, Brahmavidvā, now in its 27th volume. We place on record our deep-felt gratitude to him for his contributions towards enriching the work of the Library.

Building.—The plan for the new building has been finalized and we are happy to announce that the new building will be started in the course of 1964.

Staff.—During the year Sri K. Harihara Sastri, who had been on the staff of the MSS. Library, Travancore, and who helped to edit many books in the Trivandrum Sanskrit Series, joined our staff as an honorary worker. Srimati D. Rukmini of our repair section married and left us and in her place Srimati C. Yamuna has been appointed. The service of Sri K. Jambulingam, who retired and was re-employed, had to be discontinued due to his continued illness.

MSS. Catalogue.—The cataloguing of the Itihāsa MSS. by Pandit V. Krishnamacharya, assisted by Sri K. Ramachandra Sarma is being done. The Stotra MSS. Catalogue and the Catalogue of the Visva-Bharati MSS. still remain to be completed.

Books Catalogue.—We have almost completed the expansion of references for the already catalogued books in the Western Section. A major work done during the year was the full referencing of the books on religion in this section including the Harnock series of early Christian texts and studies in German. The referencing of the section on philosophy, psychology and occultism is in progress and almost a thousand works have been dealt with.

Publications.—During the year Indian Theories of Meaning was released as No. 91 of the Advar Library Series; and Laukika Nvāva Ślokāh, edited by Pandit V. Krishnamacharya, being a compilation of popular old Sanskrit maxims with English translation, was published as No. 34 in the Adyar Library Pamphlet The Keśava-Vaijavantī commentary on the Visnusmrti is in the press and already 260 pages are printed off. We hope to complete the two volumes in the course of next year. During the vear we also undertook to publish as Adyar Library Series No. 92, Dr. Ludwig Sternbach's Cānakya Rāja-Nīti, being a critical edition of some of Canakya's maxims. The book is almost completed and we hope to release it by December 1963.

Transcripts of the rare South Indian commentaries on Amara's *Nāmalingā-nuśāsana* are being prepared by Pandit K, Ramachandra Sarma. They

will be edited by Pandit Harihara Sastri and we hope to have this work ready for the press in the course of next year.

Arrangements for exchange of publications were made during the year with the Royal Danish Academy of Sciences and Letters, Commission for a Critical Pali Dictionary, Denmark; and the Sanskrit Academy of the Osmania University, Hyderabad. During the year we received 77 books on the basis of exchange.

Bulletin, Brahmavidyā.—The Adyar Library Bulletin has 131 subscribers and is being exchanged with 130 journals. Exchanges with the following have been newly started: Philosophy, East and West, University of Hawaii; Transactions of the Institute of Peoples of Asia, Oriental Sciences, Leningrad; Viśvambarā, Bikaner; Medhā, Raipur Sanskrit College, Raipur; and Vishvesvaranand Indological Journal, Hoshiarpur, (in place of Viśva Jyoti). A few exchanges had to be stopped as publications of these had been discontinued for the time being.

Copying.—During the year 25 transcripts of MSS. and 1 of a printed book were made for other institutions and research scholars; 7 were made for our own use. Microfilms of 12 MSS., and 84 books and journals were supplied on request to other institutions and scholars. The microfilmed books were volumes of New India and scrap-books of Annie Besant containing clippings from New India and other papers. Other forms of service, such as compiling articles from New India for Mr. J.B. Alphonso Karkala of Columbia University for his book on Mr. V. K. Krishna Menon, checking up references for H. P. Blavatsky's Collected Writings for Mr. Boris de Zirkoff, U.S.A., were also rendered.

Binding and Repair.—48 books and 77 volumes of periodicals, and 7 transcripts were bound in the Vasanta Press; 549 books, 5 palm-leaf and 3 paper MSS.,

and 5 transcripts were repaired in the Library. Mr. C. H. Hunter is now engaged in fitting boards to the paper MSS. in the Library. Mr. E.F. Orfila continues to supervise the repair department and our special thanks are due to him and to Mr. Hunter for their valuable services in this department.

Works Used.—The Library has now 414 Readers, 134 Resident Readers cum Borrowers, and 68 Borrowers, and 11 Braille Borrowers. During the year 3,624 persons used the Library, 4,136 books were borrowed, and 11,232 books were consulted; 3,344 MSS. consulted and 20 were borrowed.

Accession.—1,898 books, excluding the journals, and 8 transcripts were accessed.

Gifts.—The following gifts of books have been received: 155 from Mr. Duncan Greenlees, Madras; 43 on Zoroastrianism from Mrs. M.F. Bilia, Bombay; 16 from the Ministry of Education, New Delhi; 47 from The Theosophist Office; 25 from The Theosophical Publishing House, Advar: 22 from Dr. Rood, which include many valuable current biographical dictionaries; 27 from Mr. Nelson Stewart, Scotland; 36 from Mrs. Shakuntala Devi; 24 from Mr. M.G.S. Rajan, Bangalore; 10 from Sri Bhagavadacharya "Pandita," Ahmedabad; 48 from Sri D.V. Syamala Rao; 29 from Sri P.M. Advani; 8 from Sri S.R. Kaiwar; 8 from The Theosophical Publishing House, London; 250 from Prof. J.B. Dorab; 20 from the late Miss E.M. Amery; 24 from Sri B.C. Barai, Madras; 138 from Miss Annie Tijoe Siang Nio; and 20 from Mrs. G. Weatherill, England. To all these we are grateful for their generous gifts. Our thanks are also due to Mrs. Ruth McMyler; Sri Ramjivan Sinha, Patna; Mr. and Mrs. J.T. Thadhani, Madras: Miss Anna Ornsholt, Kotagiri; Sri Ram Sarup, Moradabad; Indian Institute of Astronomical and Sanskrit Research, New

Delhi; Mr. James Austin, England; Mrs. A. P. Siitaa Devii; Mrs. G. Broacha, Vārānasi; Miss Clara Codd, England; Mr. S. Somasundaram; The Theosofische Vereniging Nederlandse Afdeling, Amsterdam; U.S.I.S., Madras and Delhi; U.S.S.R. Embassy, Delhi; Max Mueller Bhavan, Madras; and other Embassies.

We also place on record our grateful thanks to all those Braille book publishers in U.S.A. and Great Britain who have continued to send their Braille publications to the Library. As in previous years the Bollingen Foundation, N.Y., continues to send its valuable publications to the Library. The Library extends its appreciation and grateful thanks to the Theosophical Society in America and in Australia: the estate of the late Miss E.A. de la Cherois-Crommelin, England; Mrs. C. Brooks, Australia; and Mr. and Mrs. G.R. Bhadbhade and others for their contributions to the Building Fund as well as to the general funds of the Library. We also extend our thanks to Mrs. Radha Burnier who, as in past years, continues her contribution in money and kind to the Library.

One of the most valuable gifts to the Library was a complete microfilm equipment by the members of the Theosophical Society in America and Canada. We wish to offer our special thanks to all these and we hope not only to render better service to scholars and institutions in supplying microfilms of books and MSS., but also to better preserve the contents of rare works.

Visitors.—Among visitors during the year were: Mr. D.R. Saxena, Vice-Chairman of Scientific Terminology Commission, New Delhi; Mr. R.N. Dandekar, Prof. of Sanskrit, University of Poona; the late Dr. C. Kunhan Raja, Bangalore; Mr. L.D. Hamilton, Cornell University Medical College; Mr. M.H.F.

Williams, King's College, University of London; Mr. Raynor C. Johnson, Queen's College, University of Melbourne; Mr. D. L. Kirschner, Medical College, Dunedin; Mr. Albert H. West, England; Mr. C. Caillat, Institut de Civilisation Indienne, Lyons; Mr. Bishvanath Prasad, Director of Central Hindi Directorate, Ministry of Education, Delhi; Mr. Kenkyo Nishimara, Kanazawa University, Japan; Mr. A.V.N. Sarma, Madras Government Museum; and Dr. Grace Morley, Director of National Archives, Delhi.

Among the overseas research scholars who used the Library were Mr. Eugene Irschick, University of Chicago; Mr. Mrs. Hugh Owen, Australian and National University, Canberra; Mr. S. Mayeda, American Institute of Oriental Studies; Mr. Richard Brooks, U.S.A.: Mr. G.E. South, New Zealand; Mr. Daniel Smith, Syracuse University; Prof. J. Deloche, Ecole des Hautes Etudes, Paris; Mr. and Mrs. Shou Ito, Institute of Asian Affairs, Tokyo; Mme. Ingrid Aall, Norway; Mr. Hermann Kulke, University of Freiburg, West Germany: and Prof. Alex Wayman, Madison, Wisconsin.

In conclusion we express our appreciation and grateful thanks to all who have helped the Library during the year by gifts and in various other ways. Our special thanks are offered to Dr.V. Raghavan who continues to give his valuable advice. Our thanks are also due to Dr. K. Kunjunni Raja who is extending his help in all ways in the research section of the Library, as in the past years. We sincerely hope that next year we will be able to move the major part of the Library to a better and more spacious building so that our work may be able to expand in various other ways.

SEETHA NEELAKANTAN,

Librarian.

#### THE SCHOOL OF THE WISDOM

#### REPORT ON 1962-63 SESSION

While this year's School of the Wisdom has been smaller than that of last year, there being 20 present the first term and 21 the second term, more countries have been represented. Members have been present from as far away as Iceland, Australia, U.S.A., New Zealand, Viet-Nam, Germany, Southern Rhodesia, Canada, France, Italy, East Africa, West Pakistan and India. Of this number only nine were able to attend full time for both terms. Some were obliged to leave at the end of the first term while others joined us and five were attending part time. Considering all these comings and goings the group amalgamated well and held together harmoniously right to the end, which says a great deal for the leadership we received. One thing was noticeable this session and that was the difference in atmosphere and outlook between the two terms despite the same leadership. One might almost say they were two different schools; certainly we laid the foundations the first term and our structure arose to a noble edifice the second term.

We were privileged to have lectures from Mr. Wallace Slater, General Secretary of the Society in England, Dr. J. Pieper, Professor of Philosophical Anthropology of the University of Minnesota, Madame Valvanne from Denmark and Miss Elizabeth Preston. Besides our Principal, Mr. N. Sri Ram, who is always most generous with his lectures on various subjects, Prof. Jal B. Dorab, Dr. Sherine Dorab, Mr. Balfour-Clarke, Mr. K. Sankara Menon, Mr. Yagneshwara Sastry, Mr. Homi Shroff, Miss Caroline Tess and Mr. Richard Brooks addressed the School. There was also the opportunity for members to participate and speak on the various programs.

Public lectures were held each Friday evening with members of the School taking part.

Trips were made by the members to the various departments on the estate and also to points of interest outside.

Our thanks go to our two Directors, Mr. James S. Perkins and Mrs. Kathrine Perkins and also to their two assistants, Mr. Felix Layton and Mrs. Eunice Layton, for their untiring efforts to lead us to a better understanding of Theosophy and the practical application of it in our daily lives. With regret we turn our steps homeward hoping that karma will permit us to attend another session of the School of the Wisdom.

Joan S. Morris, Secretary.

# MEMORANDUM OF ASSOCIATION, ETC.

# CERTIFICATE OF INCORPORATION

No. 2 of 1905

I hereby certify, pursuant to Act XXI of 1860 of the Governor-General of India in Council entitled "An Act for the Registration of Literary, Scientific and Charitable Societies, 1860," that The Theosophical Society is duly incorporated as a Society under the aforesaid Act.



Station, Madras, Dated 3rd April 1905.

(Sd) A. Periyaswami Moodaliar, Registrar of Joint Stock Companies.

# THE THEOSOPHICAL SOCIETY

FOUNDED NOVEMBER 17, 1875. INCORPORATED APRIL 3, 1905.

In the matter of Act XXI of 1860 of the Acts of the Viceroy and Governor-General of India in Council, being an Act for the registration of literary, scientific and charitable Societies

and

IN THE MATTER OF THE THEOSOPHICAL SOCIETY

#### MEMORANDUM OF ASSOCIATION

- 1. The name of the Association is The Theosophical Society.
- 2. The objects for which the Society is established are:
- I. To form a nucleus of the Universal Brotherhood of Humanity, without distinction of race, creed, sex, caste or colour.
- II. To encourage the study of Comparative Religion, Philosophy, and Science.
- III. To investigate unexplained laws of Nature and the powers latent in man.
- (a) The holding and management of all funds raised for the above objects.
- (b) The purchase or acquisition on lease or in exchange or on hire or by

- gift or otherwise of any real or personal property, and any rights or privileges necessary or convenient for the purposes of the Society.
- (c) The sale, improvement, management and development of all or any part of the property of the Society.
- (d) The doing of all such things as are incidental or conducive to the attainment of the above objects or any of them, including the founding and maintenance of a library or libraries.
- 3. The names, addresses and occupations of the persons who are members of, and form the first General Council which is the governing body of the Society, are as follows:

#### GENERAL COUNCIL

# Ex-Officio

President-Founder:—H. S. Olcott, Adyar, Madras, Author.

Vice-President:—A P. Sinnett, London, England, Author.

Recording Secretary:—Hon. Sir S. Subramania Aiyar, Madras, Justice of the High Court.

Treasurer: -W. A. English, M.D., Adyar, Madras, Retired Physician.

Alexander Fullerton, General Secretary, American Section, 7, West 8th St., New York.

Upendra Nath Basu, B.A., LL.B., General Secretary, Indian Section, Benares, U.P.

Bertram Keightley, M.A., General Secretary, British Section, 28, Albemarle St., London, W.

W. G. John, General Secretary, Australasian Section, 42, Margaret Street, Sydney, N.S.W.

Arvid Knos, General Secretary, Scandinavian Section, Engelbrechtsgatan, 7, Stockholm, Sweden.

C. W. Sanders, General Secretary, New Zealand Section, Queen Street, Auckland, N.Z.

W. B. Fricke, General Secretary, Netherlands Section, 76, Amsteldijk, Amsterdam.

Th. Pascal, M.D., General Secretary, French Section, 59, Avenue de la Bourdonnais, Paris.

Decio Calvari, General Secretary, Italian Section, 380, Corso Umberto I., Rome.

Dr. Rudolf Steiner, General Secretary, German Section, 95, Kaiserallee, Friedenau, Berlin.

Jose M. Masso, Acting General Secretary, Cuban Section, Havana, Cuba.

#### Additional

Annie Besant, Benares, Author, [for 3 years].

G. R. S. Mead, London, Author, [for 3 years].

Khan Bahadur Naoroji Dorabji Khandalvala, Poona, Special Judge, [for 3 years].

Dinshaw Jivaji Edal Behram, Surat, Physician, [for 2 years].

4. Henry Steel Olcott, who with the late Helena Petrovna Blavatsky and others founded The Theosophical Society at New York, United States of America, in the year 1875, shall hold, during his lifetime, the position of President, with the title of "President-Founder," and he shall have, alone, the authority and responsibility and shall exercise the functions provided in the Rules and Regulations for the Executive Committee, meetings of which he may call for consultation and advice as he may desire.

5. The income and property of the Society, whencesoever derived, shall be applied solely towards the promotion of the objects of the Society as set forth

Francesca E. Arundale, Benares, Author, [for 2 years].

Tammacharla Ramachandra Row, Gooty, Retired Sub-Judge, [for 1 year].

Charles Blech, Paris, France, Retired Manufacturer, [for 1 year].

in this Memorandum of Association, and no portion thereof shall be paid or transferred directly or indirectly by way of dividends, bonus, or otherwise by way of profits to the persons who at any time are or have been members of the Society or to any of them or to any person claiming through any of them: Provided that nothing herein contained shall prevent the payment in good faith of remuneration to any officers or servants of the Society or to any members thereof or other person in return for any services rendered to the Society.

6. No member or members of the General Council shall be answerable for any loss arising in the administration

or application of the said trust funds or sums of money or for any damage to or deterioration in the said trust premises unless such loss, damage or deterioration shall happen by or through his or their wilful default or neglect.

7. If upon the dissolution of the Society there shall remain after the satisfaction of all its debts and liabilities any property whatsoever, the same shall not be paid to or distributed among the members of the Society or any of them but shall be given or transferred to some other Society or Association, Institution or Institutions, having objects similar to the objects of this Society, to be determined by the votes of not less than

Witnesses to the signatures:

(Sd.) WM. GLENNY KEAGEY

,, ARTHUR RICHARDSON

.. PYARE LAL

.. PEROZE P. MEHERJEE

three-fifths of the members of the Society present personally or by proxy at a meeting called for the purpose, or in default thereof by such Judge or Court of Law as may have jurisdiction in the matter.

8. A copy of the Rules and Regulations of the said Theosophical Society is filed with this Memorandum of Association, and the undersigned being seven of the members of the Governing Body of the said Society do hereby certify that such copy of such Rules and Regulations of the said Theosophical Society is correct.

As witness our several and respective hands, this . . . day of March 1905.

(Sd.) H. S. OLCOTT
,, W. A. ENGLISH
,, SUBRAMANIAM

,, FRANCESCA E. ARUNDALE
,, UPENDRANATH BASU
... ANNIE BESANT

" N. D. KHANDALVALA

# RULES AND REGULATIONS FOR THE MANAGEMENT OF THE ASSOCIATION NAMED "THE THEOSOPHICAL SOCIETY," ADYAR, MADRAS

- 1. The General Council shall be the Governing Body of The Theosophical Society. All members of the General Council shall at all times be Fellows of the Society and not less than seven members of this Council shall be resident in India.
- 2. (a) The President, the Vice-President, the Treasurer, the Recording Secretary and the General Secretaries of the component National Societies (otherwise called Sections) shall exofficio be members of the General Council. The terms of those members of the General Council who hold office ex-officio shall expire with the vacation of their qualifying office.
- (b) The General Council shall include not less than 5 and not more

- than 10 Additional Members, among whom all past Presidents while in good standing shall automatically have place. Other members shall on the nomination of the President be elected for a term of three years by vote of the General Council at its Annual Meeting, their names having been sent to the Members of the General Council at least three months before the Annual Meeting.
- (c) Members retiring shall be eligible for re-election.
- (d) The Recording Secretary shall be the Secretary of the General Council.
- 3. It shall be competent for the General Council to remove any of its members, or any officer of the Society excepting the President of The Theosophical Society and excepting the General

Secretaries of National Societies, by a three-fourths majority of its whole number of members, at a special meeting called for the purpose, of which at least three months' notice shall have been given, the quorum consisting, however, of not less than five members.

- 4. (a) The General Council shall ordinarily meet once a year, at the time of the Annual Meeting or Convention of the Society; but a special meeting may be called at any time by the President, and shall be called at any time by him, or if not by him, by the Recording Secretary, on the written requisition of not less than one-fourth of the total number of members; but of such special meetings not less than three months' notice shall be given, and the notice shall contain a statement of the special business to be laid before the meeting.
- (b) Whenever, at any time or place, a Convention or other function of the Society shall bring together a number of members of the General Council the President at his discretion may call such members to a meeting for the purpose of study and discussion of any matters concerning the Society that he considers appropriate to lay before them. The meeting may then forward to the President its report on such matters and may make recommendations thereon. Such meetings shall be of a consultative nature without administrative or legislative authority.

In the event the President does not himself attend such a meeting he may appoint the Vice-President or some other member of the General Council to preside in his stead.

The President or his Deputy shall give not less than thirty days' notice of such meeting to all members of the General Council who may be expected to be present at the function that provides occasion for the meeting, but all members of the Council shall have the right to attend. 5. At all meetings of the General Council, members thereof may vote in person, or in writing, or by proxy duly given to another member of the General Council for the particular meeting concerned. Except as aforesaid no member shall exercise more than one vote. No member shall be allowed to exercise more than 5 proxy votes.

Note: Meetings include Adjourned Meetings.

- 6. The quorum of an ordinary as well as of a special meeting of the General Council shall be five members. If there be no quorum, the meeting may be adjourned *sine die*, or the Chairman of the meeting may adjourn it to another date, of which three months' further notice shall be given, when the business of the meeting shall be disposed of, irrespective of whether there is a quorum present or not.
- 7. The President, or in his absence the Vice-President, of the Society shall preside at all meetings of The Theosophical Society or of the General Council, and shall have a casting vote in the case of an equal division of the members voting on any question before the meeting.
- 8. In the absence of the President and the Vice-President, the meeting shall elect a chairman from among the members present at the meeting, and he shall have a casting vote in the case of a tie.
- 9. The term of office of the President shall be seven years.
- 10. Six months before the expiration of a President's term of office, or within three days of the office becoming vacant, the Recording Secretary shall call upon the members of the General Council for nominations for the office of President. Such call shall be by cable, confirmed within two days by air and ordinary mails. Each member of the General Council shall be entitled to make not more than three nominations and each member who is a General Secretary shall

consult with the respective Governing Body of the Section and shall make his nominations on its behalf. Any member of the Society in good standing shall be eligible for nomination. The written consent of the member nominated shall be necessary for the validity of the nomination. It shall be the responsibility of the nominator to see that such consent reaches the Recording Secretary within the time herein provided. Such consent, if sent by telegraph or cable, shall be confirmed by letter so as to reach the Recording Secretary within forty-five days of the call for nominations.

At the expiration of forty-five days the Recording Secretary shall place all the nominations received, together with the relevant papers, before the Executive Committee at a meeting specially convened for the purpose. At such meeting the Executive Committee shall examine the nominations. All nominations for which the written consent of the nominated member has not been received, as provided in the foregoing paragraph, shall be rejected as invalid. The others shall be counted and the names shall be listed in the order of the number of nominations received, beginning with the largest number of such nominations. Such list shall be designated "the nominations list ".

From the nominations list a second list designated the "voting list" shall be prepared on which names from the nominations list shall be placed in the following manner:

- (i) The first name on the nominations list, or in the event of a tie, the names so tied.
- (ii) If there is no tie, the next name, if any remain on the nominations list, or in the event of a tie, the names so tied.
- (iii) There shall then be added from the nominations list in the order of the number of nominations received, beginning

with the largest number, the names, if any remain, of any other nominees who have been nominated by not less than half the members of the General Council.

The voting list as so prepared and amended as hereinafter provided shall constitute the list of nominees to be voted upon and shall not be subject to challenge.

The Recording Secretary shall immediately in writing communicate all the names on the voting list to each nominee thereon. If the nominee is not at Adyar, the communication shall be by telegraph or cable, confirmed within two days by air and ordinary mails.

If during the succeeding twenty-eight days, any nominee withdraws his name, the Executive Committee shall cancel such name from the voting list and if such cancellations reduce the remaining names on the voting list to less than three, shall add thereto the next name if any remain (or in the event of a tie, the next names so tied) on the nominations list.

Immediately following the expiration of the twenty-eight days the Recording Secretary shall communicate the voting list to the General Secretaries and to Lodges (Branches) and Fellows-at-large attached to the Headquarters at Adyar. Such communication to the General Secretaries shall be by telegraph or cable confirmed within two days by air and ordinary mails.

If, however, a withdrawal is received by the Recording Secretary during the last five days of the twenty-eight day period, he shall have five additional days in which to immediately notify the next nominee on the nominations list by cable and to receive his consent. In the event of his not consenting to stand for election, five additional days shall again be given for similar notification and a response in respect of each succeeding name on the nominations list until a substitute consents to stand. In the

event of the nominations list thus becoming exhausted the election shall proceed in accordance with the provisions of the next preceding paragraph.

If, thereafter, any nominee withdraws his name or dies, such name shall be struck from the voting list but no further substitution from the nominations list shall be made. Provided, however, that in the event of the death, at any time prior to the counting of the election votes, of any of the nominees on the voting list, such list shall be thereby cancelled and the whole procedure shall be repeated beginning with the call for nominations. In the event of such cancellation, the Recording Secretary shall immediately communicate the fact together with the call for new nominations to all members of the General Council by telegraph or cable confirmed within two days by air and ordinary mails.

If only one name remains on the voting list the subsequent vote shall be taken on a "For" or "Against" ballot.

Upon receipt of the voting list each General Secretary shall take the individual vote of each of the voter-members of his Section, that is, of members of the National Society on his rolls at the close of the last official year of the Section, and whose annual dues at that time were not in arrears for more than one year, and shall communicate the result to the Recording Secretary, who shall himself take the votes of the Lodges (Branches) and Fellows-at-large attached to the Headquarters at Advar, who are not in arrears of annual dues for more than one year at the close of the last official year of the Society at Adyar.

At the expiration of six months from the call for nominations by the Recording Secretary, the results of the voting shall be counted by him. The Executive Committee shall appoint two of its members as scrutineers. The nominee receiving the largest number of votes shall be declared elected to the office of President.

If the voting results in the largest number of votes being given equally to two or more of the nominees, or if the voting upon the "For" or "Against" ballot results in the rejection of the one member receiving nomination, the nomination and election procedure herein provided shall be repeated and the President then in office or the Vice-President, if he is temporarily filling such office, shall continue therein until a new President is elected.

11. (a) Within three months of his election the President shall nominate the Vice-President, subject to confirmation by the General Council. His term of office shall be at the discretion of the President but when the Vice-President has been three vears in office that office shall become vacant by the passage of time and the President, within three months, shall again make a nomination and submit it to the General Council. Notwithstanding this provision the Vice-President shall remain in office and his term shall continue until a successor has been nominated and confirmed. The Vice-President in office may be renominated. It shall be his duty, among other things, to carry on the executive functions of the President in case the President is dead or where the Executive Committee finds that he is disabled by accident, serious illness or otherwise from performing the duties of the President.

(b) Notwithstanding anything herein contained the Vice-President doing the duties of the President shall continue to be the Vice-President of the Society until a new Vice-President has been nominated and his nomination confirmed by the General Council. In case of death, resignation or disability of such Vice-President doing the duties of the President, the Executive Committee shall

appoint a Vice-President who shall hold Office until the new President shall have nominated a new Vice-President and his nomination be confirmed by the General Council.

- 12. The President shall appoint the Treasurer, the Recording Secretary and such subordinate officials as he may find necessary, which appointments shall be reported to the Executive Committee at its next following meeting, and shall continue to be valid unless rejected by a majority of votes of the whole number of members in the Executive Committee, voting in person or by proxy, at the said meeting, the newly appointed Treasurer or Recording Secretary not being present, nor counting as a member of the Executive Committee for purposes of such vote.
- 13. The Treasurer, Recording Secretary and subordinate officials being assistants to the President in his capacity as executive officer of the General Council, the President shall have the authority to remove any appointee to such offices.
- 14. The General Council shall at each Annual Meeting appoint an Executive Committee for the ensuing year, of not less than seven and not more than ten members, of whom at least six shall be members of the General Council. The President, the Vice-President, the Treasurer, and the Recording Secretary shall be *ex-officio* members. Vacancies caused by death or resignation or otherwise may be filled by co-optation.
- 15. The Executive Committee shall meet at least once in every three months for the receipt and consideration of accounts and the despatch of any other business. A special meeting may be called by the President whenever he thinks fit, and such meeting shall be called by him, or if not by him, by the Recording Secretary, when he is required to do so, by not less than three members of the Committee, who shall state to him in writing the busi-

ness for which they wish the meeting to assemble.

- 16. At a meeting of the Executive Committee, three members shall constitute a quorum.
- 17. The Committee shall, in the absence of the President and Vice-President, elect a Chairman to preside over the meeting and in case of equality of votes the Chairman for the time being shall have a casting vote.
- 18. The President shall be the custodian of all the archives and records of the Society, and shall be the Executive Officer and shall conduct and direct the business of the Society in compliance with its rules; he shall be empowered to make temporary appointments and to fill provisionally all vacancies that occur in the offices of the Society, and shall have discretionary powers in all matters not specifically provided for in these Rules.
- 19. All subscriptions, donations and other moneys payable to the Association shall be received by the President, or the Treasurer, or the Recording Secretary, the receipt of either of whom in writing shall be sufficient discharge for the same.
- 20. The securities and uninvested funds of The Society shall be deposited in the State Bank of India, Madras, or such other Bank or Banks as the Executive Committee, T.S., shall select; and in countries outside of India, in such Banks as the President shall select. Cheques drawn against the funds shall be signed by any two of the following, the President, the Treasurer, the Recording Secretary and any other persons appointed by the President for the purpose under Rule 12.
- 21. (a) Notwithstanding anything in these rules to the contrary the President may, touching the assets and affairs of the Society beyond India, at any time and from time to time by a Power of Attorney appoint any persons to be the Attorneys of the Society for such period

and subject to such conditions and for such purposes and with such authorities and powers as he may think fit, and he may if necessary affix the Seal of the Society thereto.

Without prejudice to the general powers conferred as aforesaid, the President may grant power and authority among others to sell, grant mortgage, lease or otherwise transfer the assets of the Society, movable or immovable, real or personal, and to receive subscriptions, donations, legacies, moneys and other property, movable or immovable, and to institute, continue, compromise, compound or refer to arbitration any actions, suits, or other proceedings, and to take and hold shares in any Company, and to vote at any meetings thereof, and to sub-delegate all or any of his powers, and to give receipts and releases, and to sign, seal and deliver any instrument or document and have the same registered.

- (b) The funds of the Society may be invested by the President, with the advice and consent of the Executive Committee, in Government or other Public securities, or in the purchase of immovable property or First Mortgages on such property.
- (c) The Adyar Estate of the Society in Madras including the Society's original Headquarters and all other properties in Adyar since acquired by gift, purchase or otherwise, shall not at any time be disposed of by sale, gift, exchange, mortgage or otherwise; save that the President, if specially authorized by a resolution of the General Council, passed by a three-fourths vote of their members, voting in person, in writing or by proxy, may dispose of such outlying portions of the said Adyar Estate, as may be specified in such Resolutions.
- (d) The President may, with the advice and consent of the Executive Committee, sell, mortgage or otherwise transfer

any investment in Government or other Public securities, or any movable or immovable property of the Society other than those mentioned in Rule 21 (c).

- 22. (a) All deeds whereby immovable properties belonging to the Society are transferred or otherwise dealt with shall have affixed to them the Seal of the Society with the signature of the President and of the Recording Secretary. In case of the absence of the President or where the Executive Committee finds that he is by reason of disability caused by accident, illness or otherwise, unable to act, it may appoint two of its members to sign in place of the President.
- (b) All transfers of movable property, if in writing, shall bear the signature of the President and of the Recording Secretary but need not have affixed to them the Seal of the Society. In case of the absence of the President or where the Executive Committee finds that he is by reason of disability caused by accident, illness or otherwise, unable to act, it may appoint two of its members to sign in place of the President.

*Note:* The procedure detailed in this Rule is without prejudice to the powers conferred under Rule 21 (a).

- 23. The Society may sue and be sued in the name of the President.
- 24. The Recording Secretary may, with the authority of the President, or of the two substitutes appointed according to Rule 22, affix the Seal of the Society on all instruments requiring to be sealed, and all such instruments shall be signed by the President or by the two substitutes above mentioned and the Recording Secretary.
- 25. On the death or resignation of the President, the Recording Secretary shall at once make arrangements for the election of a new President, in accordance with Rule 10, and until such new President is elected the Vice-President shall perform the duties of President.

#### HEADQUARTERS

- 26. Headquarters of the Society are established at Adyar, Madras, and are outside the jurisdiction of the Indian Section.
- 27. The President shall have full power and discretion to permit to any person the use of any portion or premises in the Adyar Estate for occupation and residence, on such terms as the President may lay down, or to refuse permission so to occupy or reside. Any person occupying or residing under the permission granted by the President shall, on a fortnight's notice given by or on behalf of the President, unconditionally quit the premises before the expiry of that period.

#### **ORGANIZATION**

- 28. Every person of ten full years of age, without distinction of race, creed, sex, caste or color, shall be eligible for membership in the Society, but those under the age of eighteen shall be admitted to membership only with the written consent of parent or guardian, and shall have no right to vote until they have reached the age of eighteen years.
- 29. (a) Admission to membership may be obtained through the President of a Lodge (Branch), the General Secretary of a National Society, or through the Recording Secretary; and a Diploma (Certificate) of membership shall be issued to the Fellow, bearing the signature of the President, and countersigned by the General Secretary, where the applicant resides within the territory of a National Society, or countersigned by the Recording Secretary, if admission to membership has been obtained through the Recording Secretary.
  - (b) The date of membership will begin
- (i) When admission has been made through the General Secretary, Federation Secretary or Presidential Agent from

- the date of acceptance by the General Secretary, Federation Secretary or Presidential Agent, as entered by him and duly reported to the Recording Secretary at Adyar.
- (ii) When admission has been made through the Recording Secretary, from the date of acceptance of the application by him, and so recorded in his office.
- 30. Lodges (Branches) and Fellows, whether unattached or attached to a Lodge (Branch), residing within the territory of a National Society, must belong to that National Society, unless coming under Rule 31.

Provided that with the sanction of the President a member who belongs to one National Society may while retaining his membership of that National Society belong to another National Society, but he shall not be allowed to cast more than one vote in matters relating to The Theosophical Society.

- 31. (a) When an individual Fellow in good standing, for any serious and weighty reason, sufficient in the opinion of the President to justify such action, is desirous of leaving the National Society to which he belongs, but is not desirous of leaving The Theosophical Society, such individual Fellow may become directly attached to Headquarters, Adyar, severing all connection with the National Society. Such application must be made through the General Secretary of the National Society concerned who shall be under obligation duly to forward such application to the President as expeditiously as possible. This shall equally apply in the case of the admission of any new member.
- (b) A Fellow of The Theosophical Society in good standing who is desirous of leaving the National Society to which he or she belongs or ought to belong under Rule 30 and of joining another National Society, may be permitted by the President to do so provided such Fellow presents

reason sufficient in the opinion of the President to justify such action, and provided further that the application for transfer is submitted with the approval of the General Secretaries of both National Societies concerned.

This rule shall apply equally in the case of the admission of a new member.

(c) When a Lodge (Branch), for any serious and weighty reason, sufficient in the opinion of the President to justify such action, is desirous of leaving the National Society to which it belongs, but is not desirous of leaving The Theosophical Society, such Lodge (Branch) may become directly attached to Headquarters, Adyar, severing all connection with the National Society. Such application must be made through the General Secretary of the National Society concerned who shall be under obligation duly to forward such application to the President as expeditiously as possible.

Before any Lodge (Branch) shall have the right to apply to be directly attached to Headquarters, Advar, it shall have mailed to each of its members individually a notice that such application is about to be considered. Such notice must be mailed not less than two weeks before the meeting at which such consideration is to take place, and voting on the application shall be deferred until two months after that meeting. If at such first meeting, or any succeeding meeting pursuant thereto, it is decided to bring the application to a vote as herein provided, a full report of the reasons for such action shall at once be sent to the General Secretary of the National Society concerned.

Any application for separation from the National Society to which a Lodge (Branch) belongs shall be ineffective unless two-thirds of the members of the Lodge (Branch) vote in favor thereof.

(d) In the event of any undue delay in the transmission of any application

under any of the foregoing provisions of this Rule, a correct copy of such application (duly signed or otherwise authenticated) may be transmitted directly to the President by the Fellow or Lodge (Branch) concerned, and the President may act on such copy if in his absolute discretion it appears to him to be fit or proper that he should so act. Any action so taken by the President shall be as valid and effectual, for all purposes, as if it had been taken on the original application submitted for transmission to the President. The Fellow or Lodge (Branch), when forwarding such copy to the President directly, shall state the full grounds and reasons for the direct transmission.

32. Lodges (Branches) or Fellows-atlarge, in countries where no National Society exists, must apply for their Charters or Diplomas (Certificates) directly to the Recording Secretary, and may not, without the sanction of the President, belong to National Societies within the territorial limits of which they are not situated or resident.

33. Any seven Fellows may apply to be chartered as a Lodge (Branch). In a country where no National Society exists the application must be forwarded to the President of the Society through the Recording Secretary.

34. The President shall have authority to grant or refuse applications for Charters, which, if issued, must bear his signature and that of the Recording Secretary, and the Seal of the Society, and be recorded at the Headquarters of the Society.

35. (a) A National Society may be formed by the President, upon the application of seven or more chartered Lodges (Branches).

(b) The President shall have authority at his discretion to issue (and to cancel) certificates of Federation to any national group of Lodges (Branches) not

sufficient in number or otherwise unable to form or to maintain a National Society, as defined in these Rules, or where in his judgment territorial division or other causes have made such Federation necessary or desirable. Any such Federation may elect an Organizing Secretary or other executive officer or officers for the purpose of further organization and the transaction of Federation business.

A Federation shall not appoint a General Secretary (as the term is used in these Rules) nor be represented on the General Council. In all other respects the Rules applicable to National Societies and to General Secretaries shall apply to Federations and to their chief executives.

(c) The President shall have authority at his discretion to appoint and to withdraw appointments of Presidential Agents to act under his instructions for the purposes of conducting the business and administration of the Society in any place and in any respect not inconsistent with these Rules. Each such appointment and the power delegated to each such Agent shall be evidenced by a Letter of Appointment referring to this Rule.

36. All Charters of National Societies or Lodges (Branches) and all Diplomas (Certificates) of membership derive their authority from the President, acting as Executive Officer of the General Council of the Society, and may be cancelled by the same authority.

37. Each Lodge (Branch) and National Society shall have the power to make its own Rules which shall not be incompatible with the Rules of the National Society to which the Lodge (Branch) belongs or with the Rules of The Theosophical Society.

All Rules of Lodges (Branches) and National Societies and amendments thereto shall be submitted for approval within thirty days of their adoption as follows: In the case of a Lodge (Branch) belonging to a National Society, all such Rules and amendments shall be submitted to the General Secretary of that National Society; in the case of a National Society or of a Lodge (Branch) not situated within the territory of a National Society or of a Lodge directly attached to Adyar under Rule 31 (c) all such Rules or amendments thereto shall be submitted directly to the President.

All Rules and amendments shall be put into force if approval has not been refused within ninety days of acknowledgment of their receipt.

If by a change made in a Rule of The Theosophical Society, any Rule of a National Society, which at its inception was not incompatible with the Rules of The Theosophical Society, ceases to be compatible, such a Rule of the National Society shall cease to be valid and shall be amended so as to be in consonance with the Rules of The Theosophical Society.

If by a change made in a Rule of a National Society, any Rule of a Lodge (Branch) which at its inception was not incompatible with the Rules of the National Society, ceases to be compatible, such a Rule of the Lodge (Branch) shall cease to be valid and shall be amended so as to be in consonance with the Rules of the National Society.

38. Every National Society must appoint a General Secretary, who shall be the channel of official communication between the General Council and the National Society.

39. The General Secretary of each National Society shall forward to the President, annually, not later than the first day of November, a report of the year's work of his Society, and at any time furnish any further information the President or General Council may desire.

40. National Societies hitherto known as Sections, which have been incorporated under the name of "The... Section of The T.S." before the year 1908, may retain that name in their respective countries, in order not to interfere with the incorporation already existing, but shall be included under the name of National Societies, for all purposes in these Rules and Regulations.

#### FINANCE

- 41. (a) The fees payable to the General Treasury by Lodges (Branches) not comprised within the limits of any National Society are as follows: for Charter, £l; for each Diploma (Certificate) of Membership, 5s.; for the Annual Subscription of each Fellow, 5s.; but in the case of Lodges (Branches) comprised within the jurisdiction of a National Society, the Annual Subscription of each Fellow shall be the amount prescribed for Annual Subscription by the by-laws or other regulations of the National Society within which the Lodge exists; or equivalents.
- (b) New members joining otherwise than at the beginning of the year shall at the time of admission pay their Annual Subscription *pro rata* for the remaining period of the fiscal year at the rate of £0-1-3 per quarter.
- 42. Fellows-at-large, resident within the territory of a National Society under the Provision of Rule 31 (a), shall pay to the General Treasury as Entrance Fee and as Annual Subscription the amounts prescribed by the by-laws or other regulation of such National Society, but not less than 5s. and £l respectively.

Fellows-at-large, not resident within the territory of a National Society, shall pay to the General Treasury an Entrance Fee of 5s. and an Annual Subscription of £1.

43. (a) Each National Society shall pay into the General Treasury ten per

cent of the total amount received for its own National dues, and shall remit the same to the Treasurer at Adyar on or before the first day of September of the current year, and the financial year of the Society shall close on 30th September.

- (b) Notwithstanding the provisions of Rule 41 (a) and Rule 42, the President at his discretion may authorize Presidential Agents to collect dues in territories to which they have been appointed and to remit in accordance with Rule 43 (a).
- 44. In the event of the cancellation of any Charter under Rule 36, or the dissolution of any National Society or of a Lodge (Branch), the constituent Charter of the National Society or of the Lodge (Branch), granted by the President, shall ipso facto, become forfeited or lapsed, and all property, real or personal, including Charters, Diplomas (Certificates), Seal, Records and other papers belonging to or in the custody of such National Society or Lodge (Branch) shall vest as follows:
- (a) in the Society, in the case of a National Society or of a Lodge (Branch) not within the territory of a National Society or of a Lodge (Branch) coming under Rule 31 (c), (except where the law of the country where the National Society or Lodge (Branch) is situated prohibits such vesting, in which case the property shall vest as hereinafter provided), and delivery shall be made to the President, or to his nominee on his behalf.
- (b) in the National Society in which the Lodge (Branch) is situated, in the case of a Lodge (Branch) within the territory of a National Society, said Lodge (Branch) not coming under Rule 31 (c), and delivery shall be made to the General Secretary of the said National Society.

No National Society or Lodge (Branch) whose Charter shall have become forfeited

or lapsed shall continue to use the name, motto, or seal of the Society except for the purpose of vesting in the Society or in the National Society as the case may be the real and personal property of such National Society or Lodge (Branch).

Provided, nevertheless, that the President shall have power to revive the Charter of the National Society or the Lodge (Branch), as the case may be, whose Charter shall have become so forfeited or lapsed, and to transfer the said Charter to other Lodges (Branches) being not less than seven in number, or to other Fellows being not less than seven in number, as the case may be, or to such other nominees of his as in his judgment shall seem best for the interests of the Society.

In cases under (a) above, where such vesting in the Society is prohibited by the law of the country in which is situated the National Society or the Lodge (Branch) whose Charter has become forfeited or lapsed as aforesaid, the property shall vest in a local Trustee or Trustees appointed by the President.

To effect any transfer of property, to which the Society may become entitled under this Rule, it shall be lawful for the President to appoint an agent or nominee for the purpose of executing any necessary document or documents, or for taking any steps necessary effectually to transfer the said property to the Society.

45. The financial accounts of the Society shall be audited annually by qualified Auditors who shall be appointed by the General Council at each Annual Meeting for the ensuing year.

#### MEETING

- 46. The Annual General Meeting or Convention of the Society shall be held in India in the month of December, at such place as shall be determined by the Executive Committee in June of each year. Lodges (Branches) desirous of inviting the Convention and able to make due arrangements for its accommodation, shall send the invitation in March of the current year, with particulars of the arrangements they propose to make.
- 47. At least once in every seven years a World Congress of The Theosophical Society may be held out of India, at a place and date to be fixed by the General Council, but so as not to interfere with the Annual Convention in India.
- 48. The President shall have the power to convene special meetings of the Society at his discretion.

#### REVISION

- 49. The General Council, of their own motion or on the motion of the Executive Committee and after at least three months' notice has been given to each member of said Council, may, by a three-fourths vote of those members who vote in person, in writing, or by proxy, make, alter or repeal the Rules and Regulations of the Society, in such manner as it may deem expedient.
- 50. The General Council may frame by-laws not inconsistent with these Rules and Regulations and may add to, alter, or repeal such by-laws, consistently with the said Rules and Regulations, as it may deem expedient.

# DIRECTORY FOR 1964

# Ex-Officio Members of General Council

President: MR. N. SRI RAM

Vice-President: Mr. James S. Perkins Recording Secretary: Mr. Jal B. Dorab

Treasurer: Mr. S. Somasundaram

# National Societies, Federations and Presidential Agencies

| Date of formation | Name of Section          |         | General Secretary                           |         | Address   |  |
|-------------------|--------------------------|---------|---|---------|---|--|
| 1886<br>1888      | United States<br>England |         | Dr. Henry A. Smith<br>Mr. V. Wallace Slater |         | P.O. Box 270, Wheaton, Illinois<br>50 Gloucester Place, London, W.1 |  |
| 1891              | India                    | •••     | Mrs. Radha Burnier                          | • • •   | The Theosohical Society, Varanasi 1                                 |  |
| 1895              | Australia                | •••     | Miss Helen V. Zahara                        | •••     | 29 Bligh Street, Sydney, N.S.W.                                     |  |
| 1895              | Sweden                   | • • • • | Mrs. Kerstin Berg                           | • • • • | Östermalmsgatan 12, Stockholm                                       |  |
| 1896              | New Zealand              | •••     | Miss Bertha H. Darroch                      | •••     | 10 Belvedere St., Epsom, Auckland, S. E. 3                          |  |
| 1897              | The Netherlands          | •••     | Ir. A. J. H. van Leeuwen                    | •••     | Amsteldijk 76, Amsterdam Z.   |  |
| 1899              | France                   | •••     | Dr. Paul Thorin                             | •••     | 4 Square Rapp, Paris VII  |  |
| 1902              | Italy                    | • • • • | Sigr. Roberto Hack                          | •••     | 71 Via Leonardo Ximenes, Firenze                                    |  |
| 1902              | Germany                  | • • • • | Herr Heinrich Nagel                         | • • • • | Eilbekerweg 67a, (24a) Hamburg 22                                   |  |
| 1905              | Cuba                     | • • • • | Señor Celestino Aguilar Mor                 | a       | P.O. Box 6365, Havana   |  |
| 1907              | Hungary                  | • • • • |   |         | •••   |  |
| 1907              | Finland                  |         | Mrs. Sylvi Horstio                          |         | Vironkatu 7C, Helsinki  |  |
| 1908              | Russia                   |         | •••   |         | •••   |  |
| 1909              | Czechoslovakia           |         |   |         | •••   |  |
| 1909              | Southern Africa          | •••     | Mrs. M. E. Nairn                            |         | P.O. Box 3353, Salisbury, Southern Rhodesia                         |  |
| 1910              | Scotland                 |         | Miss Jean Carstairs                         |         | 28 Gt. King St., Edinburgh  |  |
| 1910              | Switzerland              |         | M. Georges Tripet                           |         | Winkelriedstrasse 21, Berne   |  |
| 1911              | Belgium                  |         | M. Antoon E. de Pauw                        |         | Voskenslaan 141A, Ghent   |  |
| 1912              | Indonesia*               |         |   |         |   |  |
| 1912              | Burma                    |         | U Hla Maung                                 |         | No. 102, 49th Street, Rangoon                                       |  |
| 1912              | Austria                  |         | Herr Fritz Schleifer                        |         | Paracelsusgasse 4, Vienna III                                       |  |
| 1913              | Norway                   |         | Mrs. Ruth Wessel Nielsen                    |         | Oscars gate 11, Oslo N. V.  |  |
| 1918              | Egypt†                   |         | Mr. Zaki Awad                               |         | (President, "Hikmet El Kadima"<br>Lodge), 18 Emad El Din St., Cairo |  |
| 1918              | Denmark                  |         | Hr. Jörgen Winde                            |         | Gl. Praestegaard, NRAaby  |  |
| 1919              | Ireland                  |         | Mrs. Evelyn O. Hornidge                     |         | 31 Pembroke Road, Dublin  |  |
| 1919              | Mexico                   |         | Señor Arturo Vado López                     |         | Iturbide 28, Mexico D. F.   |  |
| 1919              | Canada                   |         | Mr. Dudley W. Barr                          |         | 52 Isabella Street, Toronto 5, Ont.                                 |  |
| 1920              | Argentina                | •••     | Señor Nazareno E. Rimini                    |         | Casilla Correo No. 238, Rosario (Pcia. Santa Fe)                    |  |
| 1920              | Chile                    |         | Señor Ricardo Michel AP.                    |         | Casilla 3603, Santiago  |  |
| 1920              | Brazil                   |         | Tenente Armando Sales                       |         | Rua Anita Garibaldi 29, 11° andar,<br>Sao Paulo                     |  |
| 1920              | Bulgaria                 |         |   |         |   |  |
| 1921              | Iceland                  |         | Hr. Sigvaldi Hjálmarsson                    |         | Ingolfsstr. 22, Reykjavik   |  |
| 1921              | Spain                    |         |   |         |   |  |
|                   | Portugal                 |         | Prof. Délio Nobre Santos                    |         | Campo Mártires Pátria 69, Lisbon                                    |  |
|                   | Wales                    |         | Miss Winifred B. Knowles                    |         | 10 Park Place, Cardiff  |  |
|                   | Poland                   |         |   |         |   |  |
|                   | Uruguay                  |         | Señor Victor Alvarez Bisbal                 |         | Palacio Diaz, 18 de Julio 1333,<br>Montevideo                       |  |

<sup>\*</sup> The T.S. in Indonesia prohibited by order of President Sukarno in May 1963—33 Lodges suspended. † No Section; Lodge only.

| Date of formation Name of Section |                           |      | General Secretary                             |     | Address  |  |  |
|-----------------------------------|---------------------------|------|---|-----|--|--|--|
| 1925                              | Puerto Rico               |      | Señora Carmen G. Ballard                      | *** | Apartado 534, Estacion Roosevelt,<br>Puerto Rico-00929 |  |  |
| 1925                              | Rumania                   |      | •••   |     |  |  |  |
| 1925                              | Yugoslavia                |      |   |     |  |  |  |
| 1926                              | Ceylon                    |      | Mr. D. L. F. Pedris                           |     | Alfred Place, Colpetty, Colombo                        |  |  |
| 1928                              | Greece                    |      | Mr. K. Melissaropoulos                        |     | Dragatsaniou str. 6, Athens (K)                        |  |  |
| 1929                              | Central America           |      | Señor José Joaquin Ulloa                      |     | P.O. Box 797, San José, Costa Rica                     |  |  |
| 1929                              | Paraguay                  |      |   |     | ***  |  |  |
| 1929                              | Peru                      |      |   |     | ***  |  |  |
| 1933                              | Philippines               | •••  | Mr. Domingo C. Argente                        |     | Corner Iba and P. Florentino Sts.,<br>Quezon City      |  |  |
| 1937                              | Colombia                  |      | Señora Carmen Correa de Vengoechea            |     | Apartado Postal 539, Bogotá                            |  |  |
| 1947                              | East Africa               |      | Mr. Rattanji H. Patel                         |     | P.O. Box 1565, Nairobi, Kenya                          |  |  |
| 1948                              | Pakistan *                |      | Mrs. Gool K. Minwalla                         |     | Noonan Road, Karachi 3                                 |  |  |
| 1948                              | Malaya and<br>Singapore † |      | Dr. C. H. Yeang                               |     | 88 China St., Penang                                   |  |  |
| 1949                              | Northern Ireland          |      | Dr. Hugh Shearman                             |     | 18 Brookhill Ave., Belfast 14                          |  |  |
| 1950                              | State of Israel *         |      | Mr. Hans Zeuger                               |     | P.O. Box 1264, Jerusalem                               |  |  |
| 1951                              | Japan                     |      |   |     | ***  |  |  |
| 1952                              | Viet-Nam                  |      | Mrs. Nguyen-thi-Hai                           |     | 72/6 Nguyen-dinh-Chieu, Saigon                         |  |  |
| 1953                              | Venezuela                 |      | Señor Pablo Bonilla T.                        |     | Apartado 2907, Caracas                                 |  |  |
| 1956                              | West Africa †             |      | Mr. K. Brakatu Ateko                          |     | P.O. Box 720, Accra, Ghana                             |  |  |
|                                   |                           | ties | Mr. J. B. S. Coats<br>in Europe, formed 1903) |     | 48 Abingdon Court, London W. 8,<br>England             |  |  |
| Canadi                            |                           |      | Mr. John P. Barnes<br>rters, Adyar, 1924)     |     | 2050 Cypress St., Vancouver 9, B.C.,<br>Canada         |  |  |

#### Additional Members of the General Council

- Mr. J. E. van Dissel, Maastrichterweg 168, Valkenswaard, The Netherlands (for 1963, 1964 and 1965).
- Dr. Hugh Shearman, 36 Cliftonville Road, Belfast 14, United Kingdom (for 1963, 1964 and 1965).
- SRIMATI RUKMINI DEVI ARUNDALE, The Theosophical Society, Adyar, Madras 20 (for 1964, 1965 and 1966).
- Mr. Geoffrey Hodson, 38 Matai Road, Green Lane, Auckland, S. E. 4, New Zealand (for 1962, 1963 and 1964).
- Mr. C. D. T. Shores, The Theosophical Society, Adyar, Madras 20 (for 1962, 1963 and 1964).
- MR. SIDNEY A. COOK, Turnstile House, Wayneflete Tower Ave., Esher, Surrey, England (for 1964, 1965 and 1966).
- MR. J. B. S. Coats, 48 Abingdon Court, London W. 8, England (for 1964, 1965 and 1966).
- Mrs. Gool K. Minwalla, The Theosophical Society, Noonan Road, Karachi 3, Pakistan (for 1962, 1963 and 1964).
- Miss Emma Hunt, 19 Belvedere St., Epsom, Auckland, S. E. 3, New Zealand (for 1962, 1963 and 1964).
- Mrs. Doris Groves, Flat 12, Lowman Court, Broomfield Road, Kew Gardens, Surrey, England (for 1962, 1963 and 1964).
- \* Presidential Agency | Presidential Agents and Organizing Secretaries are not members of the General Council.

# **MINUTES**

Of the Meeting of the General Council of The Theosophical Society held in Shanti Kunj, Indian Section, Theosophical Society, Vārānasi, on Wednesday, 25th December 1963 at 8.30 a.m.

#### PRESENT:

| Mr. N. Sri Ram           | <br>President (in the Chair) Proxy for the General Secretaries of The Theosophical Society in America, Belgium and the Philippines and for Mr. J. E. van Dissel, Additional Member. |
|--------------------------|---|
| Mr. James S. Perkins     | <br>Vice-President, and Proxy for the General<br>Secretary of the Theosophical Society in<br>Cuba.  |
| Mr. Jal B. Dorab         | <br>Recording Secretary, and Proxy for the General Secretaries of The Theosophical Society in Scotland and East Africa, and for Mr. C. D. T. Shores, Additional Member.             |
| Mr. S. Somasundaram      | <br>Treasurer.  |
| Mrs. Radha Burnier       | <br>General Secretary of The Theosophical Society in India, and Proxy for the General Secretary of The Theosophical Society in Sweden.  |
| Miss Helen V. Zahara     | <br>General Secretary of The Theosophical Society in Australia.   |
| Mr. Sigvaldi Hjálmarsson | <br>General Secretary of The Theosophical Society in Iceland.   |
| Mrs. Gool K. Minwalla    | <br>Additional Member.  |
| Srimati Rukmini Devi     | <br>Additional Member and Proxy for the General Secretary of The Theosophical Society in Argentina.   |
| Mr. J. B. S. Coats       | <br>Additional Member.  |
| Mrs. Doris Groves        | <br>Additional Member and Proxy for the General Secretary of The Theosophical Society in England.   |

Miss Joan S. Morris was present as Minutes Secretary by invitation.

- 1. Confirmation of Minutes: The Minutes of the Meetings of the General Council held on 25th and 31st December 1962, having been circulated to the members of the General Council, were taken as read and were adopted and signed.
  - 2. Matters arising out of the Minutes:

Nil.

3. Addition to Rule 29 of the Rules and Regulations of The Theosophical Society regarding "from what date a person becomes a member of The Theosophical Society". (Vide pages 130-31 and 134-35 of the Annual Report 1962.)

The following proposed additional new Rule to be known as Rule 29 (b) was circularized for voting:

- 29 (b) The date of membership will begin
  - (i) When admission has been made through the General Secretary, Federation Secretary or Presidential Agent from the date of acceptance by the General Secretary, Federation Secretary or Presidential Agent, as entered by him and duly reported to the Recording Secretary at Adyar.
  - (ii) When admission has been made through the Recording Secretary, from the date of acceptance of the application by him, and so recorded in his office.

The result of the voting was as follows:

Miss Helen Zahara stated that she did not receive the Agenda for the General Council meeting together with the voting paper and the accompanying letter dated 20th September 1963, and therefore she had been unable to discuss the matters involved with her Section Council. She was of the opinion that in matters such as the changing of the international Rules it was important to do so, especially when they affected Section procedure or policy. Under the circumstances she did not feel she could record a vote.

In changing the Rules at least three months' notice is required. It was generally agreed that in future, to meet any postal delay, the Agenda and relevant papers should be posted as early as possible to members of the Council.

After further discussion the addition to Rule 29 was declared adopted. The original rule 29 will be renumbered 29 (a).

4. Amendment to Rule 10 of the Rules and Regulations of The Theosophical Society to have two names on the voting list instead of three as per present Rule (vide page 135 Annual Report 1962).

As decided by the General Council at its meeting on 31st December 1962, the following amendment to Rule 10 was circularized:

- (1) Rule 10, para 3, sub-section (ii): The words "If the voting list then contains less than three names" be omitted and the words "If there is no tie" be substituted instead. So that this sub-section will read:
- "If there is no tie the next name, if any remain in the nominations list, or in the event of a tie, the names so tied."
  - (2) Sub-section (iii) be deleted completely.
  - (3) Sub-section (iv) be numbered as (iii).
- (4) In para 6 line 7, the word "three" will necessarily be altered to "two" so that this para will read:

"If during the succeeding twenty-eight days, any nominee withdraws his name, the Executive Committee shall cancel such name from the voting list and if such cancellations reduce the remaining names on the voting list to less than two, shall add thereto the next name if any remain (or in the event of a tie, the next names so tied) on the nominations list."

The result of the votes received was as follows:

For Against 32 1

In view of Miss Helen Zahara's comments on the non-receipt of the Agenda and voting papers, it was decided to give time for voting till the next General Council meeting in December 1964 to Miss Zahara and other members who had not so far voted; the votes already received are to stand and the final decision taken in December 1964.

It was brought to the attention of the Council that the Rules do not provide for Federation Secretaries to have the right to make nominations for the election of President or to be *ex-officio* members of the Council. The President expressed the view that the possibility of increasing the membership of the General Council might be considered in the future, and in any case representation of the larger Federations could be kept in mind when proposing the names of Additional Members for election to the Council.

5. To consider the suggestion made by Dr. Laurence J. Bendit to change the procedure in Rule 10 by forming an electoral college to elect the President.

The letter containing Dr. Bendit's suggestion was read and discussed. The President suggested that the opinion of all members of the General Council be invited and the subject be taken up at the next regular meeting of the Council.

6. To consider the suggestion made by Dr. Hugh Shearman to widen the scope of a Federation in Rule 35 (b) in order to make it possible to include in a Federation Lodges in adjacent countries.

At the General Council meetings held in 1956 and 1957 Dr. Hugh Shearman, Federation Secretary, Northern Ireland, had proposed an amendment to Rule 35 (b) "so as to make it unnecessary that when forming a Federation all Lodges should be in the same country". The proposal was held over.

In his correspondence on the subject Dr. Shearman pointed out that by omitting the use of the word "national" in the present Rule 35 (b) the Rule will become more useful for meeting possible eventualities. "Cases may arise when Federation may be useful for a couple of small adjacent countries or for a linguistic group within a large country. In either case some other basis than a 'national' one would be appropriate."

Dr. Shearman had therefore proposed that the words "or territorially adjacent" be introduced after the word "national" in Rule 35 (b) so as to read:

"The President shall have authority at his discretion to issue (and to cancel) certificates of Federation to any national or territorially adjacent group of Lodges (Branches) not sufficient in number or otherwise unable to form or to maintain a National Society, as defined in these Rules, or where in his judgment territorial division or other causes have made such Federation necessary or desirable. . . . ."

It was agreed that an amendment to the present Rule 35 (b) in accordance with Dr. Shearman's proposal be circulated for voting by the Council.

In addition it was proposed that a new clause be added to Rule 35 to cover the names of those Sections which have Lodges in countries which are territorially adjacent. Miss Helen Zahara was asked to draft an amendment to be placed before the Council for further discussion at its adjourned meeting on 31st December.

- 7. To consider Mr. Hans Zeuger's suggestion to clarify in the Rules and Regulations of The Theosophical Society the position of "a member in good standing".
- Mr. Hans Zeuger, Presidential Agent for Israel, had suggested the introduction of a clause in the Rules and Regulations defining "a member in good standing," as such clarification would be useful for maintaining correct records and for the election machinery within the Section.

In the discussion that followed it was pointed out that as each Section has its own rules, which are drawn up to meet local conditions, and as in some cases the financial year of Sections differs from that of the international Society, it would be extremely difficult to make a single rule in the international Rules defining "a member in good standing". Also some Section rules provide in certain cases for exemption of dues.

The only time when the international Rules govern the question is in the case of voting for the President. Rule 10, para 11 provides that those members who are eligible to vote are those who are not in arrears of annual dues for more than one year at the close of the last official year (i.e. the last official year of each Section). It was suggested that in the cases of Presidential Agencies this might be taken as a guide. In any doubtful case, or where a Presidential Agent felt that special circumstances might warrant a member being kept in good standing, even though he could

not pay his dues, he could refer the matter to the President or to the Recording Secretary for a decision.

8. Election of three (3) Additional Members of the General Council for the years 1964, 1965 and 1966, in place of (1) Srimati Rukmini Devi, (2) Mr. Sidney A. Cook, and (3) Mr. J. B. S. Coats, whose terms of appointment expire this year.

The undermentioned members were declared duly elected as Additional Members for the period of three years (1964, 1965 and 1966). The result of the voting was as follows:

|                      | For | Against |
|----------------------|-----|---------|
| Mr. Sidney A. Cook   | 33  | Nil     |
| Srimati Rukmini Devi | 33  | ,,      |
| Mr. J. B. S. Coats   | 32  | ,,      |

#### 9. Any other Business.

As she would not be able to be present at the Adjourned Meeting of the General Council, Srimati Rukmini Devi sought the Chairman's permission to draw the attention of the Council to the recent booklet *There is no Religion Higher than Truth* by Mr. E. L. Gardner, published by the Theosophical Publishing House in England. In her opinion this reflected detrimentally on the Society and on C. W. Leadbeater and Annie Besant. Unfortunately the impression had been given that the President approved of the statements contained in the booklet.

In the discussion that followed, the view was expressed by several members present that the pamphlet would unnecessarily cause controversy and create confusion, especially in the minds of new members, apart from the fact that Mr. Gardner had made statements which were historically inaccurate.

The President, Mr. N. Sri Ram, observed that every person had the right to express his views. He would be publishing a note on the subject in *The Theosophist*. He had intended it to appear in the January issue, but had held it over for a month at the request of Mr. V. Wallace Slater, General Secretary in England, who was also issuing a statement on the booklet. It was thought by those present that members throughout the world would appreciate receiving a statement from the President, expressing his own views on the matter.

(The Meeting of the General Council was then adjourned to Tuesday, 31st December at 2.00 p.m.)

#### **MINUTES**

Of the Adjourned Meeting of the General Council of The Theosophical Society, held in Shanti Kunj, Indian Section, Theosophical Society, Vārānasi, on Tuesday, 31st December 1963 at 2.00 p.m.

#### PRESENT:

| Mr. N. Sri Ram   | <br>President (in the Chair) Proxy for the General Secretaries of The Theosophical Society in America, Belgium, and the Philippines, and for Mr. J. E. van Dissel, Additional Member. |
|--|---|
| Mr. James S. Perkins   | <br>Vice-President, and Proxy for the General<br>Secretary of The Theosophical Society<br>in Cuba.  |
| Mr. Jal B. Dorab   | <br>Recording Secretary, and Proxy for the General Secretaries of The Theosophical Society in Scotland and East Africa, and for Mr. C. D. T. Shores, Additional Member.               |
| Mr. S. Somasundaram  | <br>Treasurer.  |
| Mrs. Radha Burnier   | <br>General Secretary of The Theosophical Society in India, and Proxy for the General Secretary of The Theosophical Society in Sweden.  |
| Miss Helen V. Zahara   | <br>General Secretary of The Theosophical Society in Australia.   |
| Mr. Sigvaldi Hjálmarsson   | <br>General Secretary of The Theosophical Society in Iceland.   |
| Mrs. Gool K. Minwalla<br>Mr. J. B. S. Coats<br>Mrs. Doris Groves | <br>Additional Member. Additional Member. Additional Member, and Proxy for the General Secretary of The Theosophical Society in England.  |

Miss Joan S. Morris was present as Minutes Secretary by invitation.

1. Item No. 6 on Agenda Re: Rule 35(b) considered in previous meeting, vide 6 ante,

MINUTES 129

Miss Helen Zahara placed before the Council the following draft for Rule 35(b), which was approved for circulation and voting:

"Upon the application of seven or more chartered Lodges (Branches) in areas which are territorially adjacent and in which there are not sufficient Lodges for each national group to form a National Society, the President shall have authority at his discretion to issue (and to cancel) a Charter constituting such Lodges into a Section. The Charter shall confer the same powers as one issued to a National Society. In all respects the rules applying to National Societies shall apply to any group of Lodges (Branches) holding a Charter under this Rule."

The present Rules 35(b) and 35(c) to become 35(c) and 35(d) respectively.

#### 2. The Treasurer's Report for 1962-63:

The Treasurer's Report, together with the Auditor's comments and recommendations, which had been circulated, were considered. The following suggestions and comments were made:

- (a) Efforts should be made to reduce losses in the Bhojanasala, Leadbeater Chambers, and Laundry.
- (b) Expenses under the heading "Miscellaneous" should be split up under different heads where the amounts are large.
- (c) It was noted with some concern that the deficit was mounting every year. The working of the various departments should be examined and measures taken to reduce expenses. It was pointed out that a large proportion of the deficit was due to heavy expenses in carrying out extensive repairs, renewal and maintenance of old buildings. Part of the work is now done by employing outside contractors.
- (d) The interest from the Adyar Library Building Fund is not to be used for current expenses but added to the capital. An adjustment for the past year is to be made.
- (e) The casuarina scheme in the Garden Department was discussed and it was stated that the policy being followed is to allow the trees to grow to maturity.
- (f) It was reported that an isolated piece of land near Elliot's Beach (2.1 acres) was compulsorily acquired by the Government and the sale proceeds have been credited to the General Fund. It was also reported that the Government have notified their intention to acquire a strip of land for widening the public road between Besant and Damodar Gardens.
- (g) Regarding the Resolution approved last year to dispose of the rice fields in Damodar Gardens, the President stated that this question is under active consideration. It was generally agreed that in view of the growth of the Madras City and the possible levy of urban land tax, the steps being taken to sell the land should be pursued.

- (h) It was noted that steps were being taken to reduce the amounts owing by sundry debtors.
- (i) It was stated that the land purchased in 1962 was that occupied by Olcott School, and it was purchased by a gift made to the Society for the purpose.

After further discussion the Treasurer's Report was adopted, with a vote of thanks to the Hon. Treasurer, Mr. S. Somasundaram, and the Assistant Treasurer, Miss Annie Tjioe Siang Nio.

# 3. The Budget for 1963-64:

The budget was considered and concern was expressed at the large amount proposed for repairs and renewals and the increased deficit. It was stated that every effort would be made to keep these as low as possible, despite increasing costs. After further discussion the budget was adopted.

# 4. Appointment of Auditors for 1963-64:

It was decided to appoint Messrs. Naganathan and Co., Chartered Accountants, Mylapore, Madras, as Auditors for 1963-64.

It was also decided that Messrs. Dandekar and Co., the outgoing Auditors, be thanked for their services to the Society.

# 5. Appointment of the Executive Committee for 1964:

The following were appointed as Members of the Executive Committee by the President. This appointment was approved:

| President                | Ex-Officio              |
|--------------------------|-------------------------|
| Vice-President           | ,,                      |
| Recording Secretary      | **                      |
| Treasurer                | ,,                      |
| Srimati Rukmini Devi     | Member, General Council |
| Mrs. Radha Burnier       | Member, General Council |
| Mr. S. G. Venkataramanan |                         |
| Mrs. Norma Y. Sastry     |                         |
| Mr. K. N. Ramanathan     |                         |
| Mr. G. S. Linton         |                         |
|                          |                         |

# 6. Any other Business:

# (1) Theosophical Publishing House, Adyar.

The Treasurer placed before the meeting a memorandum on the subject of the ownership and management of the Theosophical Publishing House at Adyar, the substance of which was as follows:

"In 1905 Col. H. S. Olcott transferred his ownership of the magazine *The Theosophist* and his business of publisher to The Theosophical Society with the

THE T.S. HEADQUARTERS, ADYAR, BUDGET FOR 1963-64

| EXPENSE                                 | Budget<br>for   | Actuals         | Budget          |                                 | D                         |                            | D 1                       |
|---|-----------------|-----------------|-----------------|---------------------------------|---------------------------|----------------------------|---------------------------|
|   | 1962-'63        | for<br>1962-'63 | for             | INCOME                          | Budget<br>for<br>1962-'63 | Actuals<br>for<br>1962-'63 | Budget<br>for<br>1963-'64 |
|   | Rs.             | Rs.             | Rs.             |                                 | Rs.                       | Rs.                        | Rs.                       |
| Establishment—Salaries and Wages        | 42,000          | 44,029          | 50,000          | Rent                            | 55,000                    | 58,362                     | 56,000                    |
| Repairs and Renewals                    | 70,000          | 69,894          |                 | Fees and Dues                   | 28,000                    | 17,593                     | 28,000                    |
| Light and Water                         | 7,500           | 8,612           | 8,500           |                                 | 1,000                     | 3,048                      | 1,000                     |
| Miscellaneous Postages, Telegrams and   | 12,000          | 15,874          | 14,000          | Interest (Gross) Administration | 1,15,000                  | 1,00,326                   | 1,00,000                  |
| Telephone                               | 3,000           | 2,494           | 2,500           | Charges                         | 8,130                     | 8,130                      | 4,000                     |
| Printing and Stationery                 | 6,000           | 6,765           | 6,700           | G IIB                           |                           |                            |                           |
| Publications to General Secretaries     | 700             | 701             | 700             | Special Departments:            |                           |                            |                           |
| Secretaries                             | 16,000          | 16,411          | 16,500          | Bhojanasala ,                   | 14,100                    | 15,482                     | 16,000                    |
| Convention                              | 4,500           | 1,418           | 2,000           | Engineering                     | 4 60 000                  | 1.05.767                   | 1,10,500                  |
| Museum and Archives                     | 3,500           | 3,932           | 4,000           | Department Garden Department    | 1,62,800 66,500           | 1,05,767 63,569            | 57,000                    |
| Interest on Funds and Accounts          | 11,000          | 9,840           | 11,000          | Laundry                         | 7,000                     | 6,166                      | 6,000                     |
| Retirement Allowance and                | 11,000          | ,,,,,,          |                 | Leadbeater Chambers             | 22,800                    | 21,036                     | 21,000                    |
| Gratuities                              |                 | 8,800           | 8,000           | Sanitary Department             | 1,200<br>1,70,900         | 1,410<br>1,79,334          | 1,200<br>1,61,000         |
| Contributions:                          |                 |                 |                 | Vasanta Press                   | 1,70,900                  | 1,77,554                   | -,,                       |
| contributions.                          |                 |                 |                 | Donations                       |                           | 24,225                     | 1 20 200                  |
| To Adyar Library                        | 5,000           | 5,000           | 5,000           | Deficit                         | 69,260                    | 89,130                     | 1,29,300                  |
| " President's Travelling Fund           | 6,600           | 6,600           | 6,600           |                                 |                           |                            |                           |
| " School of the Wisdom.                 | 3,000           | 3,000           | 3,000           |                                 |                           |                            |                           |
| Special Departments:                    |                 |                 |                 |                                 |                           |                            |                           |
|   | 4= 000          |                 | 20,000          |                                 |                           |                            |                           |
| Bhojanasala<br>Dispensary               | 17,200<br>7,500 | 23,766<br>7,884 | 20,000<br>8,000 |                                 |                           |                            |                           |
| Engineering Department                  | 1,70,700        | 1,24,569        |                 |                                 |                           |                            |                           |
| Garden Department                       | 72,690          | 64,411          | 61,000          |                                 |                           |                            |                           |
| Laundry                                 | 9,600           | 9,774           | 9,000<br>22,000 |                                 |                           |                            |                           |
| Leadbeater Chambers Sanitary Department | 24,800<br>5,500 | 24,473<br>4,930 |                 |                                 |                           |                            |                           |
| Vasanta Press                           | 1,70,900        |                 |                 |                                 |                           |                            |                           |
| Watch and Ward                          | 23,000          | 21,889          | 22,500          |                                 |                           |                            |                           |
| Commemorative Stamp Function            |                 | 329             |                 |                                 |                           |                            |                           |
| Depreciation                            | 29,000          | 28,760          | 29,000          |                                 |                           |                            |                           |
|   |                 |                 |                 |                                 |                           |                            |                           |
| Capital Expenditure:                    |                 |                 |                 |                                 |                           |                            |                           |
| Vasanta Press 28,000                    |                 |                 |                 |                                 |                           |                            |                           |
| Engineering 28,000                      |                 |                 |                 |                                 |                           |                            |                           |
| Department 10,000                       |                 |                 |                 |                                 |                           |                            |                           |
| Rs. 38,000                              |                 |                 |                 |                                 |                           |                            | . ,                       |
|   |                 |                 |                 |                                 |                           |                            |                           |
|   | 7.01.600        | ( 02 570        | 6.01.000        |                                 | 7.21.600                  | 602.570                    | 601.000                   |
|   | 7,21,690        | 0,93,378        | 6,91,000        |                                 | 7,21,690                  | 6,93,578                   | 6,91,000                  |

ADYAR

14th December 1963

For The Theosophical Society,
S. SOMASUNDARAM,
Hony. Treasurer

# SUMMARY OF STATISTICS, 1963

| National Sections (Active)   | 39                     | No.                            | o, of No. of                 |
|------------------------------|------------------------|--------------------------------|------------------------------|
| Presidential Agencies (Activ |                        | Loc                            | dges Members                 |
| Federations formed under     |                        | 29. Argentina                  | 45 837                       |
| 35 (b)                       | 3                      | 30. Chile                      | 9 150 (1956)                 |
| Total Lodges                 | 1,250                  | 31. Brazil                     | 28 939                       |
| Total Membership:            | 1,400                  | 32. Bulgaria                   |                              |
| 1962                         | 33,058                 | 33. Iceland                    | 15 581                       |
| 1963                         | 30,973                 | 34. Spain                      |                              |
| 1700                         | 50,315                 | 35. Portugal                   | 15 214                       |
| Decrease                     | 2,085                  | 36. Wales                      | 6 105                        |
| Decrease                     | 2,085                  | 37. Poland                     | - 105                        |
|                              | Control pulses are not | 38. Uruguay                    | 8 133                        |
|                              |                        | 39. Puerto Rico                | 7 98                         |
| No. of                       | No. of                 | 40. Rumania                    | 7 70                         |
| Lodges                       | Members                | 44 37 1 1                      |                              |
| 1. United States of          |                        | 41. Yugoslavia                 | 7 67                         |
| America 140                  | 4,053                  | 12 6                           | 10 245                       |
| 2. England 100               | 2,580                  | 43. Greece 44. Central America |                              |
| 3. India 384                 | 7,456                  |                                | 9 183 (1962)                 |
| 4. Australia 17              | 1,102                  | 45. Paraguay                   |                              |
| 5. Sweden 12                 | 377                    | 46. Peru (Lodges at-           | 6 126 (1060)                 |
| 6. New Zealand 18            | 921                    | tached to Adyar)               | 6 136 (1960)                 |
| 7. The Netherlands 35        | 1,296                  | 47. The Philippines            | 20 290                       |
| 8. France 30                 | 1,011                  | 48. Colombia                   | 13 177                       |
| 9. Italy 26                  | 582                    | 49. East Africa                | 20 613                       |
| 10. Germany 18               | 435                    | 50. Pakistan*                  | 6 277                        |
| 11. Cuba 23                  | 476                    | 51. Malaya & Singapore         | , ,                          |
| 12. Hungary —                |                        | 52. Northern Ireland†          | 3 53                         |
| 13. Finland 23               | 388                    | 53. Israel*                    | 5 103                        |
| 14. Russia —                 | peantill               | 54. Japan                      |                              |
| 15. Czechoslovakia —         | _                      | 55. Viet-Nam                   |                              |
| 16. Southern Africa 13       | 481                    | 56. Venezuela                  | 7 177                        |
| 17. Scotland 8               | 147                    | 57. West Africa†               | 7 339                        |
| 18. Switzerland 10           | 203                    | 58. Canadian Federation        |                              |
| 10 D.1.1 0                   | 251                    | 59. Fellows-at-large           | - 38                         |
| 20 Indonesia * *             | 231                    | 60. Lodges and Membe           |                              |
|                              | 61                     | attached to Adyar              |                              |
|                              |                        | Bolivia                        | 2 29 (1960)                  |
| 22. Austria 10               | 257                    | Hong Kong                      | 1 16                         |
| 23. Norway 7                 | 134                    | Others                         | 14 257                       |
| 24. Egypt (Lodges            | 72 (10(0)              | ,,                             | 3 282                        |
| only) 2                      | 73 (1960)              | -                              | Mariana Announcement (Marian |
| 25. Denmark 12               | 255 (1962)             | Total 1,                       | 250 30,973                   |
| 26. Ireland 4                | 52                     |                                | named transferred            |
| 27. Mexico 34                | 769                    |                                | JAL B. DORAB,                |
| 28. Canada 13                | 307                    |                                | ding Secretary.              |
| # Descidential Assess        |                        |                                |                              |

<sup>\*</sup> Presidential Agency.

<sup>†</sup> Federation.

<sup>\*\*</sup> The Indonesia Section consisting of 33 Lodges and 1,675 members (1962) has been prohibited by order of the President of the indonesian Republic in May 1963.



T 060 GRTS 1963 1221A

